दिल्ली बैंक नराकास की छमाही पत्रिका

बैंक भारती

अंक 30, जुलाई–दिसंबर, 2023

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

: संयोजक :

पंजाब नैशनल बैंक ...भरोसे का प्रतीक!

punjab national bank ...the name you can BANK upon!

पुणे में आयोजित तृतीय अखिल भारतीय हिन्दी दिवस एवं राजभाषा सम्मेलन में पंजाब नैशनल बैंक को वर्ष 2022–23 हेतु प्रदत्त प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार माननीय उप सभापति, राज्यसभा, श्री हरिवंश नारायण सिंह, एम.एस.एम.ई केन्द्रीय राज्यमंत्री, श्री भानु प्रताप सिंह वर्मा तथा केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री, श्री अजय मिश्रा से ग्रहण करते हुए श्री अतुल कुमार गोयल, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी।

बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा आयोजित वरिष्ठ कार्यपालकों के लिए राजभाषा सम्मेलन में बैंक की अक्षय्यम् पत्रिका का विमोचन करते हुए श्री राकेश शर्मा, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, मुख्य अतिथि, सुश्री अंशुली आर्या, माननीय सचिव, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, श्री संजय सिंह, प्रमुख राजभाषा एवं अन्य वरिष्ठ कार्यपालक।

दिल्ली बैंक नराकास

बैंक भारती

छमाही पत्रिका

वर्ष : 26 | अंक : 30 | जुलाई–दिसम्बर, 2023

संरक्षक

समीर बाजपेयी
अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नराकास
एवं मुख्य महाप्रबंधक, दिल्ली अंचल, पंजाब नैशनल बैंक

सम्पादक

मनीषा शर्मा
सदस्य सचिव, दिल्ली बैंक नराकास
एवं सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), पंजाब नैशनल बैंक

सम्पादकीय समिति

बलदेव कुमार मल्होत्रा
मुख्य प्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक

राजीव शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक

परामर्शदात्री समिति

रंजन कुमार बरून	उप महाप्रबंधक	राष्ट्रीय आवास बैंक
कुमार परिमलेंदु सिन्हा	उप महाप्रबंधक	भारतीय रिज़र्व बैंक
सीमा कुमारी दुबे	प्रबंधक	केनरा बैंक
विकास कुमार साव	प्रबंधक	राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक
डॉ. गौतम कुमार मीणा	उप प्रबंधक	दि ओरिएंटल इन्श्योरेंस लि., क्षे.का.–II

आवरण पृष्ठ के बारे में...

जी–20 का आयोजन स्थल: देश का सबसे बड़ा कन्वेंशन सेंटर, भारत मंडपम, प्रगति मैदान तथा विश्व की सबसे ऊंची नटराज प्रतिमा।

अनुक्रमणिका

माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह का संदेश ...	2
अध्यक्ष की कलम से ...	4
सम्पादकीय ...	5
तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन पुणे	6
वित्तीय साक्षरता–शुरुआत घर से	8
मेरी मां मेरी मातृभाषा	9
योग साधना/कठिन हो सकती है परंतु यह असंभव नहीं है	10
यात्रा वृतांत– याद रहेगा पर्थ शहर	13
विमोचन/हिंदी पखवाड़ा/ग्राहक बैठक	14
पंजाब नैशनल बैंक : हिंदी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन	15
केनरा बैंक : हिन्दी दिवस समारोह	16
बैंकिंग में नैतिकता का महत्व	17
सुपुत्र	19
बीज प्रेम का/जीवन : एक रण	20
पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिमी दिल्ली का राजभाषाई निरीक्षण/ राजभाषा सम्मेलन : बैंक ऑफ बड़ौदा	21
ऑनलाइन पढ़ाई : फायदे और नुकसान	22
हिन्दी माह	23
दिल्ली बैंक नराकास की 58वीं बैठक	24
"5 ट्रिलियन इकॉनमी में बैंकों की भूमिका"	27
दिल्ली बैंक नराकास द्वारा कार्यशाला का आयोजन	29
नारी/रोशनी की भोर	30
संस्मरण	31
नई सोच– नई शुरूआत	32
पिंक सिटी की सैर	33
हिन्दी	37
प्रदूषण	38
हमारे गर्व एवं स्वाभिमान की भाषा हिंदी	40
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक/यूनियन बैंक ऑफ इंडिया	41
हिन्दी दिवस/कंठस्थ 2.0 कार्यशाला/सरल सी मैं, रहस्य हूँ	42
जिंदगी– द लाइफ	43
राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता एवं अन्य आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम	44
दिल्ली बैंक नराकास के तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम	45

–: सम्पर्क सूत्र :–

बैंक भारती, दिल्ली बैंक नराकास सचिवालय, पंजाब नैशनल बैंक, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग प्लाट नं–4, प्रथम तल, द्वारका सेक्टर–10, नई दिल्ली–110075
ई–मेल : delhibanknarakas@pnb.co.in ♦ **दूरभाष** : 28044450, 28044491

पत्रिका को डाउनलोड करने के लिए कृपया आवरण पृष्ठ पर दिए क्युआर कोड को स्कैन करें।

मुद्रक :– **डॉल्फिन प्रिंटो–ग्राफिक्स**, 1ई/18,
चौथी मंजिल, झंडेवालान, दिल्ली–110055
ई–मेल: dolphinprinto2011@gmail.com

पत्रिका में व्यक्त विचारों से 'समिति' का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

अध्यक्ष की कलम से ...

प्रिय साथियो,

बैंक भारती के नवीन अंक के साथ आप सभी से एक बार पुनः संवाद स्थापित करना अत्यंत सुखद और प्रसन्नतादायक है।

गत 14–15 सितम्बर, 2023 को पुणे में आयोजित ''हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन'' कई मामलों में ऐतिहासिक था। छत्रपति शिवाजी महाराज की जन्मस्थली और उनकी प्रशासनिक राजधानी पुणे को महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी के तौर पर भी जाना जाता है। इस शहर में अनेकों प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान होने के कारण इसे 'पूरब का ऑक्सफोर्ड' भी कहा जाता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक आंदोलनों में भी चापेकर बंधुओं, ज्योतिबा फुले, वीर सावरकर, गोपाल कृष्ण गोखले जैसे पुणे के अनेकों वीरों ने अतुलनीय योगदान दिया है। भारतीय संस्कृति की ध्वज वाहक हिंदी के पर्व को मनाने के लिए पुणे निश्चित ही एक उपयुक्त स्थल है।

ऐतिहासिक स्थल, पुणे में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन ने अपनी नूतनता से इतिहास के पन्नों में अपना स्थान अर्जित किया है। सम्मेलन के दूसरे दिन नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की उपयोगिताओं और योगदान पर आधारित विशेष सत्र निश्चित रूप से एतिहासिक और नूतन प्रयास रहा। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और उत्थान में नराकासों की भूमिका महती है। एक नगर में स्थित केंद्र सरकार के सभी कार्यालय, उपक्रम, बैंक, बीमा कम्पनियां तथा वित्तीय संस्थान सभी मिलकर एक टीम के रूप में राजभाषा संबंधी कार्यान्वयन और क्रियाकलापों में योगदान देते हैं तो परिणाम सदैव प्रगतिवादी होते हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के मार्गदर्शन में देशभर में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

मेरा मानना है कि भाषा और संस्कार हमारे व्यक्तित्व का आईना होते हैं। जब हम अवचेतन में होते हैं तभी ये दोनों चीजे उभर कर आ जाती हैं। हिन्दी भाषा का प्रचार करना राष्ट्रीयता का प्रतीक है। दिल्ली बैंक नराकास ने सभी सदस्यों के सक्रिय योगदान से राजभाषा के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किए हैं। राजभाषा के प्रति आपका सम्मान और समपर्ण, बैठकों में कार्यालयों प्रमुखों की सक्रिय सहभागिता, छमाही रिपोर्टों का निर्धारित अवधि में प्रेषण और वर्ष भर नराकास के तत्वावधान में प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन करना आदि, आप सबका यही योगदान हमारी नराकास को देश की नराकासों की अग्रणी पंक्ति में सम्मिलित करता है।

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि गत वर्ष हमारी नराकास में सम्मलित हुई बीमा कम्पनियां भी इसी परिपाटी के साथ कदम ताल कर रही हैं और हमारी नराकास की प्रत्येक गतिविधि में बढ़चढ़ कर भाग ले रही हैं। हम सभी को मिलकर इस परिपाटी को और मजबूती से आगे बढ़ाना है और अपनी विशिष्ट पहचान को अखिल भारतीय मंच पर बनाए रखना है।

मुझे विश्वास है कि आप सभी के सहयोग और योगदान से हमारी नराकास श्रेष्ठता के नए सोपान तय करती रहेगी और अपने अग्रणी स्वरूप को बनाए रखेगी।

आप सबको और आपके परिवारजनों को नूतन वर्ष की अग्रिम शुभकामनाओं सहित!

आपका

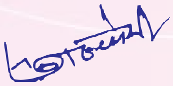

(समीर बाजपेयी)
अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नराकास
एवं
मुख्य महाप्रबंधक
पंजाब नैशनल बैंक
दिल्ली अंचल

सम्पादकीय ...

प्रिय साथियों,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दिल्ली (बैंक) की छमाही पत्रिका ''बैंक भारती'' के इस नवीन अंक को आप सभी से साझा करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। सदस्य कार्यालयों की राजभाषा गतिविधियों और रचनात्मकता को समेटे हुए यह अंक आप सब के लिए रुचिकर और ज्ञानवर्धक होगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

हमारा देश उत्सवों का देश है। समूचे भारत में हम विभिन्न प्रकार के उत्सव बड़े जोश और उमंग से मानते हैं। यह छमाही हम सब के लिए जश्नों से परिपूर्ण रही, जिससे न केवल हमारे लिए उत्सव मनाने के क्षण आए अपितु विश्व पटल पर भी भारत को सम्मान मिला। भारतीय वैज्ञानिकों ने चन्द्रमा के दक्षिणी छोर पर चंद्रयान की सफल लैंडिंग करवाकर एक नया इतिहास रचा और समूचे विश्व के खगोल वैज्ञानिकों को भारतीय वैज्ञानिकों की प्रतिभा का लोहा मनवाया। चंद्रयान की सफलता के जश्न के साथ भारतवंशियों ने देश की स्वतंत्रता के 76वें वर्ष को बड़े गर्व के साथ मनाया। इसके साथ ही, भारत की अध्यक्षता में हिंदी जी–20 सम्मेलन का भव्य आयोजन ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना के साथ अत्यंत सफलतापूर्वक दिल्ली में सम्पन्न हुआ जिसने देश की साख में चार चाँद लगा दिए।

आज विश्व पटल पर भारत एक सशक्त राष्ट्र बन कर उभर रहा है, तो हम सभी का यह नैतिक दायित्व बनता है कि हम अपनी भाषा को भी वैश्विक भाषा बनाने की ओर अग्रसर हों। इसके लिए आवश्यक है कि हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए हम मिलकर प्रयास करें। हिंदी ने भारतीय भाषाओं की शब्दावलियों की माला से समस्त राष्ट्र को एक सूत्र में बांध रखा है। हमें अब इससे एक कदम आगे बढ़ाते हुए अपने सार्वजनिक, दैनिक और कार्यालयीन कार्यों में भाषाई आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना है। यदि अनुवाद की बजाए हम मूल कार्य हिंदी में करेंगे तो हमारे प्रयासों को पंख लग जायेगें।

सितम्बर माह में गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा ''हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन'' का आयोजन पुणे में भव्यता से किया। इस सम्मेलन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की भूमिका एवं महत्व पर आयोजित विशेष सत्र में राजभाषा कार्यान्वयन में नराकासों के योगदान पर सार्थक चर्चा की गई। दिल्ली बैंक नराकास देश की प्रतिष्ठित नराकासों में से है, जो 28 सितम्बर, 1994 को अपनी स्थापना से ही राजभाषा कार्यान्वयन का दायित्व बखूबी निभा रही है। देश की राजधानी दिल्ली के सभी प्रमुख वित्तीय संस्थानों और बीमा कंपनियों के महत्वपूर्ण सदस्य कार्यालयों से सुसज्जित यह नराकास वर्ष भर सक्रियता से कार्यरत रहती है।

हम अपनी छमाही बैठकों में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में आ रही कठिनाइयों पर चर्चा करने के साथ ही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों की जानकारी का आदान–प्रदान कर अपनी–अपनी उपलब्धि स्तर में सुधार लाते हैं तथा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयास करते हैं।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के कुशल मार्गदर्शन में सभी सदस्य नियमित रूप से प्रतियोगिताओं, संगोष्ठियों, सेमिनारों का आयोजन करते हैं, जिसकी झलक इस पत्रिका में दी गई है। नराकास द्वारा चलाई जा रही विभिन्न शील्ड प्रतियोगिताओं व बड़ी संख्या में आयोजित अंतर बैंक प्रतियोगिताओं के परिणामों की जानकारी भी इसमें दी गई है।

दिल्ली बैंक नराकास के स्तर पर आयोजित विभिन्न शील्ड प्रतियोगिताओं व अन्य अंतर बैंक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई देते हुए मैं अपेक्षा करती हूँ कि वे अपने हिंदी ज्ञान और हिंदी प्रेम को अपने दैनिक कामकाज में भी उतारेगें और अपने अन्य साथियों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे।

आपको और आपके परिवार को नववर्ष की शुभकामनाओं सहित!

(मनीषा शर्मा)
सदस्य सचिव, दिल्ली बैंक नराकास एवं
सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा

तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन–पुणे

सम्मेलन का उद्घाटन सत्र:

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 14 एवं 15 सितंबर 2023 को पुणे (महाराष्ट्र) में ''हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन'' का आयोजन माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा, श्री हरिवंश नारायण सिंह, उप सभापति, राज्य सभा, केरल के माननीय राज्यपाल, श्री आरिफ मोहम्मद खान, श्रीमती भारती प्रवीण पवार, केन्द्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री, श्री भानुप्रताप वर्मा, केंद्रीय एमएसएमई राज्य मंत्री, श्री भृतहरि महताब, उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति की गरिमामय उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर सांसदगण तथा गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से सचिव राजभाषा, सुश्री अंशुली आर्या, संयुक्त सचिव, मीनाक्षी जौली एवं हिंदी के विद्वान उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत में माननीय केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह जी ने वर्चुअल माध्यम से हिंदी दिवस के अवसर पर अपने संदेश द्वारा वहां उपस्थित सभी हिंदी प्रेमियों को शुभकामनाएं दीं और सभी से अपने–अपने स्तर पर हिंदी के प्रचार–प्रसार करने के लिए आह्वान किया।

हिंदी दिवस के अवसर पर वर्चुअल माध्यम से संबोधित करते हुए माननीय केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह।

लोकार्पण:

हिंदी दिवस के अवसर पर स्मृति आधारित अनुवाद टूल के उन्नत संस्करण 'कंठस्थ 2.0' तथा ई–ऑफिस इन्टीग्रेशन और हिंदी बृहत् शब्दकोश "हिंदी शब्द सिंधु (संस्करण–2) का लोकार्पण करते हुए केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा।

इस अवसर पर माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा ने अनुवाद कार्य को सरल बनाने हेतु स्मृति आधारित अनुवाद टूल के उन्नत संस्करण कंठस्थ 2.0 तथा ई–ऑफिस इन्टीग्रेशन और हिंदी बृहत् शब्दकोश ''हिंदी शब्द सिंधु (संस्करण–2) का लोकार्पण किया।

पीएनबी को राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार :–

पंजाब नैशनल बैंक को इस सम्मेलन में दो–दो राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुए वर्ष 2022–23 हेतु 800 से अधिक स्टाफ कार्यालयों की श्रेणी में क्षेत्र 'क' में राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार तथा गृह पत्रिका 'पीएनबी प्रतिभा' हेतु द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। बैंक की ओर से यह पुरस्कार बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल ने ग्रहण किये। इसके अलावा राजभाषा सम्मेलन में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए पीएनबी को विशेष पुरस्कार से सम्मानित

किया गया। यह पुरस्कार राजभाषा विभाग की विभागीय प्रमुख श्रीमती मनीषा शर्मा ने ग्रहण किया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा केंद्र सरकार तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों हेतु आयोजित कंठस्थ प्रतियोगिता के अंतर्गत पीएनबी को जांचकर्ता के श्रेणी में द्वितीय तथा अनुवादक श्रेणी में प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। जिसे क्रमशः श्री कमलेश मिश्रा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) तथा श्री स्वस्ति नाथ झा, राजभाषा अधिकारी ने ग्रहण किया। कुल मिलाकर पीएनबी को विभिन्न श्रेणियों में वर्ष 2022–23 हेतु पांच पुरस्कार प्राप्त हुए।

पीएनबी बैंक को प्रदत्त विशेष पुरस्कार माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा से ग्रहण करते हुए विभागीय, प्रमुख, श्रीमती मनीषा शर्मा। दृष्टव्य हैं सचिव राजभाषा, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, सुश्री अंशुली आर्या तथा संयुक्त सचिव, श्रीमती मीनाक्षी जौली।

पीएनबी ने किया 'पथप्रदर्शक' पुस्तिका का परिचालनः—

माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा को प्रदर्शनी के दौरान राजभाषा पथ प्रदर्शक दिखाते हुए राजभाषा विभाग की प्रमुख, श्रीमती मनीषा शर्मा।

पंजाब नैशनल बैंक द्वारा नवोन्मेषी कार्यों के तहत राजभाषा नीति–नियमों तथा राजभाषा संबंधी महत्वपूर्ण प्रावधानों के सार के रूप में 'राजभाषा पथ–प्रदर्शक' पुस्तिका का प्रकाशन किया है। जिसे इस समारोह में सहभागिता करने वाले सभी प्रतिभागियों में वितरित किया गया।

पीएनबी द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी का आयोजनः

पंजाब नैशनल बैंक ने इस दो दिवसीय समारोह में एक राजभाषा प्रदर्शनी भी लगाई जिसका उद्घाटन एमडी एवं सीईओ, श्री अतुल कुमार गोयल द्वारा किया गया। प्रदर्शनी में पीएनबी द्वारा लगाये गए स्टाल को केरल के राज्यपाल, श्री आरिफ मोहम्मद खान, माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा, श्री हरिवंश नारायण सिंह, उप सभापति, राज्य सभा, सचिव राजभाषा, सुश्री अंशुली आर्या, संयुक्त सचिव, मीनाक्षी जौली तथा अन्य प्रतिभागियों द्वारा खूब सराहना की गई। इस अवसर पर दिल्ली बैंक के नराकास के अध्यक्ष श्री समीर बाजपेयी, महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री देवार्चन साहू, अंचल प्रबंधक, मुंबई, श्री बी.पी. महापात्र तथा विभिन्न संस्थानों के उच्चाधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी इसमें शामिल हुए।

पीएनबी द्वारा लगाई गई राजभाषा प्रदर्शनी स्टाल का उद्घाटन करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल। दृष्टव्य हैं अंचल प्रबंधक, श्री बी.पी. महापात्र, महाप्रबंधक, श्री देवार्चन साहू एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

पीएनबी द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी स्टाल में पधारे केरल के राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद, सचिव राजभाषा, गृह मंत्रालय, सुश्री अंशुली आर्या, अध्यक्ष दिल्ली बैंक नराकास एवं मुख्य महाप्रबंधक, श्री समीर बाजपेयी, अंचल प्रबंधक, लुधियाना, श्री पुष्कर कुमार तराई तथा विभागीय प्रमुख, राजभाषा, श्रीमती मनीषा शर्मा।

वित्तीय साक्षरता–शुरुआत घर से

सोमा दास
सहायक प्रबन्धक
भारतीय रिज़र्व बैंक,
नई दिल्ली

एक समय था जब घरवाले या घर पर आए मेहमान जाते वक्त 25/50 पैसे या एक रुपए का सिक्का देते थे तो वह सिक्का तुरंत एक आकर्षक सी गुल्लक, जिसे हम Piggy Bank कहते थे, में चला जाता था। उस गुल्लक में सिक्कों की खनक को सुनने का एक अलग ही मज़ा था। मिट्टी के गुल्लक की रक्षा अलग से करनी होती थी क्योंकि जब भाई/बहन में झगड़ा होता था तो उस झगड़े का बदला गुल्लक को तोड़कर निकाला जाता था। रक्षाबंधन हो या अन्य कोई त्यौहार, बस एक यही आशा होती थी कि कोई सिक्के दे और उस गुल्लक को भर दिया जाए। यहां तक कि उपहार देने के लिफ़ाफ़े के ऊपर जो एक रुपए का सिक्का चिपका होता था उसे निकालकर गुल्लक में भरने की उत्सुकता लिफ़ाफ़े के भीतर रखे बड़े नोट से अधिक होती थी। अल्हड़ दिमाग यह सोचता था कि बड़े होकर इन्हीं पैसों से दुनिया की सारी चीज़ें खरीदी जाएंगी। उस समय यह नहीं पता था कि 'मुद्रास्फीति' नाम की भी कोई बला होती है।

क्या कभी हमने सोचा है कि गुल्लक में पैसों को रखना या यूं कहें कि पैसों को बचाना ही कहीं न कहीं वित्तीय साक्षरता की नींव थी। आज के युग में माँ–बाप अपने बच्चों को खुशहाल जीवन देने के उद्देश्य से सुबह सात बजे घर से निकल जाते हैं और देरी से लौटते हैं। बच्चों को भी यह भली–भांति मालूम है कि उनकी एक मांग पर माँ–बाप उनके लिए कीमती चीज़ खरीदने में ज़र्रा मात्र भी नहीं सोचेंगे। बच्चों के जन्मदिन की पार्टी में जन्मदिन को खुशी–खुशी परिवार के साथ मनाने से महत्वपूर्ण यह हो गया है कि पड़ोसी के बच्चे के जन्मदिन पर कौन सी थीम पर पार्टी रखी गई थी। अगर किसी ने कोकोमेलन थीम पर पार्टी रखी थी जिस पर 20 हज़ार का खर्च किया गया था तो यह प्रतिस्पर्धा हो जाती है कि हमारे बच्चे की पार्टी पर 30 हज़ार का खर्च हो और थीम एकदम नया हो, जिसे हम सोशल मीडिया की भाषा में ट्रेंडिंग कहते हैं। पार्टी ख़त्म होने के बाद उस थीम को हैशटैग कर फ़ोटोज़ को सोशल मीडिया पर अपलोड करने की जल्दबाज़ी होती है। इन सब के बीच बच्चों की खुशी महज़ दिखावे में सिमट गई है। इससे बच्चों के भीतर यह भाव आ जाता है कि उनकी एक मांग पर उनकी सारी इच्छाएँ झट से पूरी हो जाएंगी। वित्तीय साक्षरता, बचत, अपने पैसों का सही ढंग से इस्तेमाल, ये सब शब्द उनके शब्दकोश में हैं ही नहीं। जब इसी परिवेश में बच्चे बड़े हो रहे हैं तो उन्हें यह समझ नहीं आता कि अपने पैसों को कैसे और कहां खर्च करें, कैसे बचत करें, कहां निवेश करें।

वित्तीय साक्षरता केवल एक बैंकिंग शब्दावली नहीं है। इसका क्षितिज बहुत व्यापक है। इसकी शुरुआत घर से और बचपन से होती है। यह बहुत आवश्यक है कि हम अपने बच्चों को शुरुआती दिनों में ही तीन शब्दों से अवगत कराएंः– बचत, निवेश और दान। प्रथम दो शब्द जहां बच्चे के आर्थिक समझ के विकास के लिए आवश्यक हैं, वहीं अंतिम शब्द बच्चे के भावनात्मक विकास के लिए। यदि उक्त तीन शब्दों के सही मायने हम अपने बच्चे को समझायेंगे तो हम वास्तव में उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाने तथा उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होंगे। टी.टी.मंगर की निम्नलिखित पंक्तियाँ अत्यंत उपयुक्त हैं– The habit of saving is itself an education, it fosters every virtue, teaches self-denial, cultivates the sense of order, trains to forethought, and so broadens the mind-

वर्तमान परिदृश्य में, नीति निर्माताओं (आरबीआई और भारत सरकार दोनों) ने कम उम्र में वित्तीय शिक्षा के महत्व को पहचाना और 'युवाओं को युवावस्था में जागरूक करने' की रणनीति की परिकल्पना की। इसके अलावा, आरबीआई ने वित्तीय शिक्षा के क्षेत्र में आम जनता के लिए कई पहल किए हैं जिसमें विशेष रूप से बच्चों पर काफी ध्यान दिया गया है। ऐसी ही एक पहल है 'आरबीआई कहता है', जिसका उद्देश्य विभिन्न वित्तीय पहलुओं जैसे आधारभूत बचत बैंक जमा खाते, धोखाधड़ी वाले लेनदेन में नुकसान को सीमित करना, सुरक्षित डिजिटल बैंकिंग प्रथाएं, वरिष्ठ नागरिकों के लिए बैंकिंग सुविधाएं, एकीकृत लोकपाल योजना और साइबर सुरक्षा, आदि के बारे में लोगों के बीच सार्वजनिक जागरूकता को बढ़ाना है। आरबीआई ने कई अन्य सर्जनात्मक तरीकों से भी वित्तीय शिक्षा की दिशा में अपने प्रयास को आगे जारी रखा है, जैसे चित्रात्मक कॉमिक्स, पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता, सूचनापरक फिल्में आदि। शिक्षक हमारी शिक्षा प्रणाली की रीढ़ हैं और वे सीधे बच्चों के साथ संपर्क में रहते हैं, जो हमारे राष्ट्र के भविष्य हैं। कुछ राज्यों ने अपने स्कूली पाठ्यक्रम में वित्तीय शिक्षा को लागू किया है। इस बात की अहमियत को समझते हुए रिज़र्व बैंक ने राज्य सरकार और जिला अधिकारियों के समन्वय से विशेषकर सरकारी स्कूलों के स्कूल शिक्षकों (कक्षा VI से X तक) के लिए ट्रेन–द–ट्रेनर्स कार्यक्रम भी शुरू किया है।

पूरे भारत में वित्तीय शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक बहुपक्षीय दृष्टिकोण को अपनाते हुए वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफएसडीसी), वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में चार वित्तीय क्षेत्र के विनियामक, अर्थात् आरबीआई, सेबी, आईआरडीएआई और पीएफआरडीए ने राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षा केन्द्र (एनसीएफई) नामक एक अलग संस्था का गठन किया है। एनसीएफई ने देश में वित्तीय शिक्षा के प्रसार के लिए निम्नलिखित 5C की सिफ़ारिश की है :–

- **सामग्री (Content):** जनसंख्या के विभिन्न वर्गों के लिये वित्तीय साक्षरता सामग्री।
- **क्षमता (Capacity):** वित्तीय शिक्षा प्रदाताओं के लिये क्षमता एवं आचार संहिता का विकास करना।
- **समुदाय (Community):** विकसित समुदाय द्वारा वित्तीय साक्षरता को स्थायी रूप से प्रसारित करने के लिये नेतृत्व करना।
- **संचार (Communication):** वित्तीय शिक्षा संदेशों के प्रसार के लिये तकनीक, मीडिया एवं संचार के नवीन तरीकों का उपयोग करना।
- **सहयोग (Collaboration):** वित्तीय साक्षरता के लिये अन्य हितधारकों के प्रयासों को कारगर बनाना।

एनसीएफई द्वारा की गई अन्य पहल हैं– छठी से दसवीं कक्षा के छात्रों के लिए वित्तीय शिक्षा पाठ्यक्रम का विकास तथा एकीकरण और मनी स्मार्ट स्कूल प्रोग्राम (एमएसएसपी), जो एक शैक्षणिक वर्ष कार्यक्रम है, जहां स्कूल स्वेच्छा से वित्तीय शिक्षा को स्कूल पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में लागू करते हैं। यह स्कूली छात्रों को इसके लिए प्रोत्साहित करता है कि छात्र अपने वित्तीय ज्ञान को बढ़ाने और अपने दैनिक जीवन में इसका उपयोग करने में इसे जीवन के एक कौशल के रूप में अपनाएं।

इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि सरकार तथा नीति निर्माताओं के विज़न में भी बच्चों को वित्तीय रूप से साक्षर करना एक महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है, क्योंकि वे ही हमारा भविष्य हैं।

अतः माता–पिता के रूप में, सबसे पहले हमें अपने बच्चों को यह समझने में मदद करनी चाहिए कि पैसा क्यों महत्वपूर्ण है। पैसा एक आरामदायक जीवन सुनिश्चित करता है। हां, पैसा ही जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है, लेकिन अपने पैसों का सही ढंग से उपयोग, उसका प्रबंधन और बचत करना हमें अपने बच्चों को प्रारम्भ से ही सीखाना चाहिए। हालाँकि, इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि किसी बच्चे को बैलेंस शीट या बिजनेस मॉडल के बारे में समझाया जाए।

सरल शब्दों में, हम समझा सकते हैं कि कोई व्यवसाय कैसे काम करता है, उन्हें अपने दैनिक व्यवसाय और विकास के लिए पैसा कहां से मिलता है। छोटे बच्चों के खिलौनों में मूल्य टैगिंग करके हम उन्हें उच्च और कम मूल्य की चीजों के बारे में बता सकते हैं।

अंत में, मैं इस आलेख को पढ़ने वाले सभी सुधी पाठकों से यह अनुरोध करूंगी कि **'गुल्लक युग'** को पुनः लाया जाए। अपने बच्चों को गुल्लक खरीदकर दें और बचपन से ही उन्हें वित्तीय साक्षरता से परिचित करवाएँ क्योंकि **वित्तीय साक्षरता की शुरुआत होती है – घर से**।

मेरी मां मेरी मातृभाषा

मां की ममता ने नित जिसको सींचा,
तुतलाते बोलों का लहराया बगीचा।
वही बोल इक मीठी भाषा का बेल बनी है,
मां की छवियों, उसकी यादों का मधुर मेल बनी है।।
स्मृतियों से पुलकित है आशा।
मेरी हमसफर – मेरी मां, मेरी मातृभाषा।।

सच कहूं तो अपना हर शब्द लगता है
मां की माला का हो मोती,
भाषा है मेरी पर, वही तो है जो आज भी मेरे शब्द पिरोती।
तभी तो मां के न रहने पर भी मातृभाषा साथ बनी रहती है,
मां की बोली, उसकी शैली से ही तो हमारी बोलचाल
भली लगती है।
जो कुछ है, मां ने है तराशा।
मेरी हमसफर – मेरी मां, मेरी मातृभाषा।।

मां की उसी बिंदी से सजी–धजी
जब कभी सम्मुख आ खड़ी, होती है हिंदी।
मां की यादों से कहीं भव्य,
कहीं अधिक बड़ी होती है हिंदी।।
दिल की बात है बस इतनी सी,
जुबान से निकलती है हिंदी जितनी भी,
मिसरी सी घुल जाती है, दिल में गहरे उतरती है,
हिंदी उतनी ही।।
दिव्य है, भव्य है, मधुर है मेरी भाषा।
मेरी हमसफर – मेरी मां, मेरी मातृभाषा।।

कोमलता सारी समेट कर,
अपनापन सारा उड़ेल कर,
जब भी बोलूं, ऐसा बोलूं,
वचन हों शीतल, हिन्दी का ही मैं रस घोलूं।
हमारे संस्कारों की हिंदी है वाहक,
सनातन परंपरा की हिंदी है पालक,
वजूद हमारा हिंदी से है कि
हिंदी है माता, हम हैं बालक।
हिंदी से जुड़ी हो हर अभिलाषा।
मेरी हमसफर – मेरी मां, मेरी मातृभाषा।।

कमल सिंह
(सहायक प्रबन्धक राजभाषा)
दि न्यू इंडिया एश्युरेंस कं. लिमि.
दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय–2

योग साधना

कठिन हो सकती है परंतु यह असंभव नहीं है

सुधीर कुमार शर्मा
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय स्टेट बैंक
प्रशासनिक कार्यालय–2, नई दिल्ली

योग ऐसा विषय है जिससे आज शायद ही कोई अपरिचित होगा। भारत तो योग की जन्म भूमि है इस नाते हम इससे परिचित तो थे ही किन्तु आज जब समूचा विश्व योग की महिमा को जान रहा है, मान रहा है, योगमय हो रहा है तो भारत के लोगों का इस दृश्य को देखकर अभिभूत होना स्वाभाविक ही है। ऐसा लग रहा है मानो पूरा विश्व योगमय हो गया है। 2020 में कोरोना महामारी ने जब समूचे विश्व को अपने आवरण से ढक लिया था और चारों ओर अंधकार ही अंधकार दिखाई दे रहा था, मानवता का अस्तित्व ही मानो दांव पर लगा हुआ था, आशा की कोई किरण दिखाई नहीं दे रही थी उस संकट के समय में भारत विश्व के लिए प्रेरणा बनकर उभरा। कोरोना महामारी के प्रारम्भिक दौर में भारत के लोग और समूचा विश्व भारत को लेकर चिंतित था। भारत की विशाल जनसंख्या को देखते हुए सभी को भय था कि जब यह महामारी भारत में अपने पैर पसारेगी तो मौत का तांडव हो सकता है। उस स्थिति से भारत कैसे निपटेगा यह यक्ष प्रश्न बना हुआ था। किन्तु कोरोना के उस संकटकाल में भारत की जनता ने जिस संगठित शक्ति के साथ इस महामारी का प्रतिकार किया वह विश्व के लिए आकर्षण के साथ–साथ जिज्ञासा का प्रश्न भी बन गया। संकट के इस समय में प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति, प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाले भारतीय खान–पान के साथ साथ भारतीय योग परंपरा विश्व के लिए और भी अधिक आकर्षण का केंद्र बनी।

हमारे यहाँ तो शास्त्रों में ही ''जीवेद वर्षः शतम .....'' की परिकल्पना की गई है। आज भी हमारे देश में 100 वर्ष की आयु तक जीने वाले लोगों के बारे में सुनाई देता रहता है। परंतु अतीत में ''जीवेद वर्षः शतम'' कल्पना नहीं, वास्तविकता थी और सामान्य जन की आयु को न्यूनतम 100 वर्ष का मानकर ही उसे चार भागों, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास में बांटा गया था। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि केवल 100 वर्ष की आयु तक ही नहीं अपितु 100 वर्ष के बाद भी स्वस्थ शरीर की ना केवल कल्पना की गई बल्कि उसके लिए मार्ग भी बताया गया था। हमारी प्राचीन जीवन पद्धति में 100 वर्ष के स्वस्थ जीवन जीने की कल्पना के पीछे स्वस्थ दिनचर्या, स्वस्थ खान–पान और योग का विशेष महत्व था।

कोई भी कार्य जब नियमित रूप से किया जाता है तो वह एक प्रकार से साधना का रूप ले लेता है और साधना का पथ तो वास्तव में कठिन ही है। यह नियमितता ही है जो साधना के पथ को कठिन बना देती है लेकिन साधक अपनी संकल्प शक्ति के बल पर, दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर इसे सरल बना लेता है।

योग के लाभ :

- ✓ शरीर को स्वस्थ रखता है
- ✓ रोग प्रतिरोधक क्षमता को सुदृढ़ करता है
- ✓ मन और मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के साथ–साथ उसे दृढ़ बनाता है
- ✓ योग आपके अंदर की नकारात्मकता को समाप्त कर आपको सकारात्मकता की ओर ले जाता है
- ✓ वैचारिक दृढ़ता प्रदान करता है
- ✓ मांसपेशियों को मजबूत करता है
- ✓ शरीर को लचीला बनाता है
- ✓ पाचनतंत्र को मजबूत करता है
- ✓ यौवन को दीर्घकाल तक बनाए रखता है
- ✓ रक्तवाहिकाओं को सुदृढ़ करके हृदयाघात, पक्षाघात जैसे खतरनाक रोगों से आपकी रक्षा करता है
- ✓ तनाव प्रबंधन तंत्र को सुदृढ़ करता है। योग के निरंतर अभ्यास से आपके अंदर तनाव को नियंत्रित करने की कला कैसे विकसित हो जाएगी यह आपको पता भी नहीं चलेगा लेकिन निश्चित रूप से आप तनाव प्रबंधन के विशेषज्ञ बन जाएंगे।
- ✓ आज के समय में सामान्य रूप से प्रचलित लेकिन घातक रोगों जैसे रक्तचाप, मधुमेह, सर्वाइकल, कमर दर्द, घुटनों का दर्द से निदान दिलाता है।
- ✓ प्राणायाम के अंतर्गत श्वास पर नियंत्रण करके और श्वास की विभिन्न क्रियाओं के द्वारा भी उपरोक्त रोगों का निदान संभव हो पाता है।
- ✓ सामान्य बीमारियाँ तो आपको छू भी नहीं पाएंगी और अनेक बीमारियाँ जो आज सामान्य जन को 30–35 या 45–50 वर्ष की आयु में ही जकड़ लेती हैं उनसे आप बचे रहेंगे अथवा आप लंबे समय तक ऐसी बीमारियों को टाल सकेंगे।

यह तो योग के लाभों को दर्शाती छोटी सी सूची है। योग के परिणाम तो इससे कहीं अधिक और अकल्पनीय हैं। जीवन को जीने का असली आनंद तो आपको तभी अनुभव होगा जब आप योग से जुड़ जाएंगे तब आपको योग से जुडने से पहले और बाद के अंतर का आभास अवश्य होगा।

योग और व्यायाम करने में आने वाली सामान्य कठिनाइयाँ :

- **सबसे पहली कठिनाई या समस्या तो मन की ही रहती है**

''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत''। ध्यान रखें आपका मन है जिसे आपको ही तैयार करना है। संकल्प ही सिद्धि तक के मार्ग की सीढ़ी का पहला पायदान है। स्वस्थ रहना है तो अपने मन को आपको ही तैयार करना होगा। वैसे इस कार्य के लिए आप योग और व्यायाम से जुड़ी हुई महान विभूतियों से प्रेरणा ले सकते हैं। आपके आस पड़ोस में योग से जुड़े हुए लोगों से संपर्क कर सकते हैं।

- **अव्यवस्थित दिनचर्या**

शहरों में यह आम समस्या या कठिनाई है। इस समस्या का हल भी आपको व्यक्तिगत स्तर पर ही ढूँढना होगा। बचपन में पढ़ते थे, ''Early to bed and early to rise makes the man healthy and wise''। यह बात आज भी उतनी ही सच है। प्रातः जल्दी उठना अपने आप में अनेक शारीरिक व्याधियों का बड़ा सरल सा समाधान है। ध्यान रखें, आप कितनी देर सोये यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना यह कि आपको नींद किस प्रकार की आई। दिनचर्या को व्यवस्थित करें। रात को जल्दी सोने का प्रयास करें। सोने से तुरंत पहले टीवी ना देखें और या मोबाइल का प्रयोग ना करें या कहें कि टीवी देखने के तुरंत बाद या मोबाइल का प्रयोग करते करते सोने के लिए ना जाएँ बल्कि सोने से पहले शांत चित से कुछ देर (दो–चार मिनट) के लिए बैठें, अपने आराध्य का ध्यान करें, लंबे श्वास लेने और छोड़ने की क्रिया करें और फिर इस संकल्प के साथ सोएँ कि प्रातः जल्दी उठकर व्यायाम करना है। यह क्रिया आप अपने बिस्तर पर बैठ कर भी कर सकते हैं। इस क्रिया के तुरंत बाद आप सो जाएँ।

- **समय का अभाव**

यह जान लें कि दिन में 24 घंटे ही होते हैं। इस मामले में प्रकृति ने किसी के साथ अन्याय नहीं किया है। हमें यदि अपनी व्यस्त दिनचर्या में से अतिरिक्त समय निकालना है तो हमें अपनी निद्रा के समय को कम करना होगा। परंतु यह भी एक सीमा तक ही संभव है। अच्छा तो यही होगा कि आप इस चक्कर में ना रहें कि कम से कम आधा घंटा या एक घंटा निकलेगा तभी व्यायाम शुरू करेंगे। समय की चिंता ना करें जितना समय मिलता है फिर चाहे वह पाँच मिनट ही क्यों ना हो। शुरू करें, उसे नियमित करें और उत्तरोत्तर बढ़ाते जाएँ।

- **निरंतरता न बन पाना**

यह समस्या या तो आरंभ में आती है या फिर तब जब आप लंबे अंतराल के बाद व्यायाम कर रहे होते हैं। इस समस्या के बारे में भी मेरा सुझाव यही होगा कि यदि आप योग आसन का नियमित अभ्यास नहीं कर पा रहे हैं या कहें कि निरंतरता नहीं बन पा रही है तो भी निराश ना हों। बस व्यायाम ज़रूर करना है इस बात पर अड़े रहें, मन को पक्का रखें। निरंतरता अपने आप बनती जाएगी। आरंभ में आपने एक दिन व्यायाम किया अगले दिन या दो दिन नहीं हो पाया तो भी निराश ना हों। संकल्प पक्का रखें।

- **समय कम है, कौन सा व्यायाम या आसन या प्राणायाम करें**

इसके लिए कोई निश्चित प्रक्रिया तय कर पाना संभव नहीं है। यह व्यक्ति–व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह क्या करना चाहता है। उदाहरण के लिए आप कम समय में लंबे–लंबे श्वास लेने और छोड़ने की क्रिया कर सकते हैं। इसी प्रकार अनुलोम–विलोम प्राणायाम का अभ्यास किया जा सकता है। लेकिन इतना निश्चित है कि आरंभ में ही कठिन व्यायाम ना करें। सरल व्यायाम से आरंभ करें और उत्तरोतर प्रगति करते जाएँ। यदि आपके पास केवल एक मिनट है तो भी आप एक मिनट में एक सूर्यनमस्कार कर सकते हैं जिसे यदि सही प्रकार से किया जाए तो कहते हैं सिर की चोटी से लेकर पैर के नाखून तक हर अंग का व्यायाम हो जाता है और श्वास क्रिया के साथ करने से कुछ हद तक प्राणायाम भी हो जाता है।

- **योग और व्यायाम से संबन्धित जानकारी या ज्ञान का अभाव**

आज योग से संबन्धित जानकारी यू ट्यूब, सोशल मीडिया और टीवी सहित संचार के विभिन्न माध्यमों पर प्रचूर मात्रा में उपलब्ध है जिसका आप लाभ उठा सकते हैं। स्थानीय पार्कों में भी यदि आप जाएँ तो पाएंगे कि विभिन्न समाज सेवी संस्थाओं, एनजीओ द्वारा योग कक्षाओं का नियमित संचालन किया जा रहा है जिसका लाभ आप उठा सकते हैं।

यहाँ मैंने केवल सांकेतिक कठिनाइयों और उनके समाधान की ही चर्चा की है। कठिनाइयाँ और भी हो सकती हैं किन्तु स्मरण रखें, ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका समाधान संभव ना हो।

क्या करें और कैसे करें

✓ तुरंत योग से जुड़ें। ''कल करे सो आज कर, आज करे सो अब''। आप जितनी जल्दी योग से जुड़ेंगे स्वस्थ जीवन जीने की आपकी राह उतनी ही आसान होगी।

- ✓ कई बार युवा अवस्था में हम यह सोचते हैं कि अभी तो समय ही नहीं है, यह काम बाद में करेंगे, जब समय मिल जाएगा तब करेंगे। जब तक यह सोच रहेगी तब तक योग से जुड़ाव संभव नहीं है। अगर करना है तो करना है, बस ! एक बार समय निकल गया और रोगों ने जकड़ना शुरू कर दिया तो यह कार्य और भी कठिन होता चला जाएगा।
- ✓ इस बात को समझें कि निरोगी अवस्था में योग से जुडने का आनंद भी है और लाभ भी अधिक हैं। एक बार यदि कोई रोग शरीर में प्रवेश कर गया तो उसके अनेक दुष्परिणाम होते हैं जैसे
  1. सामान्य परिस्थिति में भी व्यायाम के लिए शरीर और मन को तैयार करना पड़ता है फिर रोगी शरीर की तो बात ही क्या ? रोगी मन और शरीर को व्यायाम करने के लिए तैयार करना कठिन से कठिनतर होता जाता है।
  2. रोगी शरीर में अवस्थित मन भी अस्वस्थ हो जाता है जो सबसे बड़ी बाधा है।
  3. शरीर में रोगों के प्रवेश कर लेने पर आपको अनेक प्रकार के व्यायाम करने पर प्रतिबंध लग जाते हैं। उदाहरण के लिए रक्तचाप के रोगी को कुछ विशेष प्रकार के व्यायाम मना होते हैं तो मधुमेह के रोगी को दूसरी तरह के, सर्वाइकल के रोगी और कमर दर्द के रोगी को आगे झुकने के व्यायाम और आसन नहीं करने चाहिए। इस प्रकार के प्रतिबंध अनेक समस्याएँ पैदा करते रहते हैं। शरीर में रोगों के प्रविष्ट हो जाने पर आपकी कार्यक्षमता भी प्रभावित होती है जो आपके योग से जुडने में बड़ी बाधा बनती है।
  4. शरीर में रोगों के घर कर लेने पर आपके खान–पान पर भी अनेक तरह के प्रतिबंध लग जाते हैं जो दीर्घ काल में समस्या तो पैदा करते ही हैं हमारे मन और मस्तिष्क में अनावश्यक तनाव भी पैदा करते हैं।
  5. किसी एक बीमारी के आने पर भी पहले से ही योग और व्यायाम के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण और अधिक व्यापक रूप ले लेता है और योग से जुडने में बाधा उत्पन्न करता है।
- ✓ यद्यपि योग के बारे में कहा जाता है कि किसी योग्य शिक्षक की देखरेख में ही योग करना चाहिए और यह बात सही भी है। परंतु शिक्षक ना मिलने की स्थिति में भी आप योग से जुड़ सकते हैं। आजकल तो यू ट्यूब, सोशल मीडिया और टीवी पर ऐसे कार्यक्रम बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं जिनसे आरंभिक अवस्था में कुछ सीखा जा सकता है।
- ✓ योग से जुड़ने के लिए सबसे अच्छा तो यही होगा कि आप छोटे संकल्पों से आरंभ करें। यदि आप नई शुरुआत करने जा रहे हैं या पहली बार योग से जुड़े हैं या काफी अंतराल के बाद पुनः योग से जुड़ रहे हैं तो छोटे संकल्पों से शुरू करें।
- ✓ व्यस्त दिनचर्या है तो योग के लिए बहुत अधिक समय निकालने का दबाव मन में ना पालें लेकिन प्रयास करें कि चाहे पाँच मिनट के लिए ही क्यों ना हो नियमित रूप से व्यायाम करें। साधारण शब्दों में कहूँ तो समय का अपना महत्व तो है किन्तु मेरे विचार में नियमितता उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।
- ✓ प्रारम्भ हल्के फुल्के व्यायाम से करें और फिर उसे धीरे धीरे बढ़ाते जाएँ।
- ✓ योग के लिए अवकाश के दिनों का उपयोग आप अच्छी तरह से कर सकते हैं। सामान्य दिनों की तुलना में अवकाश के दिन आपके पास समय भी पर्याप्त होता है। पर इस काम के लिए अपने अंदर संकल्प शक्ति तो आपको स्वयं ही पैदा करनी होगी।
- ✓ कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं जिनको नीचे बैठने में कठिनाई होती है। घुटनों में दर्द है ज़मीन पर नहीं बैठ सकते। ऐसी स्थिति में भी निराश ना हों। आप चेयर योग के साथ साथ कुर्सी पर बैठ कर भी श्वास की क्रियाएँ कर सकते हैं।
- ✓ आप योग खुले में करें तो बहुत अच्छा है। परंतु समय नहीं है या कम है तो समस्या आती है। चिंता ना करें। आप व्यायाम और योग अपने घर की छत पर कर सकते हैं, छत की सुविधा नहीं है कोई बात नहीं घर या फ्लेट की बाल्कनी में कर सकते हैं, बाल्कनी नहीं है कोई बात नहीं आप अपने घर के कमरे में कर सकते हैं। बस सावधानी मात्र इतनी रखनी है कि कमरे में योग करने से पहले कमरे के दरवाजे और खिड़कियाँ खोल दें। अंदर की बासी हवा बाहर जाने दें और बाहर की ताज़ी हवा को अंदर आने का रास्ता दें और शुरू करें। यह सरल है। यह लाभकारी है। शुरू तो करें।

इस लेख में मैंने योग से जुड़ाव के महत्व, उसके मार्ग में आने वाली कठिनाइयों और उनके निदान की चर्चा की है। मुझे आशा है कि यह पाठकों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। यद्यपि मैंने अपनी जानकारी के आधार पर सीमित मात्रा में ही चर्चा करने का प्रयास किया है तथापि समस्याएँ और भी होंगी लेकिन समाधानों का भी अंत नहीं है। बस शुरू कीजिये और स्वस्थ जीवन की राह पकड़ लीजिये। यही निवेदन है।

याद रहेगा पर्थ शहर

अर्चना भारद्वाज
विशेष सहायक
लेखा परीक्षा विभाग
आईडीबीआई बैंक लिमिटेड
अंचल कार्यालय, नई दिल्ली

हम साल 2018 में अपने विवाह की पच्चीसवीं वर्षगांठ को एक यादगार दिन बनाना चाहते थे पर समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। तब हमारे बड़े भैया ने सुझाव दिया कि इस बार हमको ऑस्ट्रेलिया में अपनी सालगिरह मनानी चाहिए। चूंकि भैया के इतने वर्षों से ऑस्ट्रेलिया में रहने के बावजूद भी हम कभी उनके यहाँ नहीं जा पाए थे, सो उनका ये सुझाव हमें बहुत पसंद आया और कार्यक्रम बन गया।

बस उसके हफ्ते दो हफ्ते बाद ही वीज़ा और टिकेट्स की सारी कार्यवाही पूरी कर हम सपरिवार ऑस्ट्रेलिया के पर्थ शहर के लिए थाई एयरवेज़ से उड़ चले। हमारा उत्साह और जोश सातवें आसमान पर था। थाई एयरवेज़ से पहले हम पाँच घंटे का सफर कर बैंकॉक पहुंचे। वहाँ 2 घंटे रुकने के बाद हमारी दूसरी फ्लाइट से यात्रा थी। कुल मिलाकर लगभग बारह घंटों के सफर के बाद ऑस्ट्रेलिया के पर्थ शहर में उतरे। पर्थ शहर पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया की राजधानी है और ये ऑस्ट्रेलिया का चौथा सबसे बड़ा शहर है।

उन दिनों वहाँ का मौसम सर्दियों के आगमन की तैयारी कर रहा था, इसलिए बहुत ही सुहावना हो गया था। वहाँ उतरते ही ऐसा लगा जैसे हम किसी नई दुनिया में आ गए हों। इतना शांत और साफ सुथरा जैसे नहा–धोकर और तैयार होकर कोई नन्हा बच्चा मुस्कुरा रहा हो। भैया ने बताया इसकी आबादी लगभग चार करोड़ होगी। उस हिसाब से तो शहर में बिलकुल भीड़ नहीं थी। वहाँ का तापमान अधिकतम उन्नीस डिग्री और न्यूनतम दस डिग्री रहने के कारण अमूमन मौसम हसीन ही रहता है।

उनका घर स्वान नदी से करीब सौ कदम की दूरी पर था। इतने चौड़े पाट में फैली हुई नदी तो मैंने पहली बार ही देखी थी। एकदम शांत और मंद–मंद बहती हुई। कहीं भी कूड़े–करकट का कोई नामोनिशान नहीं। देखकर ऐसा लगा कि काश हमारे देश में भी नदियों की पूजा करने के बजाय उनको सिर्फ नदी मानकर साफ सफाई रखते तो जल प्रदूषण की रोकथाम में हम सबसे आगे होते।

पर्थ अपने आप में बहुत खूबसूरत शहर है। सिडनी, मेलबोर्न, गोल्ड कोस्ट और ब्रिस्बेन की अपेक्षा ये अधिक शांत और कम भीड़–भाड़ वाला शहर है। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता अपरंपार है। स्वान नदी के तट पर पहली बार हमें काले हंस दिखे जो सपरिवार नदी में विचरण कर रहे थे। हम जब उनके पास गए तो वो बिना डरे और बिना हमारी परवाह किए आराम से वहीं घूमते रहे। नदी के किनारे जगह–जगह साइकल ट्रैक और मैनुअल जिम के उपकरण लगे हुए थे। वहाँ पैदल चलने का एक अलग ही आनंद था।

ख़ैर भैया–भाभी और बच्चों ने हमारी खूब आवभगत की। हमारे लगभग एक महीने के पर्थ प्रवास में उन्होंने हमें पूरा शहर कई–कई बार घुमा दिया। यूनिवर्सिटीज़ और स्कूल्स तो देखने लायक थे। आप किंग्स पार्क से जब शहर को देखते हैं तो ऐसा लगता है कि जैसे सारा शहर आपके कदमों के नीचे हो और सामने नदी में चलते हुए बोट, स्टीमर और छोटे जहाजों को देख मन झूम उठता था। वहाँ हवा की गति इतनी तेज़ थी कि सीधे खड़े रहना मुश्किल था।

फ्रीमेंटल में मैंने पहली हिन्द बार महासागर को देखा। शाम के समय सूर्य को अपने आंचल में समेटता सागर शांत, गंभीर और इतना विशाल दिख रहा था कि मन वहीं खो गया। निर्विकार भाव से अस्ताचल का साक्षी बनना भी एक सुखद अनुभव था जो मुझे सदैव याद रहेगा। फ्रीमेंटल वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया का एक प्रमुख बंदरगाह शहर है। ये प्राचीन और नवीन आधुनिक इमारतों का अभुत और सुंदर मिश्रण है। यहाँ का म्यूज़ियम और जेल बहुत प्रसिद्ध हैं। यह मछली पकड़ने का भी प्रमुख क्षेत्र है। पर यहाँ की सबसे अच्छी बात यह लगी कि कहीं भी मछली की बदबू या गंध महसूस नहीं होती।

इसके उलट, वहाँ के फिश एंड चिप्स रेस्टोरेंट से खाने की इतनी मनमोहक खुशबू उड़ती है कि हर कोई वहाँ खाने के लिए खिंचा चला आता है। उस रेस्टोरेंट में बड़े ही विशाल एक्वेरियम्स में मछलियों की अनगिनत प्रजातियाँ देखने को

मिलीं जो अत्यंत सुंदर और आकर्षक थीं। जीवन में पहली बार इतनी संख्या में रंगबिरंगी छोटी–बड़ी मछलियों को देखने का अनुभव एक अलग ही अनुभूति देता था।

फ्रीमेंटल की मार्केट हाट बाज़ार की तरह सजी हुई थी। कपड़ों, हस्तकला और अन्य समग्रियों के बेहतरीन स्टॉल। खाने–पीने के स्टॉल और सब्जियों और फ़लों व फूलों की बेशुमार दुकानें। वहीं सबसे पहली बार रंगबिरंगे और काले रंग के अद्भुत गुलाब देखे। मज़े की बात ये थी कि वहाँ भारत के हथकरघा सामान की भी बड़ी दुकान सजी हुई थी जिसे देखकर हमें अत्यंत गर्व हुआ।

कोस्टलो व अन्य समुद्री तट भी देखने लायक हैं। वहाँ बनी प्राचीन इमारतें अपनी अभुत कारीगरी का नमूना थीं। सबसे सुखद आश्चर्य था वहाँ रोज़ इंद्रधनुष का दिखाई पड़ना। जैसे ही वर्षा समाप्त होती, तुरंत इंद्रधनुष दिखने लगता। कभी–कभी आमने–सामने भी बना दिखता। जीवन में पहली बार इतने सारे इंद्रधनुषों का दिखना भी विचित्र संयोग था। हम पर्थ के पास ही डॉल्फिन्स के शहर मंडुराह गए। वहाँ तट के पास ही डॉल्फिन्स खेलती हुई दिख जाती हैं। नदी के किनारे बसा हुआ वो शहर हिंद महासागर को अपने साथ मिलाए हुए था। पहली बार वहीं पर नदी और सागर का संगम भी देखा जो कि एक अविस्मरणीय अनुभव था।

शब्दों की सीमा कम है और लिखने को अभी बहुत कुछ शेष है। फिर भी, थोड़ा सा और लिखने का मन है। फुटपाथ पर फूलों और फ़लों से लदे हुए पेड़, एक रफ़्तार से चलती हुई अनुशासित गाड़ियां और वो भी बिना हॉर्न बजाए। अनजान व्यक्तियों को भी देखकर मुस्कुराते हुए वहाँ के लोग और एक मजेदार जगह देखी, वो था वहां का कैसीनो, जहां अधिकतर बुजुर्ग ही मज़े लेकर खेलते हुए दिखे।

जाने ऐसी कितनी ही अनमोल और अनगिनत यादों के पल साथ लिए एक महीना कब बीत गया, इसका पता ही नहीं चला। हमारे विवाह की वो वर्षगांठ हमारे लिए मात्र एक औपचारिकता ही नहीं रही, अपितु वो हमारे लिए जीवन भर का एक अविस्मरणीय अनुभव बन गई। जब भी उन यादों के पन्ने खोलती हूँ तो मन में पर्थ से जुड़ी स्मृतियों को लेकर बरबस ही वो एक पुराना नग़मा गूंजने लगता है...'तुम मुझे यूँ भुला न पाओगे'...

विमोचन

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, दिल्ली अंचल प्रमुख, श्री कबीर भट्टाचार्य एवं क्षेत्र प्रमुख, श्री गोविंद मिश्रा द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली की गृह पत्रिका ''यूनियन महक'' का विमोचन किया गया।

ग्राहक बैठक

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा ''यूनियन मुस्कान ग्राहक बैठक'' आयोजन श्री शशि कांत प्रसाद, उप क्षेत्र प्रमुख की उपस्थिति में किया गया जिसमें यूनियन मुस्कान खाताधारकों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़ा

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 16 सितंबर, 2023 से 29 सितंबर, 2023 तक 'हिंदी पखवाड़ा' मनाया गया।

पंजाब नैशनल बैंक : हिंदी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन

पंजाब नैशनल बैंक हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली में हिंदी माह के उपलक्ष्य में राजभाषा समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल ने की। इस अवसर पर बैंक के कार्यपालक निदेशकगण, श्री कल्याण कुमार, श्री बिनोद कुमार, श्री एम. परमशिवम तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री राघवेन्द्र कुमार सहित मुख्य महाप्रबंधकगण एवं महाप्रबंधकगण विशेष रूप से उपस्थित रहे।

समारोह का उद्घाटन सत्रः–

कार्यक्रम का शुभारंभ एमडी एवं सीईओ, कार्यपालकों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। तदनुसार स्टाफ सदस्यों द्वारा सरस्वती वंदना तथा नृत्य प्रस्तुति दी गई। इसके बाद विभाग की विभागीय प्रमुख, श्रीमती मनीषा शर्मा ने ऑडियो एवं वीडियों के माध्यम से राजभाषा गतिविधियों की रिपोर्ट की जानकारी समस्त स्टाफ सदस्यों को दी। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय ने सर्वप्रथम राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से बैंक को 02 'राजभाषा कीर्ति' पुरस्कार बैंक की श्रेणी में 'प्रथम' तथा गृह पत्रिका 'पीएनबी प्रतिभा' हेतु 'द्वितीय पुरस्कार) प्राप्त करने पर प्रसन्नता जताते हुए इसका श्रेय सभी स्टाफ सदस्यों को दिया और आगे भी इस प्रदर्शन को कायम रखने की आशा जताते हुए अपनी बधाई और शुभकामनाएं दी।

समारोह के आरम्भ में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल।

पीएनबी प्राइड के राजभाषा मॉड्यूल का शुभारंभ :–

इस अवसर पर माननीय एमडी एवं सीईओ द्वारा नवोन्मेषी पहल के अंतर्गत राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा बनाये गए पीएनबी प्राइड ऐप में राजभाषा मॉड्यूल का उद्घाटन किया गया। इस पहल के अंतर्गत राजभाषा हिंदी के अनुपालन को और भी अधिक डिजिटल और पारदर्शी बनाने का प्रयास किया गया है। जिसके माध्यम से राजभाषा अधिकारियों द्वारा वित्तीय वर्ष के दौरान प्रधान कार्यालय के विभागों, अंचल, मंडल तथा शाखाओं के राजभाषाई निरीक्षण को स्थल पर ही अद्यतित करने की सुविधा प्रदान की गई। इसके अलावा प्रधान कार्यालय की गृह पत्रिका 'पीएनबी प्रतिभा' के नवीन अंक का विमोचन एमडी एवं सीईओ, कार्यपालक निदेशकगणों, सीवीओ के करकमलों द्वारा किया गया।

अध्यक्षीय सम्बोधन देते हुए एमडी एवं सीईओ श्री अतुल कुमार गोयल

हिंदी में उत्कृष्ट कार्य हेतु लाला लाजपत राय राजभाषा शील्ड का वितरण :–

वित्तीय वर्ष 2022–23 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रधान कार्यालय के विभिन्न प्रभागों/विभागों, अंचल कार्यालयों तथा प्रशिक्षण केन्द्रों को विभिन्न विधाओं में लाला लाजपत राय शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र एमडी एवं सीईओ, कार्यपालक निदेशकगण तथा सीवीओ महोदय द्वारा प्रदान किये गए।

कवि सम्मेलन में अतिथि कवियों द्वारा शानदार प्रस्तुति :–

राजभाषा समारोह के अगले चरण में सुप्रसिद्ध कवि डॉ. अशोक चक्रधर और ने अपनी कविताओं के माध्यम से कार्यक्रम को गरिमा प्रदान करते हुए समारोह में उपस्थित सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। सर्वप्रथम कवयित्री, सुश्री मधुमोहिनी उपाध्याय ने अपनी हृदयस्पर्शी कविताओं से श्रोतागणों को अंत तक बांधे रखा तो वहीं डॉ. अशोक चक्रधर जी ने अपने मर्मस्पर्शी कविताओं, व्यंग्य के माध्यम से श्रोताओं को जीवन के अनेक रंगों से साक्षात्कार करवाया।

धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन :–

प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग की विभागीय प्रमुख, श्रीमती मनीषा शर्मा द्वारा समारोह में उपस्थित सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यक्रम के औपचारिक समापन की घोषणा की।

काव्य पाठ करते हुए डॉ. अशोक चक्रधर।

काव्य पाठ करते हुए सुश्री मधुमोहिनी उपाध्याय।

केनरा बैंक : हिन्दी दिवस समारोह

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, दिल्ली द्वारा दिनांक 29.09.2023 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री भवेंद्र कुमार, अंचल प्रमुख व मुख्य महाप्रबंधक द्वारा की गयी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध साहित्यकार व दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ विजय कुमार वर्मा थे।

दीप प्रज्ज्वलन

कार्यक्रम का शुभारंभ ईश वंदना के साथ हुआ। इसके बाद कार्यपालकों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित किया गया और संस्थापक को श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए।

महाप्रबंधक का विशेष संबोधन

समारोह के अध्यक्ष श्री भवेंद्र कुमार, मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अंचल में राजभाषा कार्यान्वयन के कार्य पर संतुष्टि जताते हुए कहा कि हमें यहां रुकना नहीं है बल्कि राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते रहना है तभी हम अधिक से अधिक ग्राहकों को अपने बैंक से जोड़कर बैंक के कारोबार को बढ़ा पाएंगे।

मुख्य अतिथि का संबोधन

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ विजय कुमार वर्मा ने कहा कि हिंदी बहुत ही सरल व वैज्ञानिक भाषा है। इसका प्रयोग बहुत ही आसान है। हम सब बड़ी ही सहजता से हिंदी में कार्य कर सकते हैं, बस हमें उस हीन भावना से निकलने की आवश्यकता है। हिंदी के साथ साथ हमें अन्य क्षेत्रीय भाषाएं भी सीखनी चाहिए, इससे हमारा ही विकास होगा।

पुरस्कार वितरण

श्री हितेश चंद्र गोयल, महा प्रबंधक महोदय ने कहा कि अपनी भाषा में कार्य करना हमारे लिए गौरव की बात होनी चाहिए और सभी उपस्थितों को राजभाषा में अधिक से अधिक काम करने के लिए प्रेरित किया।

श्री राकेश कुमार, उप महाप्रबंधक द्वारा केंद्रीय गृह मंत्री के संदेश का वाचन किया गया।

श्री रजनी कांत, उप महाप्रबंधक द्वारा बैंक के प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी के संदेश का वाचन किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

धन्यवाद ज्ञापन

श्री अभय कुमार मालवीय, उप महाप्रबंधक ने हिंदी के गौरवमयी इतिहास को दोहराते हुए कार्यालय में हिंदी भाषा के प्रयोग की आवश्यकता और व्यवहारिकता पर सभी को संबोधित किया।

इस अवसर पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। प्रतिभागियों द्वारा कविता व गीत–संगीत प्रस्तुत किए गए। अंत में श्री अरविंद कुमार, सहायक महाप्रबंधक के आभार वक्तव्य के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

बैंकिंग में नैतिकता का महत्व

श्रुति मलिक
संकाय एवं मुख्य प्रबंधक,
बडौदा अकादमी, नई दिल्ली

भारतीय बैंक में नैतिकता का महत्व : व्यावसायिक नैतिकता किसी भी संगठन की सफलता और स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, और नैतिक आचरण ही वह आधार है जिस पर यह विश्वास बनाया गया है, और यही भारतीय बैंकों की अखंडता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बैंकिंग क्षेत्र अर्थव्यवस्था की रीढ़ के रूप में कार्य करता है, जिसे लोगों की मेहनत की कमाई की सुरक्षा, व्यवसायों का समर्थन करने और वित्तीय प्रणाली की स्थिरता बनाए रखने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। अर्थव्यवस्था के स्तंभों के रूप में, बैंक विश्वास और जिम्मेदारी का निर्वाह करते हैं और इनके लिए नैतिक आचरण का पालन सर्वोपरि महत्व का है। यह लेख भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में नैतिकता के महत्व पर प्रकाश डालता है और ऐसे विभिन्न कारणों की पड़ताल भी करता है कि इसे सर्वोच्च प्राथमिकता क्यों रहना चाहिए। नैतिक प्रथाओं के बढ़ते महत्व के साथ, वित्तीय संस्थानों का विश्वास को बढ़ावा देने, ग्राहक से वफादारी बनाए रखने और सामाजिक जिम्मेदारियों को बनाए रखने के लिए एक मजबूत नैतिक ढांचे का पालन करना चाहिए। हितधारकों के हितों को बनाए रखना, विश्वास किसी भी सफल वित्तीय संगठन की आधारशिला है और बैंक विशेष रूप से इस पर बहुत अधिक भरोसा करते हैं। भारत में बैंक सार्वजनिक धन के संरक्षक के रूप में कार्य करते हैं और उन्हें इन संसाधनों की सुरक्षा और प्रबंधन का काम सौंपा जाता है। व्यावसायिक नैतिकता यह सुनिश्चित करती है कि बैंक जिम्मेदारी और नैतिक रूप से कार्य करते हैं, अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं और ग्राहकों, शेयरधारकों और आम जनता के बीच विश्वास को मजबूत करते हैं। नैतिक सिद्धांतों का पालन पारदर्शिता, निष्पक्षता और जवाबदेही सुनिश्चित करता है और विश्वास की नींव स्थापित करता है। हितधारकों के हितों को प्राथमिकता देकर, भारत में बैंक अपनी विश्वसनीयता बढ़ा सकते हैं और शेयरधारकों के साथ मजबूत संबंध बनाए रख सकते हैं एवं स्थिरता और दीर्घकालिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं। पारदर्शिता और जवाबदेही वित्तीय संगठन, विशेष रूप से बैंक, एक ऐसे वातावरण में काम करते हैं जहां पारदर्शिता और जवाबदेही सर्वोपरि महत्व की है। व्यावसायिक नैतिकता यह सुनिश्चित करती है कि बैंक पारदर्शी तरीके से काम करें, हितधारकों को सटीक और विश्वसनीय जानकारी प्रदान करें। पारदर्शिता आत्मविश्वास को बढ़ावा देती है और हितधारकों को अपने वित्तीय मामलों के बारे में निर्दिष्ट निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। इसके अलावा, नैतिक सिद्धांतों का पालन करने से संगठन के भीतर जवाबदेही स्थापित करने में मदद मिलती है जिससे सुनिश्चित होता है कि कार्य और निर्णय जांच और समीक्षा के अधीन हैं। ग्राहक विश्वास और वित्तीय स्थिरता बैंकों को ग्राहक निधियों की सुरक्षा और विश्वसनीय वित्तीय सेवाएं प्रदान करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसमें स्पष्ट और समझने योग्य नियम और शर्तें प्रदान करना, लूट–पाट वाली उधार प्रथाओं से बचना और भेदभावपूर्ण प्रथाओं को रोकना शामिल है। नैतिक प्रथाएं ग्राहकों में विश्वास पैदा करती हैं, उन्हें आश्वस्त करती हैं कि उनके लेनदेन, व्यक्तिगत जानकारी और निवेश को सत्यनिष्ठा और व्यावसायिकता के साथ संभाला जाता है। नैतिक मानकों को बनाए रखने से भारत में बैंकों को तीव्र प्रतिस्पर्धा के बीच विश्वसनीयता, ग्राहकों को आकर्षित करने और बनाए रखने के लिए प्रतिष्ठा बनाने में मदद मिलती है। इसके अलावा, बैंक के नैतिक आचरण में विश्वास से प्रेरित ग्राहक वफादारी, क्रॉस–सेलिंग के अवसरों और सकारात्मक वर्ड–ऑफ– माउथ रेफरल में वृद्धि करती है।

कानूनी और नियामक ढांचे का अनुपालन : नैतिकता और अनुपालन साथ–साथ चलते हैं। भारतीय बैंक वित्तीय स्थिरता, उपभोक्ता संरक्षण और उचित प्रथाओं को बनाए रखने के उद्देश्य से एक व्यापक नियामक ढांचे के भीतर काम करते हैं। भारत में बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) और अन्य शासी निकायों द्वारा निर्धारित विभिन्न कानूनों और विनियमों का पालन करना चाहिए, जैसे कि भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, बैंकिंग विनियमन अधिनियम, और धन शोधन निवारण अधिनियम। अपने संचालन में व्यावसायिक नैतिकता को एकीकृत करके, बैंक इन नियमों का अनुपालन सुनिश्चित कर सकते हैं, दंड से बच सकते हैं, जोखिम को कम कर सकते हैं और गैर–अनुपालन से उत्पन्न होने वाली प्रतिष्ठा की क्षति से बच सकते हैं। नैतिक आचरण, बदले

में, एक सकारात्मक सार्वजनिक धारणा में योगदान देता है, कानून का पालन करने वाली और भरोसेमंद संस्था के रूप में बैंक की प्रतिष्ठा को मजबूत करता है।

धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार की रोकथाम : वित्तीय क्षेत्र खासकर धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के लिए आलोचनीय है क्योंकि इसमें अर्थपूर्ण मौद्रिक लेनदेन शामिल हैं। व्यावसायिक नैतिकता मजबूत आंतरिक नियंत्रण और जोखिम प्रबंधन प्रणाली स्थापित करने में मदद करती है जो धोखाधड़ी की गतिविधियों के जोखिम को कम करती है। एक नैतिक संस्कृति को बढ़ावा देकर, भारत में बैंक रिश्वत और मनी लॉन्ड्रिंग जैसी भ्रष्ट प्रथाओं को हतोत्साहित कर सकते हैं, और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि वे वित्तीय अपराधों का मुकाबला करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कॉर्पोरेट गवर्नेंस को मजबूत करना : नैतिकता भारतीय बैंकों के भीतर प्रभावी कॉर्पोरेट प्रशासन को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नैतिक मानकों का पालन करके, बैंक यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उनकी निर्णय लेने की प्रक्रिया निष्पक्ष, पारदर्शी और हितधारकों के सर्वोत्तम हितों के साथ संरेखित है। नैतिक आचरण पूरे संगठन में जवाबदेही, जिम्मेदार नेतृत्व और अखंडता की संस्कृति को प्रोत्साहित करता है। नैतिकता द्वारा समर्थित मजबूत कॉर्पोरेट प्रशासन प्रथाएं, बैंक को शक्ति के आंतरिक दुरुपयोग, हितों के टकराव और अनैतिक व्यवहार से बचाने में मदद करती हैं।

सामाजिक जिम्मेदारी और सतत विकास : वित्तीय संगठनों का समाज और अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। वे पूंजी आवंटित करने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और व्यक्तियों और व्यवसायों को आवश्यक वित्तीय सेवाएं प्रदान करने के लिए उत्तरदायी हैं। भारत में बैंक जो नैतिक प्रथाओं को प्राथमिकता देते हैं, वे सामाजिक जिम्मेदारी के साथ लाभ–मांग को संतुलित करने के महत्व को पहचानते हैं। अपने निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में नैतिक विचारों को एकीकृत करके, बैंक स्थायी आर्थिक विकास, पर्यावरण प्रबंधन और सामाजिक कल्याण में योगदान कर सकते हैं। पर्यावरण, समाज और शासन (ईएसजी) सिद्धांतों को अपनी प्रथाओं में शामिल करके, बैंक अधिक न्यायसंगत और पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ भविष्य में योगदान कर सकते हैं। इस तरह के कार्यों से न केवल समाज को लाभ होता है, बल्कि बैंक की ब्रांड छवि भी बढ़ती है और सामाजिक रूप से जागरूक ग्राहकों, निवेशकों और कर्मचारियों से अपील होती है।

कार्मिक वचनबद्धता और संगठनात्मक संस्कृति : व्यावसायिक नैतिकता शीर्ष पर शुरू होती है, जिसमें नैतिक नेतृत्व एक संगठन के नैतिक आचरण का एक महत्वपूर्ण चालक होता है। भारत में बैंकों में ऐसे अगुआ होने चाहिए जो पूरे संगठन में नैतिक मूल्यों को मूर्त रूप दें और बढ़ावा दें। नैतिक अगुआ नैतिक आचरण को वाणी देते है और अपेक्षाओं को निर्धारित करते हुए एक संगठनात्मक संस्कृति बनाते हैं जो अखंडता, निष्पक्षता और उत्तरदायित्व को प्राथमिकता देती है। यह संस्कृति रैंकों के माध्यम से व्याप्त है, जो कर्मचारियों को अपने दिन–प्रतिदिन के कार्यों में नैतिक निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है। नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं का वित्तीय संगठनों के भीतर कर्मचारी जुड़ाव और संगठनात्मक संस्कृति पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। जब कर्मचारी एक ऐसे वातावरण में काम करते हैं जो नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों को बनाए रखता है, तो वे संगठन का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित, मूल्यवान और गर्व महसूस करने की अधिक संभावना रखते हैं। नैतिक आचरण एक सकारात्मक कार्यस्थल संस्कृति को बढ़ावा देता है, जो बदले में उत्पादकता, टीमवर्क और कर्मचारी संतुष्टि को बढ़ाता है। इसके अलावा, एक नैतिक संगठनात्मक संस्कृति शीर्ष प्रतिभा को आकर्षित करने और बनाए रखने में मदद करती है, क्योंकि व्यक्ति तेजी से उन संगठनों के साथ रोजगार की तलाश कर रहे हैं जो उनके व्यक्तिगत मूल्यों के साथ संरेखित हैं।

उपसंहार : भारतीय बैंकिंग क्षेत्र तेजी से परस्पर जुड़े और जटिल वातावरण में काम करता है, जिसके लिए एक मजबूत नैतिक नींव की आवश्यकता होती है। नैतिक आचरण को बनाए रखना बैंकों को विश्वास बनाए रखने, पारदर्शी रूप से काम करने और हितधारकों के हितों की रक्षा करने में सक्षम बनाता है। नैतिक सिद्धांतों का पालन करके, बैंक खुद को अखंडता, विश्वसनीयता और विश्वसनीयता के स्तंभों के रूप में स्थापित कर सकते हैं। इसके अलावा नैतिक होने के नाते, बैंक न केवल कानूनी और नियामक आवश्यकताओं का पालन करते हैं, बल्कि निष्पक्ष प्रथाओं और ग्राहक संरक्षण को बढ़ावा देते हुए धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार को भी रोकते हैं। सत्यनिष्ठा और जिम्मेदारी को महत्व देने वाला नैतिक नेतृत्व और एक संगठनात्मक संस्कृति एक स्थायी वित्तीय प्रणाली को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण है। नैतिकता को अपनाने और बढ़ावा देने से, भारतीय बैंक एक मजबूत, पारदर्शी और टिकाऊ वित्तीय प्रणाली में योगदान कर सकते हैं जो सभी हितधारकों को लाभान्वित करता है और देश के आर्थिक विकास को आगे बढ़ाता है।

सुपुत्र

राजीव शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक
पंजाब नैशनल बैंक,
प्रधान कार्यालय

"मैंने कहा जी, आज घर में पकाने के लिए कोई तरकारी नहीं है, अगर कहो तो दाल के साथ, प्याज की सब्जी बना दूं?" कृष्णा ने अपने पति से पूछा। "हां, बना लो। अब हिम्मत नहीं है, बाजार जाकर तरकारी लाने की। गली में से ही ले ली होती ?" भागमल ने अन्तिम शब्दों पर जोर देते हुए कहा। ''दिनभर तो कोई आया नहीं। हां, दोपहर में जरा आंख लग गयी थी, तब कोई आया हो तो मालूम नहीं।" इतना कहकर कृष्णा प्याज छीलने लग गयी और भागमल टी.वी. पर टकटकी लगाये समाचार देखने में मग्न हो गया। "आज छोटी बहु का फोन आया था, बता रही थी कि चिन्की को प्ले स्कूल में दाखिल करवा दिया है। 1500/– रूपये फीस है और 5000/– रूपये दाखिले के दिये हैं।'' कृष्णा ने घर के समाचार सुनाते हुए कहा।" हां भई, आजकल तो स्कूल बहुत मंहगे हो गये हैं। दाल कौन सी बना रही हो? अगर अभी तक कोई नहीं बनायी तो अरहर की बनाना, प्याज की सब्जी के साथ जायका आ जाएगा।" भागमल ने बात बदलते हुए कहा। "हां–हां, अरहर की ही बना रही हूं। पैंतालिस वर्ष हो गये हैं आपके साथ रहते, भली प्रकार से जानती हूं आपकी पसन्द–नापसन्द को।" प्याज कड़ाही में डालते हुए कृष्णा बोली। कृष्णा चुपचाप खाना बनाने लग गयी और भागमल पूरी तन्मयता से समाचार सुनने लगा। ऐसी छोटी–छोटी प्यार भरी तकरार तो गत पांच वर्ष से रोजाना का किस्सा बन गयी थी वर्ना, इससे पहले तो कई–कई दिन निकल जाते थे, दोनों को एक–दूसरे का चेहरा देखे भी। चाय के व्यापार से भागमल को फुर्सत ही नहीं मिल पाती थी। कभी दार्जिलिंग तो कभी लंदन। हफ्तों–हफ्तों तक घर से बाहर रहना। पूरे देश में ही नहीं, विदेशों में भी नाम था 'कृष्णा चाय' का। भागमल, देश में चाय का सबसे बड़ा निर्यातक था। त्रेसठ वर्ष की आयु तक खूब भाग–दौड़ की, खूब नाम–शौहरत और पैसा कमाया। लेकिन एक बार पैर की हड्डी क्या टूटी, छह महीनों तक चारपाई से उठ नहीं पाया। इन छह महीनों में तीनों लड़कों ने न केवल कारोबार को संभाला बल्कि नई ऊचाईयां भी दी। भागमल को लगने लगा कि व्यापार अब युवा हाथों में सौंप देना चाहिये। उसने तीनों बेटों को व्यापार में हिस्सेदार बना लिया और व्यापार की बागडोर उनके हाथों में सौंप दी। बेटे तो व्यापार में बाप के उस्ताद निकले। तीनों ने मिलकर भागमल के हिस्से को खरीद लिया और फिर आपस में कारोबार का बंटवारा कर लिया। लड़कों के व्यवहार से आहत भागमल ने कृष्णा को साथ लेकर घर छोड़ दिया और उसी शहर की कालोनी में छोटा–सा एक घर लेकर रहने लगा। आज तक उनके किसी बेटे ने आकर कुशलता जानना तो दूर, फोन तक नहीं किया था, हां, बहुएं अवश्य ही फोन करती रहती और घर के समाचारों से अवगत करवाती, रहती। जिन बेटों के लिए लोग मन्नत मांगते हैं, उन्हीं तीन–तीन बेटों ने उन्हें संतानहीन बना दिया था। यह दोनों वृद्ध, अत्यन्त जीवट व्यक्तित्व के स्वामी थे अतः न किसी से कोई गुहार लगाई और ना ही किसी को कोई उलाहना दिया। चुपचाप अपने ढंग से अपनी जिन्दगी जीने लगे। कभी कोई औलाद का कहीं जिक्र भी कर देता तो बिना किसी शिकायत के, हंसकर टाल देते। हां, आपस अवश्य ही हल्की–फुल्की नोंक–झोंक कर लेते थे। बस यही दिनचर्या बन गयी थी उनकी।

समय यूं ही धीरे–धीरे बीतता रहा और मालूम ही नहीं पड़ा कि कब दस वर्ष बीत गये। बुढ़ापा निरन्तर अपने यौवन की ओर अग्रसर हो रहा था। कृष्णा से अब घर का काम नहीं होता था। भागमल भी अब आंखों पर उस मोटे से चश्में को चढ़ाकर अधिक देर तक बाहर घूमने में अक्षम महसूस करने लगा था। दोनों अधिक समय अब घर पर ही व्यतीत करते। बहुओं के फोन आने कम हो गये थे, इसलिए बच्चों की याद, कृष्णा को अक्सर सताने लगी। वह कई बार भागमल से कह चुकी थी कि चलो, चलकर बच्चों से मिल आएं। भागमल हमेशा टालमटोल कर देता मगर इस बार उसे मानना ही पड़ा और दोनों ने रविवार को जाने का कार्यक्रम बनाया। रविवार की सुबह भी आ गयी। दोनों बूढ़े शरीरों की फुर्ती देखते ही बन रही थी। चाय–नाश्ता करके दोनों चलने को तैयार थे। भागमल जाकर, गली की नुक्कड़ से रिक्शा ले आया। दोनों, उस रिक्शा पर सवार होकर, शहर के उस पोश इलाके की ओर निकल पड़े, जहां उनके तीनों बेटे, बड़ी–बड़ी कोठियों में रहते थे। कृष्णा तो मानों, रिक्शे पर बैठते ही ख्यालों की दुनिया में पहुंच गयी हो। रह–रहकर उसकी आंखों के सामने, उसके तीनों बेटों का चेहरा आ रहा था। वह कल्पना कर रही थी कि बालों में हल्की सफेदी आने के बाद, उसके बेटे कैसे नजर आते होंगे। मंझली बहु को तो श्रृंगार में विशेष रूचि नहीं मगर, बड़ी तथा छोटी, दोनों बहुएं तो हमेशा की तरह ही सज–धज कर बैठी होंगी। पोते–पोतियों के चेहरे याद करने की उसने बहुत कोशिश की मगर, एक धुंधली सी सूरत ही सामने आ सकी। रिक्शा सड़क पर मध्यम गति से दौड़ रहा था और कृष्णा की कल्पना, द्रुत गति से। भागमल कई वर्षों के बाद, शहर के इस इलाके की तरफ आया था। मार्किट विशाल रूप ले चुकी थी। बहुत सी नयी दुकानें बन गयी थी। कुछ पुरानी दुकानों के स्थान पर बड़े–बड़े शोरूम बन चुके थे। उसकी नजरें बदले हुए नज़ारे को लगातार निहार रही थीं। कभी, कोई परिचित हाथ हिलाकर अभिवादन कर देता तो वह नज़रे गढ़ाकर उसे पहचानने की कोशिश करता। वृद्ध–दम्पति, अपने अतीत की तरफ अग्रसर होते हुए, अजीब सी अनुभूति से सराबोर थे। होनी को शायद कुछ और ही मंजूर था। सड़क पर तेज दौड़ रही एक कार, रिक्शा की साईड से टकरा कर निकल गयी। रिक्शा सवारों सहित पलट गया। रिक्शा चालक और भागमल को तो मामूली खरोंचे आयी लेकिन कृष्णा

का सिर सड़क के किनारे पटरी से जा टकराया और वह बेहोश हो गयी। एकत्रित भीड़ में से कोई उन्हें तुरन्त पास वाले नर्सिंग होम में ले गया। लड़कों को भी तुरन्त फोन कर दिया गया। एक–डेढ़ घण्टे में, तीनों लड़के नर्सिंग होम पहुंच गये और लगे डाक्टरों को निर्देश देने। प्रत्येक प्रत्यक्षदर्शी, उनके मातृ–प्रेम को देखकर भाव–विह्वल हो उठा। दो दिन तक, जीवन और मृत्यु के बीच जूझते हुए, कृष्णा जीवन की बाजी हार गयी। हर कोई शोकाकुल था। भागमल तो मानों जड़ ही हो गया। तीनों बेटों और बहुओं ने आपस में कुछ कानाफूसी की और भागमल को अवगत करवाया कि शव यात्रा बड़े बेटे के घर से निकलेगी। भागमल, चाहकर भी कुछ नहीं कह पाया। शहर के सभी नामी–गिरामी लोग शामिल थे इस शव–यात्रा में। सबकी जुबान पर एक ही चर्चा थी, "साहब, बेटे हों तो ऐसे। इतना बड़ा व्यापार, इतनी व्यस्तताएं इसके बावजूद बिना दिन–रात की परवाह किये, तीनों बेटे और बहुऐं, दो दिन तक मां की सेवा करते रहे। भगवान ऐसी औलाद सबको दे।" तेरह दिन तक शोक मनाया गया। तीनों बेटे, इन तेरह दिनों तक घर पर ही रहें। कोई काम नहीं, कोई व्यापार नहीं। शोक समाप्त होने के सुपुत्र उपरांत, भागमल जब अपने घर जाने लगा तो, तीनों बेटे उसके पास आये और बोले, "मां तो अब रही नहीं। उस मकान में आपका अकेले रहना ठीक नहीं है। हरिद्वार में एक बहुत अच्छा वृद्धाश्रम है, हम वहीं आपकी व्यवस्था कर देते हैं। आपकी उम्र के बहुत से लोग हैं वहां, जिनसे आपका मन लगा रहेगा और अच्छी प्रकार से देखभाल भी होती रहेगी।'' भागमल अवाक् खड़ा अपने सुपुत्रों को देखता रहा और फिर थोड़ा सा मुस्कुराकर बोला, "बेटा, इतनी दूर क्यों व्यवस्था कर रहे हो। उसी मकान में ही रहने दो। आखिर, मेरे मरने के बाद, मेरी शव यात्रा भी तो तुम लोग यहीं, इसी घर से ही तो निकालोगे? व्यर्थ ही हरिद्वार आने–जाने में तुम्हारा समय नष्ट होगा।" इतना कहकर, लाठी टेकता हुआ भागमल, बाहर सड़क पर रिक्शा लेने बढ़ गया और तीनों बेटे एक–दूसरे के चेहरों में बाप के शब्दों के अर्थ ढूंढने लगे।

बीज प्रेम का

किसी के दिल में नफरत का, बीज बोना तो आसाँ है,
पौधा प्यार का लगाएं, तो मानें।
यूँ तो दुश्मन बहुत है जमाने में,
कोई दुश्मन दोस्त बनकर दिखाएं, तो मानें।

जिन्दगी भर ढूंढते रहते हैं हम,
कोई चाहने वाला मिल जाए।
हर कोई चाहे आपको,
क्यूं न हम ऐसे इंसान बन जाएं।

इंसानियत से कोसों दूर,
हैवानियत की हदें पार कर,
हर दिन बढ़ते तो जा रहे हैं,
पर कहाँ जा रहे हैं नहीं मालूम।

दूसरों की छोड़,
क्यूं न हम अपनी खबर ले लें,
जिंदगी की दौड़ में हम कहाँ जा रहे है,
बस इसी की सुध ले लें।

इसी से हर दिल महकेगा,
इसी से हर आँगन चहकेगा।
आओं यारो हम मिल के,
एक कोशिश कर जाएं,
हर दिल में प्यार का, बस एक बीज बो जाएं।

सुश्री शर्मिला कटारिया
मुख्य प्रबंधक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, आयोजना एवं विकास विभाग
क्षेत्रीय कार्यालय नई दिल्ली

जीवन : एक रण

जो हुआ मौन संसार सकल
जो झुका वीर घुटनों के बल
जो अंधियारों में डूब रहा
जो अंतर्मन में जूझ रहा
मैं उसे बताने आया हूं
मैं उसे जगाने आया हूं
यह संसार महज़ इक माया है
जिसे समझ नहीं तू पाया है
यह संघर्ष तेरे मन के अंदर
यह युद्ध तेरे मन के अंदर
जो जीत रहा वो भी तू है
जो हार रहा वो भी तू है
जो हर्षित होकर झूम उठा वो भी तू है
जो मृत्यु शैय्या पे झूल रहा वो भी तू है
तू कृष्ण भी है, तू कर्ण भी है
गंगा पुत्र भी है, महाभारत का रण भी है
तो उठो वीर और तानो गांडीव
प्रत्यंचा पर धर के बाण
जीवन हो जाए कर्म प्रधान
और पुरुषार्थ वीरत्व का वरदान।

दुर्गेश राय
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया,
करोल बाग शाखा (02642)
नई दिल्ली

राजभाषा सम्मेलन : बैंक ऑफ बड़ौदा

बैंक ऑफ़ बड़ौदा में वरिष्ठ कार्यपालकों का राजभाषा सम्मेलन

दिनांक 22 अगस्त 2023 को वरिष्ठ कार्यपालकों के लिए राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ श्री राकेश शर्मा, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, नई दिल्ली के स्वागत सम्बोधन से हुआ। 80 से अधिक वरिष्ठ कार्यपालकों की गरिमामयी उपस्थिति और करतल ध्वनि के बीच कार्यक्रम की मुख्य अतिथि **सुश्री अंशुली आर्या, भा.प्र.से, सचिव, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा** विभाग ने सहर्ष व्हाट्सऐप बैंकिंग के गुजराती संस्करण, बैंक की वार्षिक राजभाषा कार्ययोजना 2023–24 तथा अक्षय्यम् पत्रिका के अप्रैल–जून, 2023 अंक का विमोचन किया।

श्री संजय सिंह, प्रमुख– राजभाषा ने सभा के समक्ष बैंक ऑफ बड़ौदा में राजभाषा कार्यान्वयन की सारगर्भित और प्रभावी प्रस्तुति दी। मुख्य अतिथि सुश्री अंशुली आर्या ने बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में किए जा रहे नवोन्मेषी कार्यों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। सम्मेलन के दूसरे सत्र में अतिथि वक्ता डॉ. ओम निश्चल, वरिष्ठ साहित्यकार एवं भाषाविद् ने बैंकिंग सेवाओं में हिंदी और भारतीय भाषाओं का प्रयोग : चुनौतियां एवं अवसर' विषय पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के अंत में चर्चा सत्र का भी आयोजन किया गया। सम्मेलन में अंचल कार्यालय के सभी कार्यपालक, सभी क्षेत्रों के क्षेत्रीय प्रमुख और उप क्षेत्रीय प्रमुख, अंचल की विभिन्न शाखाओं और दिल्ली स्थित अन्य सभी वर्टिकलों/कार्यालयों के वरिष्ठ कार्यपालक और सभी राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन

दिनांक 16.09.2023 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया। समारोह की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री राकेश शर्मा ने की। समारोह में विशेष तौर पर आमंत्रित कवि बाबा कानपुरी तथा कवि ओंकार त्रिपाठी ने अपनी–अपनी कविताओं का पाठ किया। तत्पश्चात् राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता, 2023 के विजेता क्षेत्रों और हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित पांच प्रतियोगिताओं के 25 विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। हिन्दी को दिल से अपनाने और आंतरिक कामकाज में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के संकल्प के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिमी दिल्ली का राजभाषाई निरीक्षण

श्री के. पी. शर्मा, उप निदेशक (का.), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, उत्तरी दिल्ली–1 का अभिनन्दन करते हुए श्री एस.पी. गोस्वामी, मण्डल प्रमुख, पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिमी दिल्ली मण्डल।

मण्डल कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली, पंजाब नैशनल बैंक के राजभाषाई निरीक्षण के दौरान स्टाफ सदस्यों से राजभाषा अनुपालना संबंधी विमर्श करते हुए श्री के. पी. शर्मा, उप निदेशक (का.), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग।

ऑनलाइन पढ़ाई : फायदे और नुकसान

संजना यादव
प्रबंधक
आईडीबीआई बैंक लि.
पंजाबी बाग

आज के आधुनीक युग मे ऑनलाइन शिक्षा लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनती जा रही हैं।

ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जहाँ शिक्षक–विध्यार्थी इंटरनेट के माध्यम से दुनिया के किसी कोने से एक दूसरे के साथ जुड़ सकते हैं, तकनीकी विकास के साथ–साथ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से स्कूल–कॉलेज बच्चों के घर तक आ गए हैं।

ऑनलाइन शिक्षा को इस तरह से भी समझा जा सकता है जैसे कहीं भी कभी भी बैंकिंग, ऑनलाइन शॉपिंग, वैसे ही कहीं भी कभी भी ऑनलाइन शिक्षा।

लॉकडाउन के समय जहाँ सभी शिक्षा केन्द्र बंद थे, वहीं ऑनलाइन शिक्षा ने अपनी जगह बनायी। आज दुनिया के सभी देशों के बच्चे ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग करके आसानी से पढ़ाई कर पा रहे हैं।

ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जिसके माध्यम से छात्र घर बैठे ही अपने अध्ययन संबंधित सामग्री उपलब्ध कर लेते है, प्रश्न से संबंधित कई रूप से उत्तर ज्ञात करने की सुविधा हो जाती हैं।

ऑनलाइन क्लासेज में बच्चों को स्कूल नहीं जाना पड़ता, जिसके कारण उनका काफी समय बचता है। वहीं, घर से स्कूल दूर होने के चलते बच्चे को थकान हो सकती है। इस कारण कई बच्चे पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। इसके अलावा, स्कूल और ट्यूशन आने जाने में लगने वाले समय के कारण बच्चों को अन्य एक्टिविटी के लिए समय नहीं मिल पाता है। ऑनलाइन क्लास से बच्चे का काफी समय बच सकता है। बच्चों को पढ़ाई और एक्स्ट्रा एक्टिविटी जैसे म्यूजिक, डांस और पेंटिंग आदि के लिए पर्याप्त समय मिल सकता है।

सबसे अहम बात यह है कि तकनीकी विकास से बच्चे पढ़ने के नये–नये तरीके से वाकिफ होते हैं। साथ ही इससे बच्चों के अंदर पढ़ने की ललक बढ़ सकती है। ई–लर्निंग में बच्चे खुद से फैसला कर सकते हैं कि उन्हें कब और कैसे कौन–सा विषय पढ़ना है और कितनी देर तक पढ़ना है। ऑनलाइन पढ़ाई से बच्चों को खुद पर कम दबाव महसूस होता है। बच्चे अपनी पढ़ाई करने के लिए खुद से टाइमटेबल तैयार करते हैं, जिससे उनके बेहतर मानसिक विकास में मदद हो सकती है। यही कारण है कि पेरेंट्स भी बच्चों के लिए ऑनलाइन ट्यूशन को एक बेहतर विकल्प मानते हैं।

तकनीकी तौर से देखे तो, किताबों से ज्यादा बच्चों की दिलचस्पी गैजेट्स में होती है। साथ ही, गैजेट्स के इस्तेमाल से बच्चों की लर्निंग स्किल्स (याद करने की क्षमता) और संज्ञानात्मक कौशल में विकास हो सकता है। इसके अलावा, ई–लर्निंग में बच्चे का पूरा ध्यान स्क्रीन पर रहता है और वह टीचर की बातों को एकांत में बहुत ही ध्यान से समझता है। इससे पढ़ाई में कमजोर बच्चों को भी समझने में आसानी हो सकती है।

सरकारी या किसी भी एक्जाम की तैयारी के लिये अलग– अलग लॉगिन पेज/एप मौजूद हैं, जिसके माध्यम से एक्जाम की तैयारी सफलता पूर्वक करने में सहायता मिलती है। कुछ ऐसे भी लोग हैं जो नौकरी के साथ अपनी आगे की पढ़ाई को ऑनलाइन से जारी रखते हैं।

करोना महामारी जैसे परिस्थिति में भी ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली ही शिक्षा के क्षेत्र में कारगर साबित हुई है।

ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंटरनेट की सुविधा होना आवश्यक है परन्तु देश मे ऐसे कई क्षेत्र अभी भी ऐसे है, जहाँ इंटरनेट की सुविधा उचित रूप से उपलब्ध नहीं है, ऐसे क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षा निष्फल साबित हुआ है।

ऑनलाइन पढ़ाई का एक बड़ा नुकसान यह है कि बच्चे को बाहरी परिवेश में ज्यादा वक्त बिताने का मौका नहीं मिलता है। बच्चे के मानसिक विकास के लिए सामाजिक परस्परता भी बहुत जरूरी है। सहपाठियों का ग्रुप बच्चे को बाहरी परिवेश में घुलने–मिलने में मदद कर सकता है और इससे बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ता है। ई–लर्निंग में कई बार टेक्नोलॉजी परेशानियां भी होता है, जिससे बच्चों के पढ़ने की लय टूटती है। ऑनलाइन स्टडी में बार–बार इंटरनेट कनेक्शन टूटने या गैजेट में तकनीकी खराबी होने से बच्चे पढ़ाई पर अच्छे से ध्यान नहीं दे पाते हैं। इससे बच्चे में चिड़चिड़ापन और गुस्सा घर कर सकता है। कई बार ऑनलाइन क्लास के दौरान तकनीकी खराबी की वजह से बच्चे किसी विषय की अहम जानकारी से वंचित हो सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा वर्तमान समय मे संकट की ''घड़ी में मजबूरी'' में जरूरी तो हो सकता है, छात्र पर शिक्षा का विकल्प बिल्कुल भी नहीं हो गुणवत्तापूर्ण सकता। ऐसे छात्र जिनके पास स्मार्ट फोन, कम्प्युटर, लैपटाप आदि नहीं हैं, वे ऑनलाइन शिक्षा पद्धति का लाभ नहीं ले पाते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा का एक बड़ा नुकसान यह भी है कि बच्चे पढ़ने के बजाय, मोबाइल गेम, फिल्म, सोशल मीडिया, यूट्यूब, चैटिंग आदि गतिविधियां अधिक करते हैं। बच्चों का मन जल्दी ही भटक जाता है। ऐसे में इंटरनेट कई तरह से हानिकारक भी सिद्ध हो रहा है। शिक्षा के बहाने मनोरंजन में अपना समय खराब करना ऑनलाइन शिक्षा के नुकसान से ही जुड़ा है। सोशल मीडिया व यूट्यूब पर बहुत ज्यादा युवा एक्टिव रहता है। हालांकि, सोशल

मीडिया पर एजुकेशन डाटा उपलब्ध है, लेकिन ये सभी सोशल साईट्स कहीं ना कहीं ध्यान भटका ही देती हैं। जिसका असर बच्चों की शिक्षा व व्यवहार पर पड़ता है।

ऑनलाइन क्लास में छात्रों का पढ़ाई पर मानसिक फोकस पारम्परिक क्लास के जितना केन्द्रित नहीं होता, उनका ध्यान इधर उधर भटकता रहता है। ई–क्लास में टीचर भी बच्चों पर ठीक प्रकार से ध्यान नहीं दे पाते हैं, इसके अलावा विद्यार्थियों को एक दूसरे के साथ बैठकर डिस्कशन करने का अवसर भी नहीं मिल पाता है. जिस कारण छात्रों की कई प्रकार की समस्याओं के समाधान अपूर्ण रह जाते है।

कुछ क्षेत्र में प्रेक्टिकल नॉलेज की अवश्यकता होती है उनका ज्ञान लेना ऑनलाइन एजुकेशन में नहीं हो पाता है।

ऑनलाइन शिक्षा के अंतर्गत शिक्षकों को तकनीकी शिक्षण प्रशिक्षण देने का कदम उठाना चाहिए।

वर्तमान समय में ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल इंडिया, ई–बस्ता, पढ़े भारत ऑनलाइन जैसे कई अभियानों की शुरुआत की गई है जो कि इस क्षेत्र में बहुत कारागार साबित हुआ है।

जो बच्चे ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं उनके लिए निःशुल्क ऑनलाइन शिक्षा के लिए नये कदम लेने चाहिए।

''शिक्षा जीवन का वह महत्वपूर्ण अंग है जो हमें बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक अनुशासित,संयत और प्रगतिशील बनाए रखता है।

शिक्षा से मनन शक्ति, चेतना, सद्बुद्धि, विचारशीलता तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है।''

''देश को आगे बढ़ाना है, सबको शिक्षित बनाना है''।

हिन्दी माह

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय दिल्ली द्वारा हिन्दी माह के अवसर पर आयोजित गीत गायन प्रतियोगिता में श्री जे एस साहनी, अंचल प्रमुख, श्री मनोज उपाध्याय, वरिष्ठ प्रबंधक को प्रमाणपत्र एवं पुरस्कार प्रदान करते हुए। साथ में दिखाई दे रहे हैं श्री संजय लाम्बा, मुख्य प्रबंधक– राजभाषा।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय दिल्ली द्वारा हिन्दी माह के अवसर पर आयोजित गीत गायन प्रतियोगिता में श्रीमती मिनाक्षी कुमारी गीत प्रस्तुत करती हुई।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय दिल्ली द्वारा हिन्दी माह के अवसर पर वेतनमान 4 एवं 5 के लिए आयोजित टिप्पण लेखन प्रतियोगिता की विजेता श्रीमती मनीषा कौशिक, सहायक महाप्रबंधक को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए श्री जे एस साहनी, अंचल प्रमुख।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय दिल्ली द्वारा हिन्दी माह के शुभारम्भ अवसर पर श्री जे एस साहनी, अंचल प्रमुख गृह मंत्री का संदेश पढ़ते हुए।

दिल्ली बैंक नराकास की 58वीं बैठक

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 58वीं छमाही बैठक मुख्य अतिथि श्री के. पी. शर्मा, उप निदेशक (का.), तथा श्री राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक (नीति), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की उपस्थिति एवं श्री समीर बाजपेयी, अध्यक्ष– दिल्ली बैंक नराकास मुख्य महाप्रबंधक (दिल्ली अंचल), पंजाब नैशनल बैंक की अध्यक्षता में दिनांक 19 जुलाई, 2023 को पंजाब नैशनल बैंक के द्वारका स्थित प्रधान कार्यालय में सम्पन्न हुई।

बैठक में पंजाब नैशनल बैंक के मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री सुमन्त महान्ती तथा महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री देवार्चन साहू विशेष रूप से उपस्थित थे। बैठक में दिल्ली बैंक नराकास के 47 सदस्य कार्यालयों के स्थानीय कार्यालयाध्यक्षों की गौरवमयी उपस्थिति के साथ– साथ दिल्ली बैंक नराकास के राजभाषा प्रभारियों द्वारा भी सहभागिता की गई।

मंचासीन बाएं से दाएं श्री देवार्चन साहू, महाप्रबंधक, श्री सुमन्त महान्ती, मुख्य महाप्रबंधक, श्री समीर बाजपेयी, अध्यक्ष, श्री के पी शर्मा, उप निदेशक (का.), श्री राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक (नीति), श्रीमती मनीषा शर्मा, सदस्य सचिव

बैठक के आरंभ में श्रीमती मनीषा शर्मा, सदस्य– सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक ने गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के मुख्य अतिथियों, अध्यक्ष दिल्ली (बैंक) नराकास, पंजाब नैशनल बैंक के मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा), महाप्रबंधक (राजभाषा) महोदय, गणमान्य अतिथियों एवं बैठक में उपस्थित समस्त अधिकारियों का स्वागत करते हुए राजभाषा के प्रति उनकी गंभीरता और सजगता के लिए आभार व्यक्त किया। अपने संबोधन में उन्होंने उपस्थित सदस्य कार्यालयों के अध्यक्षों एवं उच्चाधिकारियों से राजभाषा की सरिता का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर लाने का आग्रह किया। उन्होंने मुख्य अतिथि, श्री के. पी. शर्मा, उप निदेशक (का.) तथा उप निदेशक (नीति), श्री राजेश श्रीवास्तव का दिल्ली बैंक नराकास और पंजाब नैशनल बैंक की ओर से आभार व्यक्त करते हुए, भविष्य में भी उनके सहयोग और मार्गदर्शन की अपेक्षा व्यक्त की।

मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा), पंजाब नैशनल बैंक, श्री सुमंत महान्ती ने मुख्य अतिथियों और दिल्ली बैंक नराकास के उपस्थित सभी

कार्यालय प्रमुखों और राजभाषा से जुड़े अन्य अधिकारियों तथा राजभाषा अधिकारियों का पंजाब नैशनल बैंक के कॉरपोरेट ऑफिस में नराकास की बैठक के आयोजन के अवसर पर

सेवानिवृत्ति : श्री हरिशंकर राय, राजभाषा अधिकारी, यूनाईटेड इंडिया इंश्योरेंस क. लि., क्षे.का.–2

पधारने और इसे सफल बनाने के लिए अभिनन्दन किया।

श्री समीर बाजपेयी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में मुख्य अतिथियों तथा सभी उपस्थितों का अभिनन्दन करते हुए कहा कि पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय के इस मल्टीपर्पज हॉल में दिल्ली बैंक नराकास की छमाही बैठक के आयोजन को एक बदलाव की संज्ञा देते हुए विश्वास व्यक्त किया कि यह बदलाव हमारी नराकास के नवाचारों में और विविधता और प्रगति लाएगा। उन्होंने कहा कि गत वर्ष प्राप्त राजभाषा के प्रथम पुरस्कार की उपलब्धि के बनाए रखने के लिए हमें हमारी कड़ी मेहनत में किसी प्रकार शिथिलता नहीं आने देनी है। अध्यक्ष महोदय ने मुख्य अतिथियों को अवगत कराया कि दिल्ली बैंक नराकास की गतिविधियां वर्षभर निर्बाध रूप से चलती रहती हैं, न केवल छमाही बैठकों का समयबद्ध आयोजन किया जाता है अपितु संगोष्ठियां, सेमीनार, कार्यशालाएं और वर्ष पर्यन्त प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी के प्रचार–प्रसार में कार्यालय प्रमुखों की भूमिका अग्रणी है। हमारे समक्ष प्रस्तुत की जाने वाली फाइलों पर लिखी जाने वाली टिप्पणी को अगर हम हिंदी में लिखते हैं तो पूरे कार्यालय का वातावरण हिन्दीमय हो जाता है और यही हमारा ध्येय भी है। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि हम सब मिलकर न केवल राजभाषा कार्यान्वयन के सभी लक्ष्य प्राप्त करेंगे अपितु उत्कृष्टता के नए आयाम स्थापित करेंगे।

मुख्य अतिथि, श्री राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक (नीति),

सेवानिवृत्ति : श्री अजय महरोत्रा, सहायक महाप्रबंधक, आई. एफ. सी. आई. लि.

राजभाषा विभाग, भारत सरकार, गृह मंत्रालय ने अपने सम्बोधन में कहा कि देश की सर्वश्रेष्ठ नराकासों में सुस्थापित दिल्ली बैंक नराकास की छमाही बैठक में व्यक्तिगत रूप से आकर इसकी सुव्यवस्थित एवं पारदर्शी कार्यप्रणाली और क्रियाकलापों को करीब से जानने का अवसर मिला है। उन्होंने सूरत सम्मलेन में माननीय गृह मंत्री द्वारा लोकार्पित किए गए अनुवाद टूल कंठस्थ 2.0 तथा हिन्दी शब्द सिन्धु की संकल्पना और मूर्त रूप लेने की

सेवानिवृत्ति : श्री अशोक तनेजा, मुख्य प्रबंधक,
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय

यात्रा का उल्लेख करते हुए इसे सभी कार्यालयों द्वारा प्रयोग में लाए जाने का आग्रह किया। उन्होंने बैंकों तथा पंजाब नैशनल बैंक द्वारा कंठस्थ 2.0 के प्रचार–प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयासों को सराहा।

मुख्य अतिथि, श्री के. पी. शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, भारत सरकार, गृह मंत्रालय ने अपने सम्बोधन में कहा कि हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए 3 'प्र' अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। प्रशिक्षण, प्रयोग और प्रोत्साहन। उन्होंने प्रशिक्षण, प्रयोग और प्रोत्साहन के सूत्र को यथार्थ करने में नराकास की महती भूमिका पर प्रकाश डाला और सराहना करते हुए कहा कि दिल्ली बैंक नराकास और इसके सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों से परिचित होने का अवसर मिलता रहता है। उन्होंने कहा कि तकनीक के समावेश से हिन्दी 'कंठ से कलम तक और अब कलम से कम्प्यूटर तक' के सफ़र के लिए गतिशील है। दिल्ली बैंक नराकास के अध्यक्ष महोदय का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि उनके समक्ष प्रस्तुत की जाने वाली सभी फाइलों पर उनके द्वारा केवल और केवल हिन्दी का ही प्रयोग किया जाता है। उन्होंने दिल्ली बैंक द्वारा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में किए जा रहे अभिनव प्रयासों की सराहना की।

इस अवसर पर मंचासीन अधिकारियों ने दिल्ली बैंक नराकास की गृह पत्रिका बैंक

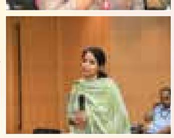

भारती के 29वें अंक का विमोचन किया।

दिल्ली बैंक नराकास के समस्त सदस्य कार्यालयों के लिए कंठस्थ 2.0 पर आयोजित संगोष्ठी में श्री राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक (नीति), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इस अनुवाद टूल पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी।

''डिजिटल युग में हिन्दी' विषय पर श्री केवल कृष्ण, (परामर्शदाता– तकनीकी), राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा भारत में कम्प्यूटर के प्रारम्भिक काल से लेकर वर्तमान तक की यात्रा में हिन्दी की विकास यात्रा का विस्तृत उल्लेख किया गया। उन्होंने यूनिकोड के प्रचलन के बाद से लेकर हिन्दी के प्रयोग में हुई वृद्धि का भी विस्तृत विश्लेषण किया।

तत्पश्चात सदस्य सचिव, दिल्ली बैंक नराकास ने मंचासीन गृह मंत्रालय के अधिकारियों की उपस्थिति में बैठक की कार्रवाई आगे बढ़ाते हुए सदस्य कार्यालयों की 31 मार्च, 2023 की छमाही प्रगति रिपोर्ट के आधार पर बैठक की कार्यसूची में दिए गए विषयों पर मदवार विस्तृत चर्चा की।

बैठक का समापन धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान से हुआ।

सेवानिवृत्ति : सुश्री नीरजा शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक, यूको बैंक

संगोष्ठी : कंठस्थ 2.0

“5 ट्रिलियन इकॉनमी में बैंकों की भूमिका”

सिद्धार्थ गुप्ता
प्रबंधक
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली

5 खरब डालर अर्थव्यवस्था की संकल्पना

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण के दौरान देश को साल 2024 तक 'फाइव ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी' यानी 5 लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की बात कही।

हालांकि बजट के पहले भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने

अपने कई कार्यक्रमों के दौरान इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य की बात कह चुके थे।

- बजट भाषण के दौरान वित्त मंत्री का तर्क था कि भारत ने आज़ादी के बाद आर्थिक क्षेत्र में तीव्र वृद्धि नहीं की। इसका नतीजा यह रहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचने में 55 सालों का समय लग गया, जबकि इसी दौरान चीन की अर्थव्यवस्था बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ी।
- ऐसे में, आर्थिक क्षमता सीमित होने के चलते अक्सर देश के तमाम क्षेत्रों मसलन रेलवे, सामाजिक क्षेत्र, रक्षा और इंफ्रास्ट्रक्चर में ज़रूरी संसाधन उपलब्ध नहीं हो पाए।
- सरकार का मानना है कि अर्थव्यवस्था के आकार में वृद्धि करके संसाधनों की कमी को दूर किया जा सकता है।

इसके लिए सरकार ने कौन से कदम उठाए हैं?

- देश 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था कैसे बन पाएगा, इस बाबत सरकार ने आर्थिक सर्वेक्षण और बजट में अपनी तमाम नीतियों को देश के सामने रखा है।
- सरकार ने इंफ्रास्ट्रक्चर पर विशेष ध्यान देते हुए अकेले प्रधानमंत्री आवास योजना में ही 1.95 करोड़ आवासों के निर्माण का लक्ष्य तय किया।
- 'स्टडी इन इंडिया' पहल के तहत निजी उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये कई एलान किए गए हैं। इसके अलावा, विश्वस्तरीय संस्थानों के निर्माण और 'खेलो भारत' योजना के तहत खेल विश्वविद्यालयों की भी स्थापना की जा रही है।
- सरकार ने एक संप्रभु ऋण बाज़ार की स्थापना का भी ऐलान किया है। इसके तहत सरकार अंतरराष्ट्रीय बाजार से कर्ज लेकर देश में निजी निवेश के लिए धन मुहैया करवाएगी। इस प्रकार ब्याज दर में कमी लाने में मदद मिलेगी।
- इसके अलावा निजी पूंजी निर्माण में मदद करने के लिहाज से सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में 70,000 करोड़ रुपए के नए पूंजी निवेश की योजना बनाई।
- एमएसएमई पर विशेष ध्यान देने के साथ–साथ सरकार ने श्रम सुधार की दिशा में भी कई कदम उठाए हैं।
- सरकार ने रेलवे के आधुनिकीकरण में बढ़ोत्तरी के लिये सार्वजनिक निजी भागीदारी यानी PPP का प्रस्ताव किया गया है।

इस राह में चुनौतियां क्या क्या हैं?

सरकार के इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य के संबंध में कुछ अर्थशास्त्रियों का मानना है कि 5 ट्रिलियन डॉलर के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये भारत को GDP के लगभग 8 फीसद की वृद्धि दर की जरूरत होगी। मौजूदा वक्त में कई अर्थशास्त्री भारतीय अर्थव्यवस्था की गति धीमी होने की बात कर रहे हैं, साथ ही ऐसे हालत में उच्च आर्थिक वृद्धि दर को प्राप्त करने को एक कठिन चुनौती भी मानते हैं।

1. वैश्विक हालात
2. कड़े आर्थिक सुधार
3. कड़े नीतिगत मानक
4. धीमा बैंकिंग सुधार
5. कृषि और सेवा क्षेत्रों में सुस्ती

5 ट्रिलियन इकॉनमी में बैंकों की भूमिका

भारत की विशाल अर्थव्यवस्था की वृद्धि के लिए एक कुशल बैंकिंग क्षेत्र की आवश्यकताः आर्थिक समीक्षा

भारतीय बैंकिंग में बाजार हिस्सेदारी का करीब 70 प्रतिशत सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) के पास है। अतः भारतीय अर्थव्यवस्था को सहयोग करने और इसके आर्थिक विकास को बढ़ावा देने का दायित्व इन बैंकों का है। वर्ष 2019–20 की आर्थिक समीक्षा में कहा गया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था के आकार की तुलना में भारतीय बैंकों की संख्या काफी कम है। भारत को 5 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर की अर्थव्यवस्था

बनने के लक्ष्य की दिशा में बढ़ने के लिए, पीएसबी–हमारी बैंकिंग व्यवस्था में प्रमुख बैंकों– को दक्ष बनाना जरूरी है। अर्थव्यवस्था को इस बात की आवश्यकता है कि पीएसबी अपनी पूरी क्षमता के साथ कार्य करे और ऋण के बजाए आर्थिक वृद्धि में सहायक बने जिसका विकास और कल्याण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

समीक्षा में कहा गया है कि यदि भारतीय बैंक भी भारतीय अर्थव्यवस्था के आकार के अनुपात में बड़े हों तो वर्तमान में केवल सार्वजनिक क्षेत्र के सबसे बड़े बैंक– भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के बजाय विश्व के 100 शीर्ष बैंकों में कम से कम 6 बैंक हमारे होने चाहिए– जो विश्व में 55वां सबसे बड़ा बैंक है।

समीक्षा में कहा गया है कि बैंकों का राष्ट्रीयकरण होने के बावजूद 2014 तक गरीबों का एक बड़ा हिस्सा बैंकों से वंचित था। बड़े हिस्से में, वित्तीय समावेश अगस्त, 2014 में प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई) के माध्यम से हुआ था, जिसके जरिए पहले सप्ताह में 18 मिलियन से अधिक बैंक खाते खोले गए थे जो गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड्स रिकॉर्ड्स में एक रिकॉर्ड है।

डिजिटल लेनदेन और डीबीटी

आर्थिक समीक्षा में कहा गया है कि डिजिटल लेनदेन में वृद्धि महत्वपूर्ण रही है। पिछले 5 वर्षों में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण का इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है, जिससे सभी भौगोलिक क्षेत्रों (ग्रामीण अर्ध–शहरी, शहरी और महानगरीय) में बैंकिंग प्रणाली में क्रेडिट और डिपोजिट दोनों को लाने में मदद मिली है। सभी भौगोलिक क्षेत्रों में उच्च स्तर का लचीलापन सरकार द्वारा डीबीटी के अधिक इस्तेमाल से मिलने वाले लाभ के लिए भारतीय बैंकों के लिए मौजूद अवसरों को दर्शाता है। नए कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप औपचारिक अर्थव्यवस्था में व्यक्तियों और व्यवसाय में वृद्धि हुई है। सबसे महत्वपूर्ण है कि समावेशन आधुनिक डिजिटल बुनियादी ढांचे से समर्थित है जो कंपनियों और व्यक्तियों के आर्थिक जीवन के सभी पहलुओं पर उच्च गुणवत्ता वाले ढांचागत आंकड़ों को उत्पन्न करता है और उनका भंडारण करता है। ऐसे आंकड़े 21वीं शताब्दी में आर्थिक वृद्धि के लिए सोने की खान है। ये विशेष रूप से उन कंपनियों और व्यक्तियों के लिए असीमित और नई संभावनाओं की पेशकश है जिन्हें वित्तीय व्यवस्था से परंपरागत तरीके से बाहर कर दिया गया है।

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की दक्षता बढ़ाना:कामयाबी की राह पर

आर्थिक समीक्षा में कहा गया है कि करदाताओं की लगभग 4,30,000 करोड़ रुपये की धनराशि सरकारी पूंजी के रूप में पीएसबी में निवेश की गई है। वर्ष 2019 में पीएसबी में निवेश किए गए करदाताओं के प्रत्येक रूपये में से औसतन 23 पैसे की हानि हुई।

भारत के विकास की संभावनाओं के प्रमुख चालकों के साथ– (क) बेहद अनुकूल जनसांख्यिकी– उस आयु के 35 प्रतिशत के साथ (ख) एक आधुनिक और आधुनिक बनाने वाले डिजिटल बुनियादी ढांचे जिसमें ''जेएएम'' ट्रिनिटी यानी पीएमजेडीवाई बैंक खाता कार्यक्रम, आधार विशिष्ट पहचान कार्यक्रम, और मोबाइल फोन बुनियादी ढांचा शामिल है; तथा (ग) समान अप्रत्यक्ष कराधान प्रणाली (जीएसटी); भारत के विकास का मार्ग इस बात पर निर्भर करता है कि विकास के लिए इन तंत्रों को कितनी तेजी से और उत्पादकता के साथ अच्छी तरह विकसित वित्तीय व्यवस्था का इस्तेमाल करते हुए लगाया जाता है। विकास के ये अवसर पीएसबी को इस स्थिति तक पहुंचाते हैं कि वह कृत्रिम असूचना और मशीन लर्निंग का इस्तेमाल करते हुए फिन टेक जैसी क्रेडिट अनेलेटिक्स का इस्तेमाल करें।

पीएसबी के लिए फिनटेक केन्द्र का गठनः सार्वजनिक क्षेत्र बैंकिंग नेटवर्क (पीएसबीएन)

समीक्षा में प्रस्ताव किया गया है कि सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों को फिनटेक को गले लगाने की आवश्यकता है, जो वैश्विक वित्तीय परिदृश्य में क्रांति ला रहा है। फिनटेक ने बैंकों द्वारा परिष्कृत की जाने वाली सूचना का तरीका तेजी से बदल दिया है। आर्थिक समीक्षा में कहा गया है कि भारतीय बैंकों विशेषकर पीएसबी के एनपीए के एक बड़े हिस्से को रोका जा सकता था। यदि कॉरपोरेट कर्ज में आंकड़े, विश्लेषकों और कर्ज विश्लेषण मंच कोलेटरल की दोहरे संकल्प को रोकने के अलावा चेतावनी संकेत प्रदान कर सकता था।

समीक्षा में उधार लेने वालों की व्यापक स्क्रीनिंग और निगरानी करने के उद्देश्य से प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल के लिए पीएसबीएन (पीएसबी नेटवर्क) कहलाई जाने वाली जीएसटीएन जैसी कंपनी की स्थापना का प्रस्ताव किया गया। सभी पीएसबी से आंकड़ों का इस्तेमाल करने के अलावा, जो महत्वपूर्ण जानकारी का लाभ प्रदान करेंगे, पीएसबीएन कॉरपोरेट के लिए एआई–एमएल रेटिंग मॉडल विकसित करने के लिए अन्य सरकारी स्रोतों और सेवाप्रदाताओं का इस्तेमाल करेगी। ऋण के बारे में बेहतर फैसला करने से एनपीए का बोझ कम होने के साथ ही धोखाधड़ी रोकने में मदद मिलेगी। ऋण की अद्योपांत प्रक्रिया को स्वचालित करने में मदद करके प्रत्येक पीएसबी की उच्च संचालन की लागत को कम किया जा सकता है। पीएसबी तेजी से फैसले करेगा, ऋण के आवेदनों को तेजी से प्रोसेस कर सकेगा और टर्न अराउंड टाइम को कम कर सकेगा।

समीक्षा में प्रस्ताव किया गया है कि कर्मचारियों को बैंकों में स्वामी बनने में सक्षम बनाने और जोखिम उठाने तथा नवीकरण को अपनाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए सरकारी पण के एक हिस्से को कर्मचारी स्टॉक विकल्प योजना (ईएसओपी) के माध्यम से संगठन के सभी स्तरों पर अच्छा निष्पादन करने वाले कर्मचारियों को अंतरित किया जा सकता है। कर्मचारियों की पीएसबी में आंशिक सहभागिता से एजेंसी समस्याओं में कमी आएगी। लाभों में कर्मचारी से मालिक वाली मनोदशा में परिवर्तन करना शामिल है। कर्मचारी स्टॉक स्वामित्व योजना के माध्यम से पीएसबी के नए मालिकों के किसी एक ब्लॉक जो कर्मचारी के निष्पादन पर निर्भर हैं, का गठन कर सकते हैं। संगठन के सभी स्तरों पर प्रेरित, सक्षम कर्मचारियों का स्वामित्व उन कर्मचारियों को मूल्य संवर्धन के लिए वित्तीय पुरस्कार देगा। यह प्रोत्साहन पीएसबी के लाभ से जुड़ा होगा तथा कर्मचारियों के लिए उपक्रम स्वामित्व की मनोदशा सृजित करेगा।

निष्कर्ष

बहरहाल, मौजूदा हालातों को देखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि अर्थव्यवस्था के लिए चुनौतियां लगातार बढ़ रही हैं। लेकिन फिर भी 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का सपना कोई असंभव बात नहीं है। लेकिन आठ फ़ीसदी की वृद्धि दर के लिए सरकार को बहुआयामी मोर्चे पर काम करना होगा एवं बैंकों को भी सराहनीय भूमिका निभानी होगी।

दिल्ली बैंक नराकास द्वारा कार्यशाला का आयोजन

दिल्ली बैंक नराकास द्वारा सदस्य कार्यालयों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों के लिए छमाही रिपोर्टिंग तथा कंठस्थ 2.0 पर आधारित एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 7.11.2023 को नैशनल इंश्योरेस क.लि., क्षेत्रीय कार्यालय–4 के परिसर में किया गया जिसकी अध्यक्षता उप महाप्रबंधक, श्री रवि शंकर चोपड़ा ने की। क्षेत्रीय प्रबंधक, राजभाषा, श्रीमती अनीता पोद्दार विशेष रूप से उपस्थित थी। दिल्ली बैंक नराकस सचिवालय से श्री राजीव शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा ने छमाही रिपोर्टिंग तथा श्री कमलेश कुमार मिश्र, वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा ने कंठस्थ 2.0 पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। उक्त कार्यक्रम में कुल 29 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

नारी

कौन हो तुम कौन हो, कौन हो तुम कौन हो,
खुद को पहचानो कौन हो तुम!

अपने नन्हे पाँव से हन–हन करती
घर महकाती, चहचहाती
चिड़िया हो तुम.....!!

पापा की प्यारी, भाई के दिल की धड़कन
रखे जो सबका ध्यान वो
लाड़ली हो तुम.....!!

कौन हो तुम कौन हो, कौन हो तुम कौन हो,
खुद को पहचानो कौन हो तुम!

आँचल मे संवारें लाखों सपने
आशा की किरणों में खिलखिलाती
धूप हो तुम.....!!

मां की दुलारी सबकी प्यारी घर की
लज्जा को सहेजे, खुशियों का
मेला हो तुम......!!

कौन हो तुम कौन हो, कौन हो तुम कौन हो,
खुद को पहचानो कौन हो तुम!

नित–नित करती जो काम हजार
न रूकना न डरना, सदा बहती रहने
वाली हवा हो तुम.....!!

कौन हो तुम कौन हो, कौन हो तुम कौन हो,
खुद को पहचानो कौन हो तुम!

सुख का करे सम्मान
दुखों का डटकर करे जो मुकाबला, वो
चट्टान हो तुम.....!!

तुम एक माँ, एक बेटी, एक बहिन
और न जाने कितने रिश्तों को सहेजे
एक "नारी" हो तुम.....!!

कौन हो तुम कौन हो, कौन हो तुम कौन हो,
खुद को पहचानो कौन हो तुम!

मोनिका रानी
यूनियन बैंक आफ इंडिया,
राजेंद्र नगर शाखा

रोशनी की भोर

समझते हैं खेल
सुनी जाती जो बात
अनुचित होता वैचारिक गतिरोध
गठबंधन
मोर्चा

बेसबब होते
बेवजह होती
दुराग्रही सुगबुगाहट
विग्रही स्वप्न का शोर।

पहले भी बन चुके हैं ऐसे हालात
नुक्कड़ की दुकानों से
उठता था आक्रोश का धुआँ
असंतोष की लपटें
खेतों में खिन्न मन
ठगा सा युवा
पीड़ित मन की करुण निनाद
रहबरों के द्वार खटखटाती
अवसाद की गुहार।

बदलनी होगी सोच
स्वप्न की दलाली में
हकीकत अपना हिस्सा नहीं खोयेगी
झूठ के पैरोकार के सम्मुख
घुटने नहीं टेकेगी तदबीर
रुग्ण सोच के पन्नों पर
मेहनतकश नहीं करेगा हस्ताक्षर
नवल आशा
तरुण आकांक्षा
भ्रम के आकाश में विचरण करने से मना कर देगी।

उम्मीदों की घटा घनघोर
समझती है खेल
असहज तीरगी को बेधेगी
रोशनी की भोर...

अतुल कुमार
प्रबंधक
जनकपुरी शाखा
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया,
क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली

संस्मरण

एक अविस्मरणीय घटना – गुजरात भूकंप

प्रकाश कुमार ठक्कुर
वरिष्ठ निजी सचिव
सिडबी, नई दिल्ली

हमारे जीवन में कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं, जो स्मृति पटल पर ऐसी अंकित हो जाती हैं कि जीवन भर सदैव याद रहती हैं एवं उनको अविस्मरणीय घटनाएं भी कहा जाता है। इन घटनाओं का प्रभाव मन पर इस प्रकार पड़ता है कि इन्हें भूल पाना भी कठिन होता है एवं हमारे मन–मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ जाती हैं। फर्क इतना ही है कि अच्छे दिनों को हम बार–बार याद करते हैं तथा बुरे दिनों को हम भुला देना चाहते हैं।

ऐसी ही एक अविस्मरणीय घटना मेरे जीवन में उस समय हुई, जब मैं गुजरात राज्य के अहमदाबाद शहर में अपने रिश्तेदार के घर जनवरी 25, 2001 को छुट्टियां बिताने के लिए गया था। उसके अगले ही दिन यानि जनवरी 26, 2001 को जब हमारा देश 52 वाँ गणतंत्र दिवस बड़े ही धूमधाम से मना रहा था, उसी दौरान प्रातः 9.00 बजे के आसपास गुजरात के कच्छ जिले के भुज शहर में भीषण भूकंप आया था, जिसमें करीब 20 हजार लोगों की जान चली गई थी और हज़ारों की संख्या में लोग घायल हुए थे जो इस तबाही का मंजर देखकर सहम गए। भूकंप के झटके अहमदाबाद और आसपास के अन्य शहरों में भी महसूस किए गए थे, लेकिन भुज शहर में इसका व्यापक असर पड़ा। अधिकतर इलाके भूकंप की इस त्रासदी से तहस–नहस हो गए थे। लोग इस भीषण त्रासदी से भुज शहर के अधिकतर इलाकों में जो भयावह तस्वीर सामने आई उनसे उबरने में बहुत समय लग गया।

कच्छ जिले के भुज शहर में भूकंप आने से एक दिन पूर्व रात्रि तक जनजीवन सामान्य रूप से चल रहा था। किसी ने सोने से पूर्व सोचा तक नहीं था, कि अगली सुबह कोई विनाशकारी दृश्य उनके आंखों के सामने होगा। आवासीय इमारतों के गिरने से जो भयावह भयंकर विनाश हुआ, उससे सभी जगह हाहाकार मच गया और लोग अपनी जान बचाने के लिए मैदानों की ओर भागने लगे थे। इस भयावह हादसे में बच्चे, बूढ़े, युवा, महिला एवं पुरुष हजारों की संख्या में मारे गए थे।

भुज शहर में भूकंप के दौरान, अहमदाबाद में मुझे एवं मेरे रिश्तेदारों को कोई हानि नहीं उठानी पड़ी तथा हम पूर्णतः सुरक्षित थे, किंतु भुज एवं उसके आसपास का दृश्य काफी हृदय विदारक था जिसको समाचार–पत्रों में पढ़कर एवं टी.वी. चैनलों पर देखकर हम सभी एकदम सहम गए थे। भूकंप ने जनहानि के साथ–साथ भारी संख्या में पशु एवं पक्षी भी मरे थे तथा जान–माल का भारी नुकसान हआ था। सड़कें, बिजली, पानी आदि सभी सुविधाएं बरबस तहस–नहस हो गई थीं, जिसके परिणाम स्वरूप जन–जीवन ठप पड़ गया था। यातायात एवं व्यावसायिक गतिविधियां भी ठप्प हो गईं थीं।

इस विपदा की स्थिति में आपदा प्रबंधन टीम ने कच्छ जिले के भुज शहर में प्रभावित लोगों की यदि भरपूर सहायता ना की होती, तो ना जाने उनका क्या होता? आपदा प्रबंधन टीम ने हजारों लोगों की जान भी बचाई। बहुत से राज्यों ने इस आपाद विपदा की स्थिति में गुजरात राज्य को मदद एवं सहायता सामग्री भी प्रदान की थी।

भले ही इस भूकंप की त्रासदी को समाप्त हुए 22 वर्ष ये अधिक का समय व्यतीत हो चुका है, परन्तु अभी भी ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वह कल की घटना हो। सहसा जीवन और मृत्यु के पारस्परिक संघर्ष का चित्र और उस भयावह तबाही का मंजर मेरी आँखों के सामने आने लगता है। वस्तुतः यह घटना मुझे सदैव स्मरण रहेगी।

जिन्दगी में अगर सफल होना है तो सिर्फ सोचो मत बल्कि जो सोचा है वो करके भी दिखाओ...

नई सोच- नई शुरूआत

शिल्पा बंसल
सहायक प्रबंधक
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक,
पीतमपुरा शाखा

मैं और राहुल एक ही कंपनी में काम करते हैं। एक दिन राहुल ने मुझे शादी के लिए प्रपोज किया और मैंने हां कर दी।

घर में हो या दफ्तर में, हर तरह की मुश्किल में राहुल हमेशा मेरा ना केवल पति बनकर बल्कि दोस्त बनकर भी साथ देते हैं।

आज हमारी शादी की दूसरी वर्षगांठ थी। सुबह–सुबह राहुल बोले– "आज तुम अपनी वो गुलाबी रंग की साड़ी पहन लो, वह तुम पर खूब जंचती है"। मैंने राहुल के तोहफे में दिए झुमके भी डाल लिए और फिर हम दोनों तैयार होकर अपनी कार में बैठ दफ्तर के लिए निकल पड़े। विश्राम चौक पर लाल बत्ती होते ही 02–03 बच्चों ने हमारी कार के शीशे को ज़ोर–ज़ोर से पीटना शुरू कर दिया, मैं पैसे निकालने के लिए पर्स की तरफ हाथ बढ़ाने लगी तो चिपके बालों वाले एक लड़के ने मुस्कराते हुए मेरे टिफिन की ओर इशारा किया। मैंने अपना पुलाव से भरा टिफिन उसकी ओर बढ़ाया तो उसने तुरंत से लपक लिया।

बच्चे एक दम ऐसे खुश हो गए मानो उनको क्या मिल गया हो और वही साइड में बैठकर पुलाव खाने लगे। उनकी हंसी की खनखनाहट और आँखों की चमक देखकर मैं सोचने लगी वो इतने थोड़े में इतना खुश कैसे हो गए। मैं राहुल से बोली–"जिस उम्र में बच्चों के हाथों में किताबें होनी चाहिए, उन हाथों को या तो भीख मांगने के लिए काट दिया जाता है,या कटोरा थमा दिया जाता है।। काश मैं इनके लिए थोड़ा भी कुछ कर सकती.... खैर.....।' और लंबी सांस छोड़ते हुए अफसोस से पूर्ण चेहरा बनाकर खिड़की के बाहर देखने लगी। हम टिफिन वहीं छोड़ कर आ गए।

ऐसा मैं रोज़ देखती थी पर उस दिन ना जाने क्यों दिन भर एक अजीब–सी उलझन मन में चलती रही। शादी की सालगिरह थी तो मैनेजर ने हम दोनों को आधे दिन की छुट्टी दे दी थी। दोपहर को राहुल और मैं दफ्तर से निकले और एक अच्छे से रेस्टोरेंट में खाना खाकर घर आ गए। घर आकर राहुल ने वही कुर्ता पजामा पहना जो मैंने उनको सुबह तोहफे में दिया था और कुर्ता दिखाने के लिए मेरे सामने आकर खड़े हो गए। हमारी शादी को भले ही अभी बहुत वक्त नहीं हुआ था पर राहुल मेरे बिना बोले ही मेरे मन की बात अच्छी तरह से समझ जाते थे। उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखा और बोले–" मेघा मैं जानता हूँ, तुम सुबह से क्या सोच रही हो और तुम यह सब कुछ कर सकती हो जो तुम चाहती हो।"।

मैं बोली– "राहुल, इतना आसान नहीं है। बहुत टाइम देना पड़ेगा और अपने पास से कुछ पैसा भी लगाना पड़ेगा। चलो ये सब भी हम मैनेज कर लेंगे, पर कौन अपने बच्चों को पढ़ने मेरे पास भेजेगा ? इन लोगों का घर भीख में मिले कागज़ के नोटों से चलता है, कलम कागज़ से नहीं और पेट खाने से भरता है , मीठी उम्मीद भरी बातों या झूठे वादों से नही"।

"मेघा...., ओह हो–अरे शुरुआत तो करो। हम दोनों मिलकर कुछ कर लेंगें। " राहुल मुस्कुराते हुए बोले।

राहुल ने मुझे मेरी सोच को सच में बदलने की पहली सीढ़ी दिखा दी थी।

रविवार और शनिवार हम दोनों की छुट्टी होती थी। शनिवार को हम वहीं पास की बस्ती में गए।

उस बस्ती में बच्चे गंदे–फटे कपडों में और बिना चप्पलों के यूं ही घूम रहे थे। कहीं नल से पानी भरने के लिए हाथ में डब्बा–बाल्टी लिए औरतों की लाईनें थी। तो कहीं नशे में धुत ताश की बाजियाँ लगाते आदमी नजर आ रहे थे।

एक औरत अपने घर के दरवाज़े पर खड़ी हमें काफी देर से देख रही थी। राहुल ने मुझे इशारा किया तो मैंने उस औरत से पूछा–" क्या तुम अपने बच्चों को पढ़ाना चाहती हो,मैं पढ़ाउँगी और पैसे भी नहीं लूंगी।"

बहुत ना–नुकूर करने के बाद वो औरत तैयार हो गई।

इस तरह दो–तीन हफ्ते तक ,हर रोज़ ऑफिस के बाद बस्ती में हम दोनों हर परिवार से मिले। उनको पढ़ाई की अहमीयत समझाई, कुछ लोग अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए तैयार हो गए और फिर हर शनिवार– रविवार मैं बच्चों को पढ़ाने के लिए बस्ती में जाने लगी। पढ़ाई के लिए आवश्यक सामान मैं बच्चों को खुद देती थी।

हमने कई एनजीओ से भी संपर्क किया। हमारे दफ्तर के स्टाफ ने भी आर्थिक मदद की। धीरे–धीरे बच्चों के साथ–साथ कुछ के तो माता–पिता भी आने लगे थे और मुझे 'टीचर जी' बुलाने लगे थे। यह नई शुरूआत राहुल के बिना संभव नहीं थी।

पिंक सिटी की सैर

प्रेम, त्याग, श्रृंगार, शौर्य और राजसी शान की धरती है राजस्थान। संस्कृति, इतिहास और प्राकृतिक सुंदरता में समृद्ध राजस्थान रंग उल्लास और मैत्रीपूर्ण व्यवहार से ओतप्रोत है। मीलों तक फैली सुनहरी रेत से लेकर अद्भुत किले, कलात्मक महल और हवेलियां जो अपनी अनूठी वास्तुशिल्प की गाथा बयान कर रही है।

डॉ गौतम कुमार मीणा
उप प्रबंधक
दि ओरिएण्टल इंश्यो.क.लि.
क्षे. का. 2 दिल्ली

अरावली श्रृंखलाओं के साथ आकर्षक बाग–बगीचे और झीलें दर्शकों को अभिभूत करते हैं तो समृद्ध कला व हस्तशिल्प, विविधता लिए बाजार व रंगबिरंगी पोशाकों से सज्जित लोग अभी तक भी मध्ययुगीन विशिष्टता के साथ जीवंत हैं। राजस्थान अपने उल्लासपूर्ण लोक नृत्यों व संगीत, गाथाओं व भव्य उत्सवों, तीज–त्योहारों के कारण भी प्रसिद्द और जीवंत है।

आइये, आपको राजस्थान की राजधानी जयपुर, जिसे दुनिया भर में पिंक सिटी (गुलाबी नगरी) के नाम से जानते है, की सैर कीजिए मेरे साथ....

ऐतिहासिक दृष्टि से जयपुर :– जयपुर से पूर्व, यहाँ के पूर्व में खोगंग राज्य था। 1000 ईस्वी तक यहाँ मीणा शासकों ने राज किया है। खोगंग सबसे प्रसिद्ध और समृद्ध नगर था जिसकी पुष्टि आज भी यहाँ के महल और बावड़ियां करते हैं। खोगंग के अधीन 11 रियासतें झोटवाड़ा, रामगढ़, आमेर, गैटोर, सोडाला, बैराठ आदि थी जिनका शासन यहीं से संचालित होता था। अंतिम महाराज आलण सिंह चॉंदा था जो बहुत ही नेक एवं अच्छा राजा था। उसने एक असहाय एवं बेघर राजपूत माता और उसके पुत्र को शरण मांगने पर अपना लिया। कालान्तर में मीणा राजा ने उस बच्चे (दूल्हेराय) को बड़ा होने पर मीणा रजवाड़े के प्रतिनिधि स्वरूप दिल्ली भेजा। मीणा राजवंश के लोग सदा ही शस्त्रों से सज्जित रहा करते थे अतः उन पर आक्रमण करके हराना सरल नहीं था किन्तु वर्ष में केवल एक बार, दीवाली के दिन वे यहां बने एक कुण्ड में अपने शस्त्रों को उतार कर अलग रख देते थे एवं स्नान एवं पितृ–तर्पण किया करते थे। ये बात अति गुप्त रखी जाती थी, किन्तु दूल्हेराय ने एक ढोल बजाने वाले को ये बात बता दी जो आगे अन्य राजपूतों में फ़ैल गयी। दीवाली के दिन घात लगाकर राजपूतों ने उन निहत्थे मीणाओं पर आक्रमण कर दिया एवं उस कुण्ड को मीणाओं की रक्तरंजित लाशों से भर दिया। इस तरह खोगोंग पर आधिपत्य प्राप्त किया। उसके बाद 200 वर्षों तक मीणा और राजपूतों में लगातार संघर्ष चला। एक समझौते के तहत राज्य में शांति हुई और इस क्षेत्र का विकास दूल्हेराय के वंशज कछवाह वंश के राजाओं ने किया। जयपुर की स्थापना 18 नवम्बर, 1727 को कछवाहा वंश के महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा की गई थी। जयपुर नगर के वास्तुकार श्री विद्याधर थे। इस शहर की स्थापना महाराज ने स्वयं अपनी देखरेख में की। पूर्व की ओर सूरजपोल दरवाजा तो पश्चिम में चॉंदपोल दरवाजा, उत्तर में जोरावर सिंह गेट और गंगापोल दरवाजा तो दक्षिण में घाटगेट, सांगानेरी गेट, न्यू गेट थे। शहर में प्रवेश इन्हीं दरवाजों से किया जाता था। इन सातों दरवाजों के बड़े–बडे बुर्ज–कोट (ऊँची दीवार लगभग 40 फीट) जिनकी मोटाई 8 से 10 फीट थी। आजादी से पूर्व तक रात को 10 बजे बाद गेट बंद कर दिये जाते थे। इनके दरबान अधिकत्तर मीणा थे। जो आज भी इन दरवाजों के आसपास ही रह रहे हैं।

जयपुर शहर के जौहरी बाजार में सड़कों के बीच में परंपरागत सूर्य की आकृति के खम्बे लगे हैं जिनमें रात को बल्ब जगमगाते थे। आजकल इनमें आधुनिक लाइटे लगी हैं। कुछ खम्बे क्षतिग्रस्त भी हो गए हैं। इसी बाजार में मेरा पुश्तैनी मकान है जहॉं पर हम तीन पीढियों से रह रहे हैं। मैंने हवामहल के सामने के राजकीय स्कूल में कक्षा 12 तक की शिक्षा पूर्ण की है। मैंने 80 के दशक से अब तक शहर को बदलते देखा है। अब पिंक सिटी आधुनिक सुविधाओं से युक्त शहर होता जा रहा है। अन्य शहरों की भाँति ही भीड़–भाड़ बढ़ती जा रही है।

इस आलेख में मेरी जानकारी और अनुभवों के साथ–साथ सोशल मीडिया से भी जानकारी ली गयी है।

जयपुर आने के लिए एयर, ट्रेन या सड़क के माध्यम उपलब्ध हैं। जयपुर शहर सभी मुख्य शहरों से जुडा हुआ है और जयपुर आने के लिए अक्टूबर से अप्रैल का समय सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है।

पिंक सिटी के दर्शनिय स्थल

1. **गोविन्द देव जी का मंदिर** : जयपुर का यह मंदिर भगवान कृष्ण का सबसे प्रसिद्ध मंदिर है। यह चन्द्र महल के पूर्व में बने जय निवास बगीचे के मध्य अहाते में स्थित है। चंद्र महल के झरोखे से राजा और उनका परिवार भगवान की सभी झॉंकियों के दर्शन करते थे। गोविंद देव जी को जयपुर का शासक माना गया है। सुबह 4 बजे से ही लोग यहाँ भगवान के दर्शन को आतुर रहते हैं। मंदिर शानदार और भव्य बना है।

2. **जंतर मंतर** : जंतर मंतर सवाई जय सिंह द्वारा 1724 से 1734 के बीच निर्मित एक खगोलीय वेधशाला है। यह यूनेस्को की 'विश्व धरोहर सूची' में सम्मिलित है। इस वेधशाला में 14 प्रमुख यन्त्र हैं जो समय मापने, ग्रहण की भविष्यवाणी करने, तारों की गति एवं स्थिति जानने, सौर मण्डल के ग्रहों के दिक्पात जानने आदि में सहायक हैं। इन यन्त्रों को देखने से पता चलता

है कि भारत के लोगों को गणित एवं खगोल शास्त्र/खगोलिकी के जटिल संकल्पनाओं (कॉसेप्ट्स) का इतना गहन ज्ञान था कि वे इन संकल्पनाओं को एक 'शैक्षणिक वेधशाला' का रूप दे सके ताकि कोई भी उन्हें जान सके और उसका आनन्द ले सके।

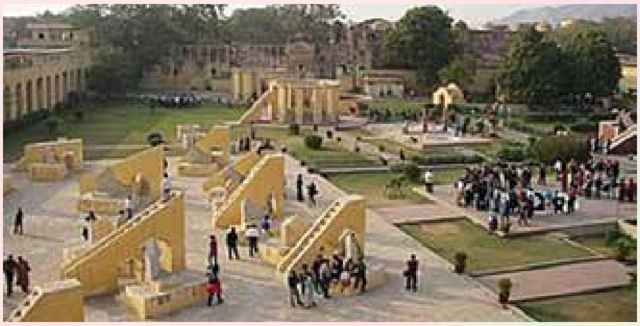

सवाई जयसिंह एक खगोल वैज्ञानिक भी थे, जिनके योगदान और व्यक्तित्व की प्रशंसा जवाहर लाल नेहरू ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' ('भारतः एक खोज') में सम्मानपूर्वक की है। महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने हिन्दू खगोलशास्त्र पर आधारित देश के पांच शहरों जयपुर, दिल्ली, उज्जैन, बनारस और मथुरा में वेधशालाएं बनवाई थी। यहाँ के यंत्रों में– 'सम्राट–यन्त्र' (जो एक विशाल सूर्य घड़ी है), 'जयप्रकाश–यन्त्र' और 'राम–यन्त्र' सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं, जिनमें से 'सम्राट–यन्त्र' सर्वाधिक ऊंचा (धरती से करीब 90 फुट) है। इससे पर्याप्त शुद्धता से समय बताया जा सकता है। जयपुर के जन्तर मन्तर में स्थित अन्य प्रमुख यन्त्र – बृहत सम्राट यन्त्र, लघु सम्राट यन्त्र, जयप्रकाश यन्त्र, रामयंत्र, ध्रुवयंत्र, दक्षिणायन्त्र, नाड़ीवलययन्त्र, राशिवलय, दिशायन्त्र, लघुक्रांति यन्त्र, दीर्घक्रांति यन्त्र, राजयंत्र, उन्नतांश यन्त्र, और दिगंश यन्त्र हैं। इनके अलावा यहां महत्वपूर्ण ज्योतिषीय गणनाओं और खगोलीय अंकन के लिए क्रांतिवृत यंत्र, यंत्र राज आदि यंत्रों का भी प्रयोग किया जाता था।

3. सिटी पैलेस : जयपुर राज्य के शासकों का एक शाही निवास और पूर्व प्रशासनिक मुख्यालय है। महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय के शासनकाल में जयपुर शहर की स्थापना के तुरंत बाद इसका निर्माण शुरू हुआ, जिन्होंने 1727 में अपना दरबार आमेर से जयपुर स्थानांतरित कर दिया था। महल का निर्माण 1732 में पूरा हुआ था। जयपुर 1949 तक राज्य की राजधानी बना रहा तदोपरांत यह वर्तमान भारतीय राज्य राजस्थान की राजधानी बन गया।

यहां प्रदर्शन हेतु 1.6 मीटर (5.2 फीट) ऊंचाई के दो विशाल स्टर्लिंग चांदी के बर्तन हैं, प्रत्येक की क्षमता 4000 लीटर और वजन 340 किलोग्राम (750 पाउंड) है। इन्हें बिना टांका लगाए 14,000 पिघलाए गए चांदी के सिक्कों से बनाया गया था। ये दुनिया के सबसे बड़े स्टर्लिंग चांदी के बर्तन के रूप में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हैं। इन्हें वर्ष 1902 में महाराजा सवाई माधो सिंह द्वितीय की इंग्लैंड यात्रा (एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक के लिए) के समय उनके पीने के लिए गंगा जल से भरकर विशेष रूप से जहाज द्वारा ले जाया गया था इसलिए, इन्हें गंगा जलिस (गंगा–जल कलश) नाम दिया गया है।

4. सिटी पैलेस, जयपुर का घंटाघर (क्लॉक टॉवर) : घंटाघर सभा निवास के दक्षिण में एक संरचना है।यह राजपूत दरबार में यूरोपीय प्रभाव का संकेत है क्योंकि यह घड़ी 1873 में पहले से मौजूद टावर में स्थापित की गई थी। कलकत्ता के ब्लैक एंड मरे एंड कंपनी से खरीदी गई इस घड़ी का उद्देश्य अदालत में थोड़ी विक्टोरियन दक्षता और समय की पाबंदी पेश करना था। यह आज भी मौजूद हैं।

5. सरगासूली या ईसरलाट की मीनार : इस मीनार का निर्माण चूंकि महाराजा ईश्वरी सिंह ने कराया था, इसीलिए इसका नाम 'ईसरलाट' रखा गया। 'स्वर्ग को छूती हुई सी प्रतीत होने के कारण स्थानीय भाषा में इसे 'सरगासूली' के नाम से अधिक जाना जाता है। 'त्रिपोलिया बाजार' में दिखने वाली यह मीनार वास्तव में त्रिपोलिया में न हो कर, इसके पीछे स्थित 'आतिशबाज़ार' की

दुकानों के ऊपर बनी है। परकोटा इलाके में त्रिपोलिया बाजार से दिखाई देती इस सात मंजिला अष्टकोणीय मीनार को वर्ष 1749 में राजा ईश्वरी सिंह ने दरबार के एक राजशिल्पी गणेश खोवान के नक्शे के अनुरूप बनवाया था। 'ईसरलाट' के छोटे प्रवेश–द्वार में प्रविष्ट होने के बाद, संकरी गोलाकार सीढियां घूमती हुई ऊपर की ओर बढ़ती हैं। स्तम्भ की हर मंजिल पर एक द्वार बना है, जो मीनार की बालकनी में खुलता है। सात खण्डों में बनी इस इमारत की निर्माण–शैली राजपूत और मुगल–वास्तु–शैलियों का सम्मिश्रण है। मुगल शैली में मस्जिदों के चार कोनों पर बनने वाली मीनारों से मिलती जुलती यह वास्तुरचना, शीर्षभाग पर एक गोलाकार छतरी लिए हुए हैं। 'गुलाबी–नगर' में (यानि परकोटा इलाके के बीच स्थित होते हुए भी) इसका रंग गहरा 'पीला' है।

6. **खोले के हनुमान जी** : गलता गेट से 3 किमी की दूरी पर है पहाडों की बीच रमणीक स्थान में खोले के हनुमान जी की प्रतिमा पहाडों में से मिली हैं। तब से यहॉं पूजा अर्चना होती रही है। प्राकृतिक दृष्टि से मनोरम स्थली होने के कारण पिकनिक, गोठ, जन्मदिन आदि के उत्सव भी होते हैं। यहॉं 100 से अधिक पक्के स्थल बने हैं जहॉं पार्टी की जा सकती है। ज्यादातर चूरमा, दाल बाटी बनायी जाती है।

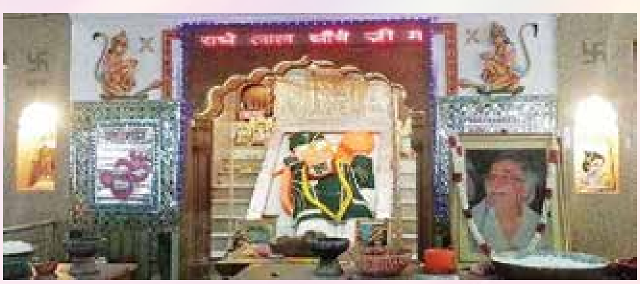

7. **गलता तीर्थ** : परम पूज्य ऋषि गालब की तपोस्थली गलताजी, जयपुर स्थित एक प्राचीन तीर्थस्थल है। अरावली की पहाड़ियों के बीच मंदिर, मंडप और पवित्र कुंडो के साथ हरियाली युक्त प्राकृतिक दृश्य से परिपूर्ण स्थल गलता घाटी है। गलता पहाडी की चोटी पर बना सूर्य मंदिर है।

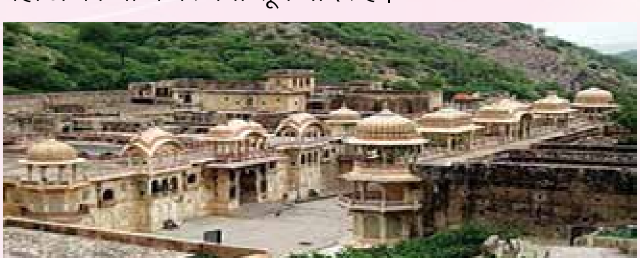

गलताजी मंदिर जयपुर से केवल 10 किमी दूर स्थित है। जयपुर के आभूषणों में से एक, मंदिर परिसर में प्राकृतिक ताजा पानी का झरना और 7 पवित्र कुण्ड शामिल हैं। इन कुण्डों के बीच, गलता कुंड' है जहॉं पर भक्त श्रृद्धा से डूबकी लगाने आते हैं। ऊपर वाला कुंड पुरूषों के लिए है तो नीचे वाला कुंड महिलाओं के स्नान करने के लिए बनाया गया है। गलता कुंड में 30 फीट ऊपर 'गौमुख' से पानी कई दशकों से लगातार झरनें के रूप में आ रहा है। ऊपर के कुंड को भरने के बाद नीचे के कुंड में पानी अविरल चल रहा है। पहाड़ियों के बीच छोटे बडे कई मंदिर बने हैं। तलहटी में हवेलियां हैं। गलता मंदिर पेड़–पौधों की विशेषता का भव्य परिदृश्य है। इस क्षेत्र में विपसना केंद्र (ध्यान साधना) में देश–विदेश से लोग आते हैं।

8. **नाहरगढ़ का किला** : नाहरगढ़ का किला जयपुर को घेरे हुए अरावली पर्वतमाला के ऊपर बना हुआ है। अरावली की पर्वत श्रृंखला के छोर पर आमेर की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इस किले को सवाई राजा जय सिंह द्वितीय ने वर्ष 1734 में बनवाया था। यहाँ एक किंवदंती है कि कोई एक नाहर सिंह भौम्या की आत्मा वहां भटका करती थी। किले के निर्माण में व्यवधान होने पर तांत्रिकों की सलाह से नाहरसिंह थान आमागढ़ की पहाड़ी पर बनवाया गया, उसके बाद ही नाहरगढ़ किले का निर्माण हुआ। 19वीं शताब्दी में सवाई राम सिंह और सवाई माधो सिंह के द्वारा भी किले के अन्दर भवनों का निर्माण कराया गया था जिनकी हालत ठीक ठाक है जबकि पुराने निर्माण जीर्ण शीर्ण हो चले हैं। यहाँ राजा सवाई राम सिंह की नौ रानियों के लिए अलग अलग आवास खंड बनवाए गए हैं जो सबसे सुन्दर हैं। इनमें शौच आदि के लिए आधुनिक सुविधाओं की व्यवस्था की गयी थी। किले के पश्चिम भाग में ''पड़ाव'' नामक एक रेस्तरां भी है जहाँ खान पान की पूरी व्यवस्था है। यहाँ से सूर्यास्त बहुत ही सुन्दर दिखता है।

9. **जयगढ़ दुर्ग** : जयगढ़ दुर्ग (राजस्थानीः जयगढ़ क़िला) अरावली पर्वतमाला में चील का टीला (ईगल की पहाड़ी) पर आमेर दुर्ग एवं मावता झील के ऊपरी ओर बना किला है। इस दुर्ग का निर्माण जय सिंह द्वितीय ने 1667 ई. में आमेर दुर्ग एवं महल परिसर की सुरक्षा हेतु करवाया था और इसका नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया है। यह महल चार मुख्य भागों में बंटा हुआ है। प्रत्येक के प्रवेशद्वार एवं प्रांगण हैं। मुख्य प्रवेश सूरज पोलद्वार से है जिससे जलेब चौक में आते हैं। जलेब चौक प्रथम मुख्य प्रांगण है तथा बहुत बड़ा बना है। इसका विस्तार लगभग 100 मी. लम्बा एवं 65 मी. चौड़ा है। प्रांगण में युद्ध में विजय पाने

पर सेना का जलूस निकाला जाता था। ये जुलूस राजसी परिवार की महिलायें जालीदार झरोखों से देखती थीं।

यहाँ पानी का बहुत बडा टाका (कुंड) है जो चारों ओर मोटी दिवार से ढका हुआ है। दुर्ग में जलापूर्ति के लिए वर्षा के दौरान प्राकृतिक जल को इकट्ठा किया जाता था जो वर्षभर यहाँ के लोगों की प्यास बूझाता था। दुर्ग में विश्व की दूसरें नम्बर की सबसे बड़ी तोप भी मौजूद है। रात को यहाँ से जयपुर का विहंगम दृश्य दिखाई देता है।

10. आमेर दुर्ग एवं शिला देवी : आमेर, जयपुर से 11 कि. मी. (6.835 मील) उत्तर में स्थित एक कस्बा है जिसका विस्तार 4 वर्ग किलोमीटर (4,30,00,000 वर्ग फुट) है। यह जयपुर की तहसील है। यहाँ 365 प्राचीन मंदिर हैं। जगत शिरोमणि मंदिर के साथ एक बडी मस्जिद भी है। दुर्ग यहां की एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है और इसकी प्राचीरों, द्वारों की शृंखलाओं एवं पत्थर के बने रास्तों से भरा ये दुर्ग पहाड़ी के ठीक नीचे बने मावठा सरोवर को देखता हुआ प्रतीत होता है। यह सरोवर आमेर के महलों की जल आपूर्ति का मुख्य स्रोत भी है। जलेबी चौक के दायीं ओर एक छोटा किन्तु भव्य मन्दिर है जो कछवाहा राजपूतों की कुल देवी शिला माता को समर्पित है। शिला देवी काली माता या दुर्गा माँ का ही एक अवतार हैं। मन्दिर के मुख्य प्रवेश द्वार में चांदी के पत्र से मढ़े हुए दरवाजों की जोड़ी है। इन पर उभरी हुई नवदुर्गा देवियों व दस महाविद्याओं के चित्र बने हुए हैं। मन्दिर के भीतर दोनों ओर चांदी के बने दो बड़े सिंहों के बीच मुख्य देवी की मूर्ति स्थापित है। इस मूर्ति से संबंधित कथा के अनुसार महाराजा मान सिंह ने मुगल बादशाह द्वारा बंगाल के गवर्नर नियुक्त किये जाने पर जेस्सोर के राजा को पराजित करने हेतु पूजा की थी। तब देवी ने विजय का आशीर्वाद दिया एवं स्वप्न में राजा को समुद्र के तट से शिला रूप में उनकी मूर्ति निकाल कर स्थापित करने का आदेश दिया था। राजा ने 1604 में विजय मिलने पर उस शिला को सागर से निकलवा कर आमेर में देवी की मूर्ति उभरवायी तथा यहां स्थापना करवायी थी। यह मूर्ति शिला रूप में मिलने के कारण इसका नाम शिला माता पड़ गया। मन्दिर के प्रवेश द्वार के ऊपर गणेश जी की मूंगे की एकाश्म मूर्ति भी स्थापित है।

11. पन्ना मीणा की बावड़ी : मीणा राजा पन्ना मीणा के शासन काल में इस बावड़ी का निर्माण हुआ था अतः इसे पन्ना मीणा की बावड़ी कहा जाने लगा। यह बावड़ी आज भी मिलती है और 200 फ़ीट गहरी है तथा इसमें 1800 सीढ़ियां हैं।

12. जल महल : जयपुर–आमेर मार्ग पर मानसागर झील के मध्य स्थित इस महल का निर्माण सवाई जय सिंह ने अश्वमेध यज्ञ के बाद अपनी रानियों और पंडित के साथ स्नान के लिए करवाया था। इस महल के निर्माण से पहले मानसिंह ने जयपुर की जलापूर्ति हेतु गर्भावती नदी पर बांध बनवाकर मानसागर झील का निर्माण करवाया था। इसका निर्माण 1699 में हुआ था। इसके निर्माण के लिए राजपूत शैली से तैयार की गई नौकाओं की मदद ली गई थी। राजा इस महल को अपनी रानी के साथ ख़ास वक्त बिताने के लिए इस्तेमाल करते थे। वे इसका प्रयोग राजसी उत्सवों पर भी करते थे। आम जनता शाम को इसकी पाल पर आनंद लेती है। मध्यकालीन महलों की तरह मेहराबों, बुर्जो, छतरियों एवं सीढ़ीदार जीनों से युक्त दुमंजिला और वर्गाकार रूप में निर्मित भवन है। इसकी उपरी मंजिल की चारों कोनों पर बुर्जो की छतरियाँ व बीच की बरादरिया, संगमरमर के स्तम्भों पर आधारित हैं।

13. हवा महल : हवा महल राजधानी जयपुर में एक राजसी–महल है। इसे सन 1799 में राजस्थान जयपुर बड़ी चौपड़ पर महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने बनवाया था और इसे किसी 'राजमुकुट' की तरह वास्तुकार लाल चंद उस्ताद द्वारा डिजाइन किया गया था। इसकी अद्वितीय पाँच–मंजिला इमारत जो ऊपर से तो केवल डेढ़ फुट चौड़ी है, बाहर से देखने पर मधुमक्खी के छत्ते के समान दिखाई देती है। इसमें 953 बेहद खूबसूरत और आकर्षक छोटी–छोटी जालीदार खिड़कियाँ हैं, जिन्हें झरोखा कहते हैं। इन खिड़कियों को जालीदार बनाने के पीछे मूल भावना यह थी कि बिना किसी की निगाह पड़े "पर्दा प्रथा" का सख्ती से पालन करती राजघराने की महिलायें इन खिडकियों से महल के नीचे सड़कों के समारोह व गलियारों में होने वाली रोजमर्रा की जिंदगी की गतिविधियों का अवलोकन कर सकें। इसके अतिरिक्त, "वेंचुरी प्रभाव" के कारण इन जटिल संरचना वाले जालीदार झरोखों से सदा ठण्डी हवा, महल के भीतर आती रहती है, जिसके कारण तेज गर्मी में भी महल सदा वातानुकूलित सा ही रहता है।

14. बी एम तारामंडल : जयपुर में बीएम बिड़ला ऑडिटोरियम पूरे देश के सबसे बड़े ऑडिटोरियम में से एक है और यह भारत के कुछ बेहतरीन और सबसे बड़े कार्यक्रमों का आयोजन स्थल होने का भी दावा करता है। यह व्यावहारिक रूप से भारत का सबसे प्रसिद्ध स्थल है।यह अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार बनाया गया है और अंतरराष्ट्रीय ख्याति वाले कार्यक्रमों की मेजबानी के लिए हर मानदंड को पूरा करता है। सभागार में आयोजित कार्यक्रमों की प्रकृति अलग–अलग होती है उदाहरणतः व्यवसायिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ–साथ त्योहारों का मिश्रण भी मनोरंजन करता है। केंद्रीय सभागार की बैठने की क्षमता एक समय में लगभग 1350 लोगों की है। सभागार में ऑडियो–विजुअल शो मुख्य रूप से कुछ नवीनतम तकनीकों के साथ जीएम II प्रोजेक्टर जैसे कम्प्यूटरीकृत प्रक्षेपण प्रणालियों का उपयोग करके व्यवस्थित और प्रक्षेपित किए जाते हैं। अधिकांश प्रस्तुतियाँ, सम्मेलन और कार्यक्रम विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिकों और कलाकारों द्वारा आयोजित किए जाते हैं। मीडियम कॉन्फ्रेंस हॉल, जिसका अधिकांश समय समूह चर्चा, व्याख्यान, सेमिनार, बैठकों के लिए उपयोग किया जाता है, में 150– 200 लोगों के बैठने की क्षमता है।

15. आमागढ़ का किला : जयपुर गलता गेट से केवल एक कि.मी. पहाड़ी पर आमागढ़ किला है। यह किला मीणा बड़गोती राजाओं ने बनवाया था। सुरक्षा की दृष्टि से किला बहुत मजबूत है जो शहर की रक्षा के लिए बनवाया गया है। जहाँ से सैनिक चौकस नजर रखते थे। किले में पानी संग्रहण करने के लिए एक कुंड भी बना है। किले की चारों ओर की दीवार आज भी अपनी भव्यता और मजबूती से अडिग खड़ी है। इसके पास ही आबा माता का स्थान है। जो बड़गोती समाज की कुल माता है। पहाड़ी की चोटी पर बना किला सैंकड़ों वर्षों से अडिग और अविचल खड़ा है और सैंकड़ों सालों का इतिहास अपने में समाये हुआ है।

16. हथरोई का किला : रेलवे स्टेशन जयपुर से केवल 1 किमी की दूरी पर यह किला शानदार और भव्य है जिसमें अब अतिक्रमण हो रहा है। किले में 16 परिवार रह रहे हैं। किले में सबसे ऊचाई पर मंदिर बना है। दर्शनीय स्थलों सूची में यह भी शामिल है। किला अपने में कई रहस्य छुपाये है।

17. गुड़िया घर : तीन मूर्ति चौराहे पर पुलिस स्मारक के पास दिव्यांग के विद्यालय के अहाते में विभिन्न देशों की प्यारी गुडियां यहाँ प्रदर्शित हैं। जिसे सुबह 12 बजे से शाम 7 बजे तक देखा जा सकता है।

18. मोती डूंगरी : मोती डूंगरी एक निजी पहाड़ी की ऊंचाई पर बना किला है जो स्कॉटलैण्ड के महल की तरह निर्मित है। मोती डूंगरी की तलहटी में पादगिरी पर संगमरमर के गणेश मंदिर है।

19. घाट की गूणी : 18–19वीं शताब्दी में राजओं व दरबारियों द्वारा बनाये आकर्षक प्राकृतिक पृष्ठभूमि से युक्त बगीचे हैं जो आगरा रोड पर दीवारों से घिरे शहर के दक्षिण पूर्वी कोने पर घाटी में फैले हुए हैं। गूणी के क्षेत्र में विद्याधर का बाग है जो पहाडों से घिरा है तथा यहाँ पर सिसोदिया रानी का गार्डन है। दोनों ही गार्डनों में फव्वारों, पानी की नहरों व चित्रित मंडपों के साथ पंक्तिबद्ध बहुस्तरीय बगीचे हैं। बैठकों के कमरों, हॉल आदि के साथ घने वृक्ष, बहता पानी व खुले मंडप भी हैं।

जयपुर के आस–पास में पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण जगह है जिसमें सांगानेर, बगरू, रामगढ़ लेक, बैराठ, आभानेरी, सामोद, माधोगढ, सांभर, जयसिंहपुरा खोर आदि हैं।

पधारों म्हारे देश जी...

हिन्दी

मैं गीता, मैं रामायण
मैं उपनिषद, मैं पुराण।।
मैं मथुरा, मैं काशी
मैं जीवन में प्राण।।
मैं पूजा की थाली
मैं सूरज की लाली।।
मैं गंगा में तर्पण
मैं जीवन का दर्शन।।
मैं देश की मिट्टी
मैं सैनिक की चिठ्ठी।।
मैं चन्दन मैं वंदन,
मैं गंगा का संगम।।
मैं तोतली जबान
मैं होसलों की उड़ान।।
मैं देश का मान
मैं भारत की शान।।
मैं हूँ माँ हिन्दी।

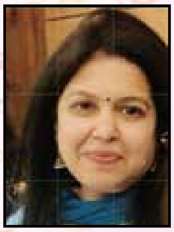

दिव्या भारद्वाज
उप प्रबन्धक राजभाषा
नेशनल इन्श्युरेंस कंपनी लिमिटेड
दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय– 4

प्रदूषण

संदीप मौर्य
लिपिक
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक, रूप नगर शाखा

हर साल 2 दिसंबर को नेशनल पॉल्यूशन कंट्रोल डे के रूप में मनाया जाता है। एक स्वस्थ वातावरण में रहना हम सभी के लिए बहुत ज्यादा जरूरी है। खासकर आज के दौर में जब प्रदूषण के चलते ना सिर्फ मानव जाति बल्कि जीव–जंतुओं की जान पर भी खतरा बना हुआ है। ऐसे में पर्यावरण को सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है।

2 दिसंबर का इतिहास 1984 में हुई भोपाल गैस त्रासदी से जुड़ा हुआ है। 1984 में भोपाल में एक इंसेक्टिसाइड प्लांट से लगभग 45 टन मिथाइल आइसोसाइनेट लीक हो गयी और आसपास फैल गयी। इसके कारण हजारों लोगों की उसी समय मौत हो गयी थी। कई लोगों को इसके कारण कई शारीरिक और मानसिक परेशानियां हुई। हजारों लोगों को उस समय भोपाल छोड़ना पड़ा था। इस दिन को उन लोगों की याद में मनाया जाता है जिन्होंने इस त्रासदी में अपनी जान गंवा दी थी।

प्रदूषण नियंत्रण दिवस का आयोजन नागरिकों को पर्यावरण प्रदूषण के बारे में जागरूक करने एवं इसके प्रबंधन, नियंत्रण एवं समुचित निस्तारण के लिए प्रभावी उपाय करने के सम्बन्ध में जागरूकता फैलाने के लिए किया जाता है।

प्रदूषण नियंत्रण दिवस के माध्यम से पर्यावरण प्रदूषण के बारे में जानकारी प्रदान करने के अतिरिक्त इसके पारिस्थितिक तंत्र पर प्रभाव, मानवीय एवं औद्योगिक लापरवाही से उत्पन प्रदूषण को नियंत्रित करने एवं सरकार द्वारा इस सम्बन्ध में बनाये गए विभिन नियमों एवं कानूनों के बारे में नागरिकों को जानकारी प्रदान की जाती है।

वर्तमान समय में मानवीय अस्तित्व के लिए सबसे बड़े संकट की बात की जाए तो निःसंदेह ही पर्यावरण प्रदूषण धरती के लिए सबसे बड़ा खतरा है। आज विश्व का प्रत्येक भाग मानव द्वारा निर्मित प्रदूषण से जूझ रहा है जिसके कारण विभिन पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो गयी हैं। जल, स्थल, वायुमंडल सहित जीवमंडल का सम्पूर्ण पारिस्थितिक तंत्र प्रदूषण के कारण संकट में है। मानवीय प्रदूषण के कारण उत्पन्न संकट को दूर करने के लिए सरकार द्वारा प्रतिवर्ष राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस के माध्यम से देश के नागरिकों को जागरूक किया जाता है।

प्रदूषण वह स्थिति होती है जब किसी भी पारिस्थितिक तंत्र (जल, स्थल, वायु) में विभिन्न अवयवों की मात्रा निर्धारित संतुलित सीमा से अधिक हो जाती है जिसके कारण संपूर्ण तंत्र का संतुलन बिगड़ जाता है एवं पारिस्थितिक तंत्र का अस्तित्व संकट में आ जाता है। प्रदूषण के कारण पारिस्थितिक तंत्र के विभिन्न अवयवों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है एवं पूरे तंत्र में असंतुलन की स्थिति पैदा हो जाती है।

प्रदूषण के कारकों के आधार पर इसे विभिन्न प्रकार से विभाजित किया गया है जिन्हें मुख्यतः निम्नप्रकार से बाँटा गया हैः– **जल–प्रदूषण, वायु–प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण,** मानव निर्मित औद्योगिक गतिविधियों, रसायनों के प्रयोग, खनिज तेल का उपयोग एवं प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुन दहन के कारण प्रदूषण पैदा होता है।

आपकी दिनचर्या की कुछ बहुत छोटी–छोटी चीजें भी ऐसी हैं जिनसे आप अपनी सेहत के साथ–साथ पर्यावरण पर भी बुरा असर डालते हैं और प्रदूषण को बढ़ाते हैं। जैसे–

स्मोकिंग

जी हां, एक सिगरेट आपके स्वास्थ्य को ही नहीं बल्कि पर्यावरण को भी बहुत नुकसान पहुंचाती है। इससे वायु प्रदूषण तो होता ही है, साथ ही जब आप सिगरेट पीने के बाद इस के निचले हिस्से को फेंक देते हैं, तो इसे डीकंपोज होने में भी सालों लग जाते हैं। ऐसे में यह जीव जंतुओं का भोजन बन जाता है, और उनके पेट में चला जाता है, जो उन्हें भी नुकसान पहुंचाता है। इतना ही नहीं सिगरेट से निकलने वाला धुआं आपकी श्वसन नली, फेफड़ों, दिल आदि को डैमेज कर सकता है।

डीजल पेट्रोल वाहनों का इस्तेमाल करना

जब आप अपने घर से काम के लिए या परिवार के साथ घूमने निकलते हैं, तो क्या आपने सोचा है कि पर्यावरण को कितना नुकसान पहुंच रहा है। आपकी गाड़ियों से निकलने वाला धुआं वातावरण को प्रदूषित करता है और इससे श्वसन तंत्र पर प्रभाव पड़ता है। ऐसे में कोशिश करें कि प्राइवेट वाहनों की जगह पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल करें और पेट्रोल

डीजल गाड़ी की जगह इलेक्ट्रिक वाहन या फिर साइकिल का इस्तेमाल करें।

जलाशयों को दूषित करना

अक्सर हम अपने घर से निकलने वाले कचरे को जलाशयों में डाल देते हैं। लेकिन इनमें से कुछ ऐसी चीजें होती हैं, जो जल प्रदूषण का कारण बनती है और पानी में रहने वाले जलीय जीव की मृत्यु भी इससे हो जाती है। इतना ही नहीं दूषित चीजें जल स्रोतों में डालने से इसमें ऑक्सीजन की मात्रा भी कम हो जाती है।

बिजली की वेस्टेज

जी हां, अक्सर लोग घरों में बिजली का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन यह पर्याप्त साधन है। ऐसे में आपको सौर ऊर्जा का इस्तेमाल करना चाहिए और अपने घरों में सोलर पैनल लगाना चाहिए, जिससे कि हम कृत्रिम बिजली का उपयोग करने से बच सकें।

इस समय पॉल्यूशन लेवल इतना बढ़ा हुआ है कि पूरी दुनिया में दस में से नौ लोगों को सुरक्षित हवा नहीं मिल रही है। यह दिन बेहद महत्वपूर्ण है और इसे मनाने का उद्देश्य लोगों को उन चीजों के प्रति जागरूक करना है, जो विभिन्न तरह के पोल्युशन्स का कारण बनती हैं जैसे हवा, मिट्टी, नॉइस पॉल्यूशन आदि। इससे हमारा वातावरण और सेहत सभी प्रभावित होते हैं।

राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

सभी अच्छे और खराब कार्यों के नियमों और कानूनों की राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (NPCB) या केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) द्वारा जाँच की जाती है जो भारत में प्रदूषण की रोकथाम के लिए सरकारी निकाय है। ये हमेशा जाँच करता है कि सभी उद्योगों द्वारा पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकियों का सही तरीके से उपयोग किया जा रहा है या नहीं।

महाराष्ट्र में अपना स्वंय का नियंत्रण बोर्ड है जिसे महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (एमपीसीबी) कहा जाता है, ये प्रदूषण नियंत्रण की तत्काल आवश्यकता के रुप में है, क्योंकि ये उन बड़े राज्यों में से एक है जहाँ औद्योगीकरण की दर बहुत तेजी से बढ़ती जा रही है। प्राकृतिक संसाधन जैसे जल, वायु, भूमि या वन विभिन्न प्रकार के प्रदूषण द्वारा तेजी से प्रभावित हो रहे हैं जिन्हें सही तरीके से नियमों और विनियमों को लागू करके तुरंत सुरक्षित करना बहुत जरुरी है।

राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा निकाली गई जागरुकता रैली

राष्ट्रीय प्रदूषण दिवस को देखते हुए प्रदूषण नियंत्रण की देखरेख करने वाली संस्था भारतीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) द्वारा बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए इस मौके पर 2 दिसबंर के दिन भोपाल, कानपुर, दिल्ली और मुबंई जैसे शहरों में जन–जागरुकता रैली निकाली। जिसमें लोगों को बढ़ते प्रदूषण और प्रतिकूल प्रभावों के प्रति आगाह किया गया। इस दिन जन जागरुकता रैली निकालना काफी महत्वपूर्ण इसलिए भी है क्योंकि विश्व के सबसे प्रदूषित शहरों की सूची में भारत के 14 शहर शामिल हैं।

इस रैली में लोगों को बढ़ते प्रदूषण के कारण पर्यावरण में हो रहे जलवायु परिवर्तन और पृथ्वी के बढ़ते तापमान जैसे विषयों के बारे में बताया गया तथा इस बात पर चर्चा की गई कि कैसे छोटे–छोटे उपायों को अपनाकर हम प्रदूषण को रोकने में अपना अहम योगदान दे सकते है।

नियंत्रण के क्या उपाय हैं?

- शहरी अपशिष्ट जल उपचार और पुनः उपयोग परियोजना
- ठोस अपशिष्ट और उसके प्रबंधन का वैज्ञानिक उपचार
- अपशिष्ट के उत्पादन को कम करना
- सीवेज उपचार सुविधा
- कचरे का पुनः उपयोग और अपशिष्ट से ऊर्जा उत्पादन।
- जैव–चिकित्सा अपशिष्ट उपचार सुविधा
- इलेक्ट्रॉनिक कचरे की उपचार सुविधा
- जल आपूर्ति परियोजना
- संसाधन रिकवरी परियोजना
- ऊर्जा की बचत परियोजना
- शहरी क्षेत्रों में खतरनाक अपशिष्ट प्रबंधन
- स्वच्छ विकास तंत्र पर परियोजनाएं।

प्रदूषण रोकने के लिये नीति, नियमों के उचित कार्यान्वयन और प्रदूषण के सभी निवारक उपायों के साथ ही राज्य सरकार द्वारा कई अन्य प्रयास किये जाने होते हैं। उद्योगों को सबसे पहले प्रदूषण को कम करने के लिए प्राधिकरण द्वारा लागू किये गये सभी नियमों और विनियमों का पालन करना होगा।

हमारे गर्व एवं स्वाभिमान की भाषा हिंदी

प्रमोद कुमार अग्रवाल
उप प्रबंधक
नैशनल इंश्योरेंस कम्पनी लि.
क्षेत्रीय कार्यालय–4

हिंदी भारतवर्ष ही नहीं विश्व में भी एक सशक्त भाषा के रुप में अपना स्थान प्राप्त करने के लिए निरंतर अग्रसर हैं। आज हिंदी विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा का स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। आज विश्व का प्रत्येक छठा व्यक्ति हिंदी को किसी न किसी रुप में प्रयोग करता हैं। भारत जैसे बहुभाषायी देश में जहाँ कई तरह की भाषाएँ प्रयोग में लाई जाती हैं लेकिन पूरे भारत को एकता की लड़ी में पिरोने के लिए हिंदी को ही सर्वश्रेष्ठ भाषा समझा गया। हमारे देश की आजादी के समय भी हिंदी को जन–जागरण की भाषा के रुप में संवाद के सशक्त माध्यम के तौर पर स्वीकार किया गया। यही कारण था कि देश की आजादी के बाद 22 भारतीय भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान प्राप्त हुआ लेकिन केंद्र सरकार द्वारा राजकाज के लिए हिंदी को ही राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। लेकिन आधुनिकिरण के साथ–साथ जहाँ विश्व भर में हिंदी के व्यापक प्रयोग के लिए प्रयास किए जा रहे हैं वहीं अपने ही देश में हिंदी का गिरता प्रयोग एक अत्यंत गंभीर और चिंता का विषय है। कहते हैं कि किसी राष्ट्र की भाषा को खत्म कर दो, राष्ट्र स्वयं ही समाप्त हो जाएगा। यही कुछ हमारे देश में भी हमारी हिंदी के साथ हो रहा है। लेकिन यह समय घबराने का नहीं अपितु अपनी इच्छा शक्ति को बढ़ावा देने का है। जिसके लिए शासन स्तर पर प्रयास भी किए जा रहे हैं। नई शिक्षा नीति में भी हिंदी के व्यापक प्रचार और प्रसार को बढ़ावा देने की विशेष व्यवस्था की गई है। हमारे प्रधानमंत्री द्वारा इंजिनियरिंग और मेडिकल की पढ़ाई हिंदी में कराने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं और आगे इसे विधिक पढ़ाई में भी बढ़ाया जाएगा। जैसा कि हम सब जानते है कि हिंदी का लगातार बढ़ता प्रयोग इसके प्रचार प्रसार में तकनीकी के आने के बाद भी कम नहीं हुआ अपितु बढ़ा ही है। लोगों को शंकाए थी कि तकनीकी के बढ़ते प्रयोग से हम हिंदी को उसका उचित स्थान नहीं दिला पायेंगे, यह सब शंकाए गलत साबित हुई हैं। भारत इतनी विशाल आबादी वाला देश है और हिंदी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, के महत्व को देखते हुए आज विश्व के 40 देशों के 160 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा के रुप में पढ़ाई जा रही है। जनगणना और ''आई आर एस'' द्वारा जारी आँकडों के अनुसार इंटरनेट पर 24 करोड़ से अधिक लोग हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं।

मार्च 2023 तक डिजिटल पेमेंट में हिंदी का प्रयोग करने वालों की संख्या लगभग 9 करोड़ के पास है जो कि 2020 में केवल 2.2 करोड़ ही थी। सरकारी कार्यालयों में भी मार्च 2023 तक हिंदी में कार्य करने वाले व्यक्तियों की संख्या 10 करोड़ के लगभग है जो कि 2020 में केवल 2.4 करोड़ ही थी। इसी तरह इंटरनेट पर हिंदी में समाचार पत्र पढ़ने वालों की संख्या लगभग 16 करोड़ है। यह सभी आकड़ें हिंदी के बढ़ते प्रयोग और हमें गौरवांवित करने के लिए एक सटीक उदाहरण हैं।

भारत सरकार द्वारा किए जा रहे सामूहिक प्रयासों से हिंदी के बढ़ते प्रयोग और प्रसार का ही नतीजा है कि हिंदी के प्रयोग में निरंतर वृध्दि होती जा रही है लेकिन हमारे देश में बढ़ती युवा आबादी अभी भी अंग्रेजी के मोह में फंसी है। लगातार खुलते अंग्रेजी स्कूल आज की युवा पीढ़ी को अंग्रेजी के जाल में फंसा रहे हैं। आज कम आय वाला व्यक्ति भी अपनी संतान को अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाना चाहता है लेकिन हमें अपनी भाषा को उसका गौरव दिलाने के लिए लगातार प्रयास करने होंगे। भारत सरकार द्वारा हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की सातवीं अधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। अभी दिनांक 14 व 15 सितंबर को पुणे में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का अयोजन किया गया है, जिसे हिंदी को उसकी पहचान दिलाने का एक सफल प्रयास कहा जा सकता है। यह सही है कि विश्व के अधिकतर देशों की जो मातृभाषा है वही उनकी राष्ट्रभाषा भी है। हमारा देश विश्व का सबसे बडा लोकतंत्र है जहाँ बहुभाषायी नागरिक रहते हैं, उसमें से एक भाषा का चयन राष्ट्रभाषा के रुप में नहीं किया जा सकता था लेकिन हिंदी में जनसम्पर्क और संवाद के लिए एक सरल भाषा के गुण होने के कारण और भारत की सबसे ज्यादा आबादी द्वारा इसका प्रयोग किए जाने के कारण ही हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। अतः हमें इसका अधिकाधिक प्रयोग कर इसमें गर्व की अनुभूति होनी चाहिए।

जहाँ पूरे विश्व ने हिंदी के महत्व को स्वीकार किया है अतः हमें भी अपनी भाषा हिंदी को उसका गौरवशाली स्थान दिलाने के लिए व्यक्तिगत व सामाजिक स्तर पर निरंतर प्रयास करने चाहिए।

''हिंदी है भारत की पहचान
हिंदी है हमारा स्वाभिमान
इसका अधिक से अधिक प्रयोग करे जन–जन
इसको समर्पित है तन–मन''।

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली की जून 2023 की तिमाही के लिए आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान समिति के सदस्यों को संबोधित करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक श्री अनिल कुमार। साथ में दृष्टव्य हैं सदस्य सचिव सुश्री पुनीत कौर चावला एवं समिति के अन्य सदस्य।

दिल्ली बैंक नराकास के तत्वावधान में इण्डियन ओवरसीज़ बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित ''यह चित्र कुछ कहता है प्रतियोगिता'' में सहभागिता करते हुए प्रतिभागीगण।

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली द्वारा दिल्ली क्षेत्र की शाखाओं में कार्यरत स्टाफ सदस्यों हेतु आयोजित एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला दौरान उपस्थित स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र दिल्ली के प्रभारी श्री पदमजीत दहिया । साथ में दृष्टव्य हैं प्रबन्धक (राजभाषा) सुश्री पुनीत कौर चावला एवं उपस्थित अन्य प्रतिभागीगण।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय– नई दिल्ली द्वारा हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन दिनांक 21 अक्टूबर, 2023 को 'डॉ अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर', जनपथ में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री कबीर भट्टाचार्य, मुख्य महाप्रबंधक, दिल्ली अंचल द्वारा किया गया और पाँच क्षेत्रीय कार्यालयों के क्षेत्र प्रमुख क्रमशः श्री गोविंद मिश्रा, श्री पी रामनाथ दिवाकर, श्री गणेश प्रसाद, श्री प्रदीप अवस्थी एवं श्री राजेश कुमार सिंह की उपस्थिती रही।। कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आयोजन किया गया, जो हिंदी सहित अधिकतम भारतीय भाषाओं को भी समाहित किए हुए थी। साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं में गीतों की प्रस्तुति कर क्षेत्रीय भाषाओं को प्रोत्साहित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत स्टाफ और स्टाफ सदस्यों के बच्चों द्वारा गीत गायन, नृत्य और कविता की भव्य प्रस्तुतियां दी गयी।

नैशनल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय–1

नैशनल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय–4

सिडबी: हिन्दी पखवाड़े का पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह 03 अक्तूबर, 2023 को श्री एस आर मीणा, महाप्रबंधक (प्रभारी), नई दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें डॉ आर के सिंह, मुख्य महाप्रबंधक तथा डॉ एस एस आचार्य, मुख्य महाप्रबंधक, मुख्य अतिथि एवं विशेष अतिथि के रूप में तथा श्री स्वपनिल साहिल, उप महाप्रबंधक (प्रभारी) उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री एन. के. सोलंकी, उप महाप्रबंधक (हिन्दी) ने किया।

कंठस्थ 2.0 कार्यशाला

पंजाब नैशनल बैंक, मण्डल कार्यालय, दक्षिणी दिल्ली

सरल सी मैं, रहस्य हूँ

ना मैं ख़ामोश
बंद होंठों की मूरत हूँ ।
ना आँचल के पीछे
छिपी कोई ख़ूबसूरत हूँ ।।

विचार मेरे बोलते
बंद दरवाज़े खोलते।
नापते आसमान को
चौखटों को लाँघते ।।

सोच हैं समझ भी है
इंसानो की परख भी है ।
मैं आज हूँ, मैं आज हूँ पर
बीते कल के साथ हूँ ।।

हठी हूँ मैं विनम्र हूँ
सम्पूर्ण मैं समस्त हूँ।
हुंकार हूँ उन्माद हूँ
निर्मल सी मैं चंचल भी हूँ ।।

सीता भी मैं सती भी हूँ
अहल्या भी मैं शबरी भी हूँ।
रेत की पहाड़ सी
सरल सी मैं, रहस्य हूँ।।
हाँ सरल सी मैं रहस्य हूँ ।।

सुप्रिया कुमारी
वरिष्ठ प्रबंधक
पंजाब नैशनल बैंक,
दक्षिणी दिल्ली

जिंदगी– द लाइफ

बच्चे की पहली किलकारी सुन मां की आंखों का नम हो जाना,
लहू में लथपथ बच्चे की पहली झलक को पाना,
अपनी जिंदगी को दांव पर लगा, नवजीवन को दुनिया में लाना,
जिंदगी एक किताब है, इसके पहले पन्ने को लिखने वाली हर मां से पूछो।

नौ महीने अंधकार भरे गर्भ से बाहर रोशनी में आना,
मां की गोद में आकर फिर उसके सीने से लग जाना,
अजनबी से एहसास के साथ, बच्चे का इस अजनबी दुनिया में आना,
जिंदगी एक आशीर्वाद है, पैदा होते ही रोते हर बच्चे से पूछो।

भूख से तड़पने पर, रुखी रोटी को देख या खाने की सुगंध से भी जी ललचाना,
कड़कड़ाती सर्दी में गरीब को फटा– मैला कंबल मिल जाना,
तेज बारिश तूफान में बचने के लिए एक आसरा मिल जाना,
जिंदगी का महत्व , रोज संघर्ष कर रहे हर अपंग से पूछो।

मृत्यु शैय्या पर जब उम्मीद ना हो कोई, तब सांसें लौट आना,
अंधकार भरे जीवन में किसी को आंखों की रोशनी मिल जाना,
ना उम्मीद हो चुकी जिंदगियों को उम्मीद मिल जाना,
जिंदगी एक आशा है, जिंदगी जी रहे हताश–निराश लोगों से पूछो।

देश सेवा के लिए अपनी सांसें कुर्बान कर जाना,
देश के वीरों का धरती मां के लिए अपना हर रिश्ता पीछे छोड़ आना,
चैन की नींद ले सकें देशवासी, उसके लिए अपना सीना छलनी कर जाना,
जिंदगी की कीमत, देश के लिए कुर्बानी देने वालों से पूछो।

गला सूखने पर, पानी की एक बूंद का भी मिल जाना,
जब सामने खड़ी हो मौत और किसी फरिश्ते का आ जाना,
मुश्किलों की चार दीवारी में, बच्चों के सिर पर पिता का हाथ रख देना,
जिंदगी की अहमियत, छोटी–छोटी खुशियों में खुश होने वालों से पूछो।

गुमराह होकर अपनी ही जिंदगी को अपने पैरों से रौंदना,
नशे में डूब कर या सिगरेट के धुएं में जिंदगी को उड़ाना,
तेज रफ़्तार वाली गाड़ी से किसी जिंदगी को कुचल देना,
जिंदगी का मोल, किसी की लापरवाही का शिकार हुए लोगों से पूछो।

शिल्पा बंसल
सहायक प्रबंधक
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
पीतमपुरा शाखा

राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता एवं अन्य आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम

1. राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता, वर्ष 2023 – सदस्य कार्यालयः–

क्रमांक	पुरस्कार	बैंक का नाम	वित्तीय संस्थान का नाम	बीमा कंपनी का नाम
1	प्रथम	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय	भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक	भारतीय जीवन बीमा निगम
2	द्वितीय	इंडियन ओवरसीज़ बैंक	आईएफसीआई लि.	दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस क. लि., प्रधान कार्यालय
3	तृतीय	पंजाब नैशनल बैंक, उत्तरी दिल्ली	भारतीय रिजर्व बैंक	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस क. लि., क्षे.का. – 2
4	प्रोत्साहन	पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली	भारतीय निर्यात–आयात बैंक	नैशनल इंश्योरेंस क. लि., क्षे. का. – 1
5	प्रोत्साहन	पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिणी दिल्ली	आईआईएफसीएल	दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस क. लि., क्षे.का. – 2
6	प्रोत्साहन	बैंक ऑफ बडौदा		
7	प्रोत्साहन	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली		
8	प्रोत्साहन	केनरा बैंक		

2. राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता, वर्ष 2022–23 –हिन्दी पत्रिकाएंः–

क्रमांक	पुरस्कार	श्रेणीः गृह पत्रिका		श्रेणीः ई–पत्रिका	
		पत्रिका का नाम	संस्थान का नाम	पत्रिका का नाम	संस्थान का नाम
1	प्रथम	आवास भारती	राष्ट्रीय आवास बैंक	एक्जिम स्पर्श	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
2	द्वितीय	राजभाषा अंकुर	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय	दिल्ली दर्पण	केनरा बैंक
3	तृतीय (संयुक्त)	दीपस्तम्भ	पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय	ओरिएण्टल संवाद	दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस क. लि., प्रधान कार्यालय
		यूनियन महक	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली		
4	विशेष पुरस्कार	मेधा	भारतीय रिजर्व बैंक		

3. ''बैंक भारती'' पत्रिका के 28वें एवं 29वें अंक में प्रकाशित श्रेष्ठ रचनाएंः–

क्रमांक	पुरस्कार	कविता	कहानी	अन्य विषयक लेख	बैंकिंग विषयक लेख
1	प्रथम	प्रदूषण की समस्या (मोहर सिंह मीणा, इंडियन बैंक, मध्य दिल्ली)	यह कैसी आजादी (शिल्पा बंसल, इंडियन ओवरसीज़ बैंक)	देवभूमि किन्नौर की यात्र (मुकेश व्यास, पंजाब नैशनल बैंक)	ऑनलाइन खरीददारी करते समय सोच–समझ कर क्लिक करें (श्रुति मलिक, बैंक ऑफ बडौदा)
2	द्वितीय	जोगीरा (कमल सिंह, दि न्यू इंडिया एश्योरेंस क. लि., क्षे.का.–2)	होली (अर्चना भारद्वाज, आईडीबीआई बैंक लि.)	समय प्रबंधन का महत्त्व (सुधीर कुमार शर्मा, भारतीय स्टेट बैंक, प्रशा. कार्या. – 2)	बैंकिंग व्यवसाय में राजभाषा कितनी लाभकर (प्रिय रंजन, पंजाब नैशनल बैंक)
3	तृतीय	जमना की सबसे बूढ़ी मछली (अभीक सिंह, पंजाब नैशनल बैंक)	एक दिन की बात (सुनैना रेड्डी, आईडीबीआई बैंक लि.)	5 जी नेटवर्क (नेहा अग्रवाल, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया)	डिजिटल मुद्रा – अर्थव्यवस्था एवं बैंकिंग में प्रभाव (सिद्धार्थ गुप्ता, इंडियन ओवरसीज़ बैंक)

दिल्ली बैंक नराकास के तत्वावधान में आयोजित अंतर बैंक प्रतियोगिताओं के परिणाम

स्थान	राशि (₹)	नाम	संस्थान
नैशनल इंश्योरेंस कं. लि., क्षे. का. – 1 द्वारा आयोजित "स्वरचित हिंदी कविता लेखन प्रतियोगिता"			
प्रथम	1500/–	रीना	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
द्वितीय	1200/–	आदिश जैन	इन्डियन बैंक
तृतीय	1000/–	सुलेखा रानी	पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली
प्रोत्साहन	500/–	सुशीला नागपाल	पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली
प्रोत्साहन	500/–	अनुपमा मिढ़ा	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशा. कार्या.– 2
प्रोत्साहन	500/–	इंदु उप्पल	यूनाइटेड इंडिया इंश्यो. क. लि., क्षे. का.–2
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय द्वारा आयोजित "हिंदी कहानी लेखन प्रतियोगिता"			
प्रथम	1500/–	अनिता बुडाकोटी	भारतीय जीवन बीमा निगम
द्वितीय	1200/–	वीनू	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
तृतीय	1000/–	संदीप मौर्य	इन्डियन ओवरसीज बैंक
प्रोत्साहन	500/–	गुंजन यादव	इन्डियन बैंक
प्रोत्साहन	500/–	प्रीती श्रीवास्तव	आईडीबीआई
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस क. लि., प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित "श्रुत लेखन प्रतियोगिता"			
प्रथम	1500/–	घनश्याम वर्मा	नैशनल इंश्योरेंस क. लि., क्षे. का. –1
द्वितीय	1200/–	विनीता कुमारी	केनरा बैंक
तृतीय	1000/–	किरण जैन	पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिणी दिल्ली
प्रोत्साहन	500/–	प्रमोद कुमार	भारतीय जीवन बीमा निगम
प्रोत्साहन	500/–	पूर्णिमा नायडू	भारतीय स्टेट बैंक, क्षे. का. – 2
प्रोत्साहन	500/–	दीपक कुमार	केनरा बैंक
आईएफसीआई लिमिटेड द्वारा आयोजित "राजभाषा संबंधी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता"			
प्रथम	1500/–	सिंपल कंवर	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिण.
द्वितीय	1200/–	रोजी गोयल	भारतीय जीवन बीमा निगम
तृतीय	1000/–	राजेश कुमार	ओरिएण्टल इंश्योरेंस क. लि.
प्रोत्साहन	500/–	स्मृति अरोड़ा	आईएफसीआई लिमिटेड
प्रोत्साहन	500/–	हर्षित खमसेरा	आईएफसीआई लिमिटेड
प्रोत्साहन	500/–	भारत भूषण	ओरिएण्टल इंश्योरेंस क. लि.
पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित "लोकोक्ति एवं मुहावरा प्रतियोगिता"			
प्रथम	1500/–	मीना कुमारी	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
द्वितीय	1200/–	रोहित कुमार	पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली
तृतीय	1000/–	तनय वर्मा	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
प्रोत्साहन	500/–	सीमा जैन	भारतीय रिजर्व बैंक
प्रोत्साहन	500/–	शक्ति यादव	केनरा बैंक
प्रोत्साहन	500/–	राजीव कुमार कटियार	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षे.का. – उत्तर

स्थान	राशि (₹)	नाम	संस्थान
भारतीय निर्यात–आयात बैंक द्वारा आयोजित ''बैंकिंग जगत में सामान्य जागरूकता प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/–	कुनाल अरोड़ा	भारतीय रिजर्व बैंक
द्वितीय	1200/–	भानु प्रताप सिंह	भारतीय रिजर्व बैंक
तृतीय	1000/–	विकास गुप्ता	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षे. का. – दक्षिण
प्रोत्साहन	500/–	विशाल उपाध्याय	पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिण दिल्ली
प्रोत्साहन	500/–	रोहित कुमार	पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली
प्रोत्साहन	500/–	दुष्यंत नागर	नैशनल इंश्योरेंस का. लि., अंचल कार्या.
यूको बैंक द्वारा आयोजित ''यात्रा वृत्तांत प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/–	अर्चना भारद्वाज	आईडीबीआई बैंक लि.
द्वितीय	1200/–	आशिमा गुप्ता	यूको बैंक
तृतीय	1000/–	अमित मोहन अस्थाना	पंजाब एंड सिंध बैंक
प्रोत्साहन	500/–	रोजी गोयल	भारतीय जीवन बीमा निगम
प्रोत्साहन	500/–	मीना कुमारी	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा आयोजित ''मन की बात प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/–	आलोक कुमार	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिण
द्वितीय	1200/–	रूपेश कुमार	आईआईएफसीएल
तृतीय	1000/–	सबिता पात्र	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, मध्य दिल्ली
प्रोत्साहन	500/–	अर्चना वर्मा	भारतीय जीवन बीमा निगम
प्रोत्साहन	500/–	अर्चना भारद्वाज	आईडीबीआई बैंक लि.
आईआईएफसीएल द्वारा आयोजित ''अधूरी कहानी पूरी करें प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/–	गणेश नारायण साहू	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षे.का.–नई दिल्ली
द्वितीय	1200/–	मोनिका	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, दिल्ली दक्षिण
तृतीय	1000/–	नेहा कालरा	बैंक ऑफ महाराष्ट्र
प्रोत्साहन	500/–	पंकज कुमार बंसल	आईआईएफसीएल
प्रोत्साहन	500/–	सविता पात्र	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, मध्य दिल्ली
प्रोत्साहन	500/–	शोभा खटक	दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस क. लि.
पंजाब नैशनल बैंक, उत्तरी दिल्ली. द्वारा आयोजित ''मेरी कहानी मेरी जुबानी प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/–	कृष्ण कान्त	पंजाब नैशनल बैंक, उत्तरी दिल्ली
द्वितीय	1200/–	नरेश कुमार कश्यप	यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया, उत्तर
तृतीय	1000/–	अभिलाषा सिंह	पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिमी दिल्ली
प्रोत्साहन	500/–	गुंजन यादव	इन्डियन बैंक
प्रोत्साहन	500/–	ममता ठाकुर	यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया
प्रोत्साहन	500/–	संदीप मौर्य	इन्डियन ओवरसीज बैंक
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय नई दिल्ली द्वारा आयोजित ''हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/–	मिनाक्षी कुमारी	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्या.
द्वितीय	1200/–	सिम्मी कुमारी	बैंक ऑफ इंडिया
तृतीय	1000/–	प्रियंका त्यागी	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षे.का–नई दिल्ली.
प्रोत्साहन	500/–	नितिन शर्मा	नैशनल इंश्योरेंस क. लि., क्षे. का.–1
प्रोत्साहन	500/–	अर्चना	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उत्तर
प्रोत्साहन	500/–	कुनाल प्रशांत	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिण दिल्ली

स्थान	राशि (₹)	नाम	संस्थान
आईडीबीआई बैंक लि. द्वारा आयोजित ''हिंदी आशु कविता लेखन प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	अर्चना भारद्वाज	आईडीबीआई बैंक लि.
द्वितीय	1200/—	आलोक कुमार	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिण दिल्ली
तृतीय	1000/—	आशीष रस्तोगी	बैंक ऑफ महाराष्ट्र
प्रोत्साहन	500/—	राकेश कुमार	आईडीबीआई बैंक लि.
प्रोत्साहन	500/—	गुंजन यादव	इंडियन बैंक, मध्य दिल्ली
प्रोत्साहन	500/—	अंकिता श्रीवास्तव	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशा. कार्या. — 2
पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली द्वारा आयोजित ''अनुवाद प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	अनुज शर्मा	भारतीय जीवन बीमा निगम
द्वितीय	1200/—	अरविंद कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
तृतीय	1000/—	नितिन शर्मा	नैशनल इंश्योरेंस क. लि., क्षे. का.—1
प्रोत्साहन	500/—	विजय कुमार चोपड़ा	पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली
प्रोत्साहन	500/—	मिनाक्षी कुमारी	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्या.
प्रोत्साहन	500/—	सिंपल कंवर	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिण दिल्ली
पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिण दिल्ली. द्वारा आयोजित ''स्वरचित सफलता की कहानी प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	आलोक कुमार	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिण
द्वितीय	1200/—	अंजलि राठी	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशा. का. — 2
तृतीय	1000/—	किरण जैन	पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिणी दिल्ली
प्रोत्साहन	500/—	अरविंद कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
प्रोत्साहन	500/—	संदीप मौर्य	इंडियन ओवरसीज़ बैंक
भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा आयोजित ''सामान्य हिंदी व्याकरण एवं शब्द—शक्ति प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	मोहित यादव	राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक
द्वितीय	1200/—	पवन कुमार मिश्र	पंजाब नैशनल बैंक, उत्तरी दिल्ली
तृतीय	1000/—	के.एस.एल. अर्पणा	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिणी दिल्ली
प्रोत्साहन	500/—	अक्षिता ममगाई	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिणी दिल्ली
प्रोत्साहन	500/—	सोनिका सांगवान	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
प्रोत्साहन	500/—	अभिषेक शुक्ला	राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक
भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय — 2. द्वारा आयोजित ''समाचार वाचन प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	अंजलि बठला	नैशनल इंश्योरेंस क. लि., क्षे.का. — 1
द्वितीय	1200/—	पूर्णिमा नायडू	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशा. कार्या. — 1
तृतीय	1000/—	सारिका श्रीवास्तव	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिणी दिल्ली
प्रोत्साहन	500/—	सपना गुप्ता	पंजाब नैशनल बैंक, उत्तरी दिल्ली
प्रोत्साहन	500/—	प्रदीप अरोड़ा	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशा. कार्या. — 2
प्रोत्साहन	500/—	शिखा चौधरी	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षे.का. दिल्ली
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय — दक्षिण द्वारा आयोजित ''चित्र देखो, कहानी लिखो प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	ऋतू ढींगरा	भारतीय जीवन बीमा निगम
द्वितीय	1200/—	पंकज कुमार बंसल	आईआईएफसीएल
तृतीय	1000/—	सारिका श्रीवास्तव	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिण दिल्ली
प्रोत्साहन	500/—	सुनैना रेड्डी	आईडीबीआई लि.
प्रोत्साहन	500/—	नेत्री शर्मा	बैंक ऑफ बडौदा
प्रोत्साहन	500/—	गुंजन यादव	इन्डियन बैंक
बैंक ऑफ बडौदा द्वारा आयोजित ''तीन मिनट बिना अंग्रेजी प्रयोग के हिंदी में बोलना प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	सीमा गौतम	भारतीय जीवन बीमा निगम
द्वितीय	1200/—	आशीष कुमार	बैंक ऑफ बडौदा
तृतीय	1000/—	चंद्रशेखर पुनेठा	भारतीय रिजर्व बैंक
प्रोत्साहन	500/—	इंदु मोहन	बैंक ऑफ बडौदा
प्रोत्साहन	500/—	तरुण शर्मा	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिण दिल्ली

स्थान	राशि (₹)	नाम	संस्थान
इंडियन बैंक, दिल्ली दक्षिण द्वारा आयोजित ''लघु कहानी लेखन प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	संदीप मौर्य	इंडियन ओवरसीज़ बैंक
द्वितीय	1200/—	शिवाली सिन्हा	इंडियन बैंक, दिल्ली दक्षिण
तृतीय	1000/—	शिल्पा बंसल	इंडियन ओवरसीज़ बैंक
प्रोत्साहन	500/—	चन्द्रशेखर पुनेठा	भारतीय रिजर्व बैंक
प्रोत्साहन	500/—	गरिमा शर्मा	नेशनल इंश्योरेंस क. लि., क्षे.का. – 4
इन्डियन ओवरसीज़ बैंक द्वारा आयोजित ''यह चित्र कुछ कहता है प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	अमर सिंह यादव	इंडियन बैंक, दिल्ली दक्षिण
द्वितीय	1200/—	सिद्धार्थ गुप्ता	इंडियन ओवरसीज़ बैंक
तृतीय	1000/—	रश्मि प्रजापत	केनरा बैंक
प्रोत्साहन	500/—	सुनैना रेड्डी	आईडीबीआई बैंक लि.
प्रोत्साहन	500/—	अभिनव गौतम	इंडियन ओवरसीज़ बैंक
पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिमी दिल्ली द्वारा आयोजित ''रचनात्मक लेख प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	कुनाल प्रशांत	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, दिल्ली दक्षिण
द्वितीय	1200/—	आकाश कुमार	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशा. कार्या. – 2
तृतीय	1000/—	रजा कुरैशी	पंजाब नैशनल बैंक, उत्तरी दिल्ली
प्रोत्साहन	500/—	नेहा अग्रवाल	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, दिल्ली दक्षिण
प्रोत्साहन	500/—	पूजा कुमारी	पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिणी दिल्ली
राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा आयोजित ''हिंदी नोटिंग – ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	नीरज कुमार	पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिमी दिल्ली
द्वितीय	1200/—	जितेन्द्र कुमार	यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस क. लि.
तृतीय	1000/—	सिंपल कंवर	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षे. का.–दक्षिण
प्रोत्साहन	500/—	सिद्धार्थ गुप्ता	इंडियन ओवरसीज़ बैंक
केनरा बैंक द्वारा आयोजित ''हिंदी निबंध प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	सौरभ कुमार गर्ग	पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिणी दिल्ली
द्वितीय	1200/—	देवा दत्त गोस्वामी	केनरा बैंक
तृतीय	1000/—	सिद्धार्थ गुप्ता	इंडियन ओवरसीज़ बैंक
प्रोत्साहन	500/—	भावना गुप्ता	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
प्रोत्साहन	500/—	सीमा जैन	भारतीय रिजर्व बैंक
बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित ''स्व–रचित हिंदी कविता लेखन प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	गणेश नारायण साहू	यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया, नई दिल्ली
द्वितीय	1200/—	संजीव निगम 'अनाम'	नैशनल इंश्योरेंस क. लि., क्षे.का.–1
तृतीय	1000/—	प्रदीप चौधरी	यूको बैंक
प्रोत्साहन	500/—	प्रिया अग्रवाल	बैंक ऑफ इंडिया
प्रोत्साहन	500/—	योगेश कुमार	नैशनल इंश्योरेंस क. लि., क्षे.का.–1
प्रोत्साहन	500/—	नीरज श्रीवास्तव	बैंक ऑफ इंडिया
भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) द्वारा आयोजित ''अंतर बैंक हास्य कविता पाठ प्रतियोगिता''			
प्रथम	1500/—	अनिल कुमार बाजपेयी	यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस क.लि., क्षे.का.–2
द्वितीय	1200/—	शिवम् शर्मा	केनरा बैंक
तृतीय	1000/—	प्रीति श्रीवास्तवा	आईडीबीआई बैंक लि.
प्रोत्साहन	500/—	मिनाक्षी कुमारी	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्या.

सभी विजेताओं को बधाई

दिल्ली बैंक नराकास की गृह पत्रिका ''बैंक भारती'' का विमोचन करते हुए बाएं से दाएं, श्री देवार्चन साहू, महाप्रबंधक, श्री सुमंत महान्ती, मुख्य महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक, श्री समीर बाजपेयी, अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नराकास एवं मुख्य महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक, श्री के.पी. शर्मा, उप निदेशक (का.), श्री राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक (नीति), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग तथा श्रीमती मनीषा शर्मा, सदस्य सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा, पंजाब नैशनल बैंक।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, दिल्ली अंचल द्वारा आयोजित ''हिंदी उत्सव'' समारोह में विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि, श्री के.पी. शर्मा, उप निदेशक (का.), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग तथा विशेष अतिथि, श्री समीर बाजपेयी, अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नराकास एवं अन्य वरिष्ठ कार्यपालक।

पंजाब नैशनल बैंक
...भरोसे का प्रतीक!

punjab national bank
...the name you can BANK upon!